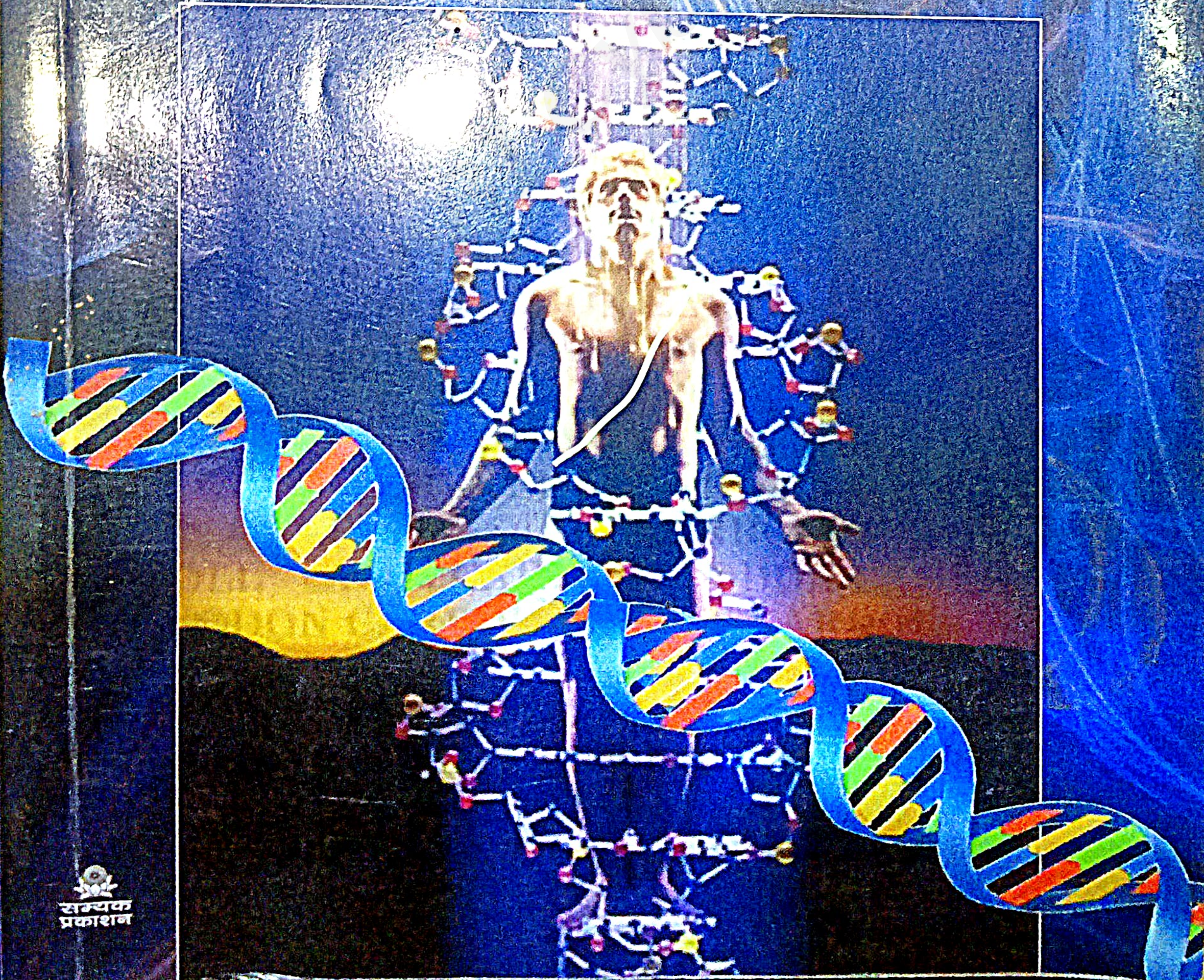
आनुवांशिक शोध और विदेशी आर्य ब्राह्मण

DNA

डॉ. विजय कुमार त्रिशरण



सम्यक प्रकाशन

आनुवांशिक शोध
और
विदेशी आर्य ब्राह्मण

लेखक
डॉ. विजय कुमार त्रिशरण

सम्यक प्रकाशन

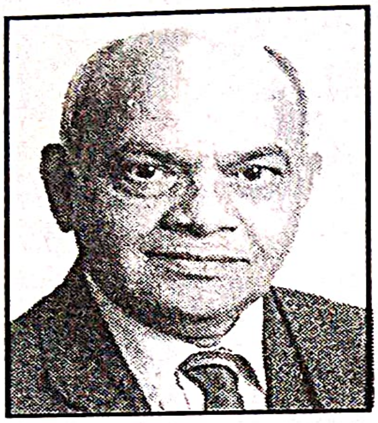


"आदिवासी ही देश के असली नागरिक हैं, शेष लोग आव्राजक (Migrated) आक्रमणकारियों की संतानें हैं जो आदिवासियों के साथ बुरा बर्ताव करते आए हैं। पुराने समय में उन्हें राक्षस, असुर और न जाने क्या-क्या कहा गया, जबकि ये लोग गैर-आदिवासियों के मुकाबले चरित्रवान होते हैं, कभी झूठ नहीं बोलते हैं और न ही किसी को ठगते हैं। लेकिन इन पर लगातार अत्याचार होते रहे हैं।

गुरु द्रोणाचार्य द्वारा युवक एकलव्य को शिक्षित किए बिना उसका अंगूठा दक्षिणा में मांग लेना आदिवासियों के साथ सहस्राब्दियों से चले आ रहे अत्याचार का शास्त्रीय उदाहरण है।"

—सुप्रीम कोर्ट (जस्टिस मार्कंडेय काटजू और
जस्टिस ज्ञानसुधा मिश्र की खण्डपीठ),
हिन्दुस्तान, रांची, 06 जनवरी 2011

प्रकाशकीय



'आनुवांशिक शोध और विदेशी आर्य-ब्राह्मण' विद्वान लेखक डॉ. विजय कुमार 'त्रिशरण' जी की बहुत चर्चित पुस्तक है। डॉ. विजय कुमार 'त्रिशरण' शोधपरक, तर्कशील एवं बुद्धिवादी साहित्य लेखन के क्षेत्र में एक से बढ़कर एक अनूठे ग्रंथों की रचना कर रहे हैं। नीर-क्षीर विवेक के धनी डॉ. त्रिशरण हमारे समाज का साहित्यिक गौरव हैं। उन्होंने आनुवांशिकी के क्षेत्र में हुए नए अनुशंधानों के आलोक में अकाट्य तर्कों द्वारा बहुत सफलता के साथ यह सिद्ध किया है कि वर्तमान भारत के आर्य-ब्राह्मण भारतीय मूल के नहीं, अपितु बाहर से आकर भारत में बसे हैं। इस सार्थक पुस्तक के माध्यम से डॉ. त्रिशरण जी ने एक ऐसे शोध-क्षेत्र में पदार्पण करने के लिए संसार भर के विद्वानों का ध्यान अर्पित किया है, जिस पर अज्ञानांधकार के पर्दे पड़े हुए थे। इस शोधकार्य को आगे बढ़ाने से जाति एवं नस्ल संबंधी अनेक मिथ्या धारणाएं एवं ब्राह्मणी गप्पों का भंडा-फोड़ होने की पूरी संभावना है।

विलक्षण प्रतिभा के धनी विद्वान लेखक डॉ. विजय कुमार 'त्रिशरण' द्वारा लिखित कई पुस्तकों को प्रकाशित करने का गौरव हमें पहले से ही प्राप्त है। सम्यक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित उनके ग्रंथ हैं—1. बहुजन भारत में धार्मिक डाका, 2. बुद्धयान, 3. पुरुषसूक्त, 4. महाकवि रविदास और चमत्कारिक जनश्रुतिया, 5. अशोक विजयदशमी का ब्राह्मणीकरण और 6. यदि बाबासाहेब संविधान निर्माता न होते।

पुस्तक के अंत में आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापट्टनम के विद्वान लेखक की शोधकृति 'उच्चवर्णीय जातियां, आर्य यूरेशियन हैं, आनुवांशिक शोध से प्रमाणित एवं समर्थित ग्रंथ है। इस ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद मा. गोपाल (स्टील प्लांट, विशाखापट्टनम, आंध्र प्रदेश) द्वारा तथा इसका प्रकाशन डी.के. खापर्डे मेमोरियल ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा किया गया है। अपने सुधी पाठकों के अधिकाधिक ज्ञान प्रकाश के उद्देश्य से हमने यह पुस्तिका इस पुस्तक के अंत में परिशिष्ट के रूप में साभार सम्मिलित कर ली है।

आशा है कि हमारा पाठकवर्ग हमारे इस प्रयास का स्वागत ही करेगा।

6 दिसंबर, 2012

—शान्ति स्वरूप बौद्ध

पुरोवाक्



हमारे देश के तथाकथित इतिहासकारों द्वारा पिछले दो-तीन दशकों से आर्यों के भारतीय मूल का सिद्ध करने तथा दुनिया की महानतम सभ्यता 'सिंधु-सभ्यता' को सरस्वती सिंधु-सभ्यता के रूप में प्रस्थापित करने का कुत्सित षडयंत्र जारी है। समकालीन परिदृश्य पर गंभीरतापूर्वक विचार करने पर ज्ञात होता है कि 20वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध वह समय था, जब बाबासाहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर के बाद बहुजन नायक मान्यवर कांशीराम भारत के मूलनिवासियों के इतिहास, उनकी सभ्यता, संस्कृति व धर्म की पुनर्स्थापना करने तथा समता मूलक समाज बनाने के लिए खामोश क्रांति का बिगुल बजा रहे थे। जब उनके द्वारा चलाए जा रहे सामाजिक परिवर्तन आन्दोलन से ब्राह्मणवाद की चूलें हिलने लगीं, तब अपनी कमजोर होती जड़ों को फिर से मजबूत करने के लिए ही ब्राह्मणवादियों ने न केवल इतिहास से छेड़छाड़ आरंभ कर दी, अपितु इतिहास की मनगढ़ंत व्याख्या भी शुरू कर दी। यह कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है, क्योंकि इतिहास के विभिन्न काल खंडों में देखने को मिलता है कि जब-जब ब्राह्मण संस्कृति और सभ्यता पर खतरा दिखाई दिया है तब-तब नया इतिहास गढ़ने की कोशिश की गई है।

वर्तमान में आर्यों के मूलनिवास स्थान एवं सिंधु-घाटी सभ्यता के संबंध में किए जा रहे दुष्प्रचार तथा घृणित प्रयासों का पर्दाफाश करने तथा देश के वास्तविक इतिहास से भारत के मूलनिवासियों को परिचित करवाने की दिशा में डॉ. विजय कुमार त्रिशरण द्वारा रचित **"आनुवांशिक शोध एवं विदेशी आर्य ब्राह्मण"** एक महत्त्वपूर्ण कृति है। प्रस्तुत कृति में डॉ. त्रिशरण ने जिन महत्त्वपूर्ण विषयों पर तथ्यपरक विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए निष्कर्ष निकाला है उनमें भारत का नामकरण, आर्यों का मूल निवास, सिंधु-सभ्यता तथा स्त्री और शूद्रों के प्रति शास्त्रों के विधान प्रमुख हैं। इससे संबद्ध प्रश्नों के समाधान के लिए डॉ. त्रिशरण ने ऋग्वेद के अन्तःसाक्ष्यों तथा अनुवांशिक

शोध के नतीजों का सहारा लिया है। जो बातें निष्कर्ष रूप में दी गई हैं उससे स्पष्ट होता है कि वैदिक आर्य विदेशी आक्रांता थे, वे हिंसक और बर्बर थे तथा उनकी सभ्यता और संस्कृति में अनेक दुर्गुण थे। उनके द्वारा बनाई गई समाज व्यवस्था तथा धर्म के अनेक प्रतीक उनके निजी स्वार्थों की पूर्ति के लिए थे। तीर्थ, मंदिर, व्रत, उपवास आदि भारत के मूलनिवासियों के शोषण हेतु बनाए गए उपकरण थे। यह सुविदित है कि वैदिक आर्यों ने अपने प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद में अपने भारत आगमन के दौरान मार्ग में आने वाली कठिनाइयों, घटनाओं तथा अपने अनुभवों का विस्तृत वर्णन किया है। वैदिक ग्रंथों में विजित समुदाय (जो भारत के मूल वाशिंदे थे) की स्त्रियों के अपहरण, लूटपाट तथा उन्हें जबरन बंदी बना कर रखने, उन्हें आपस में बांटने के अनेक वृतांत हैं। विजित अनार्यों तथा उस समुदाय से जबरन लाई गई स्त्रियों के साथ अच्छे व्यवहार की कल्पना करना अक्रांता, निर्मम एवं क्रूर वैदिक आर्यों से बेमानी है। यही कारण है कि वैदिक जनों ने विजित अनार्यों को अपनी समाज-व्यवस्था में शूद्र का दर्जा दिया और उनके साथ ही स्त्रियों के लिए भी भेदभाव पूर्ण विधि-नियमों का निर्माण किया। वैदिक ग्रंथों में वर्णित तथ्यों की पुष्टि अब आनुवांशिक शोध के परिणामों से भी हो चुकी है, जिसका सविस्तार विवरण इस पुस्तक में दिया गया है। वस्तुतः दलितों-शोषितों की मुक्ति अपनी मूल संस्कृति और उसके प्रतीकों को अपनाने और उनके प्रति सम्मान का भाव रखने तथा महापुरुषों के आदर्शों पर चल कर ही हो सकती है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि डॉ. त्रिशरण की यह कृति सामान्य पाठकों से लेकर अध्येताओं तक का पथ प्रदर्शन करने में सहायक सिद्ध होगी।

06 दिसम्बर, 2008

—डॉ. महेश प्रसाद अहिरवार
एसोसिएट प्रोफेसर
प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वराणसी—221005

प्राक्कथन



सन् 1965 में जब दुनिया की प्राचीनतम तीन महान सभ्यताओं में से एक हड़प्पाई सभ्यता के मुख्य नगर हड़प्पा के कब्रस्तान R-37, H तथा G की पुरातत्वीय खुदाई में मिले मानवीय अस्थिपंजरों की वैज्ञानिक जांच-पड़ताल के परिणाम सार्वजनिक हुए जिसके अनुसार वहां के मूलनिवासी आस्ट्रेलियन, द्रविड़ एवं अल्पाइन खासी प्रकार के लोग थे, तो तथाकथित उच्च जातियों के लोग, जो अब तक स्वयं को आर्य कहते थकते नहीं थे, सहसा भारी चिंताग्रस्त हो उठे कि हड़प्पाइयों की इस आनुवांशिकीय पहचान से तो वे लोग विदेशी कहे जाने लगेंगे और 30-40 साल के अल्पकाल में ही उनके विरुद्ध "अंग्रेजो भारत छोड़ो" के आंदोलन की तर्ज पर "आर्यो भारत छोड़ो" का आंदोलन छिड़ जाएगा। अतः उन्होंने स्वयं को आर्य कहना बंद कर दिया।

सन् 1985 के इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस के सत्र में, ब्राह्मणवादी विचारधारा के इतिहासकारों ने हंगामा खड़ा कर दिया कि "उन्हें हड़प्पाइयों की आनुवांशिक पहचान की प्रकाशित वैज्ञानिक रिर्पोट स्वीकार नहीं है।" अंततः इस प्रश्न पर इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस दो फाड़ हो गई यानी उक्त विचार का पक्षधर ब्राह्मणवादी राइटिस्ट वर्ग तथा दूसरा ईमान विपक्षी लेफ्टिस्ट वर्ग। आज भी दोनों वर्गों के अलग-अलग सत्र होते हैं। क्योंकि आज भी देश पर पहले वर्ग का शासन है, अतः वह निर्लजता से अपने हित की पूर्ति के लिए इतिहास की रचनाओं में हेरा-फेरी करने में व्यस्त हो गया है, ताकि प्रमाणित कर सके कि सिंधु घाटी सभ्यता के सृजनकर्त्ता आदिवासी आस्ट्रेलियन, द्रविड़ एवं अल्पाइन खासी नहीं, आर्य थे। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने छद्म भेष में भारतीय पुरातत्वीय सर्वेक्षण विभाग पर अपना अधिकार जमा लिया है और खूब मनमानी कर रहा है। दूसरी ओर भले ही लेफ्टिस्ट वर्ग उसका विरोधी है, मगर उसी के खून का संबंधी होने के कारण हाथ पर हाथ धरे बैठा है और उसके विरुद्ध कोई ठोस कदम नहीं उठा रहा है। सन् 2006-07

में दिल्ली विश्वविद्यालय के सत्र में मैंने ठोस कदम उठाते हुए अपना शोध-पत्र, जिसका शीर्षक था—"Re-appraisal of scientific studies of Human Skeletons unearthed from the Harappan cemeterie" (हड़प्पा कब्रस्तान से खोदकर निकाली गई मानव कंकाल के वैज्ञानिक अध्ययन का पुनर्मूल्यांकन) प्रस्तुत किया था, जिसमें प्रमाणित किया गया था कि वे लोग पूर्व के रिर्पोट में बताए गए द्रविड़ लोगों को आर्य बताने की ज़िद पर अड़े हुए हैं, मगर संभवतः उस शोध-पत्र को कांग्रेस के जर्नल "द इंडियन हिस्टोरीकल रिभ्यूव" में प्रकाशित करने का साहस नहीं कर पाए हैं।

ऐसी विकट परिस्थितियों में डॉ. **विजय कुमार त्रिशरण की शोधपूर्ण रचना "आनुवांशिक शोध और विदेशी आर्य ब्राह्मण" एक महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर बन कर सम्मुख आई है, जो इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस के ब्राह्मणवादी राइस्टि वर्ग पर एक बड़ा भारी प्रहार हो सकता है।**

मैंने अपनी प्रसिद्ध शोध रचना "सिंधु घाटी सभ्यता के सृजनकर्ता शूद्र और वणिक" में अंतिम निष्कर्ष निकाला है कि "वर्ण और जातिवादी व्यवस्था उपनिवेशवादी है।" अर्थात बर्बर आर्य आक्रमणकारियों ने हड़प्पाई लोगों को विजित कर अपना गुलाम बना लिया था और उसकी गुलामी को चिरस्थाई बनाने के लिए वर्ण एवं जाति-व्यवस्था की संरचना की और उन्हें चौथे शूद्र वर्ण में धकेल दिया। अर्थात शूद्रता का अर्थ गुलामी है। मैंने बतलाया है कि ऋग्वेदिक वर्णनों के अनुसार आर्यों ने हड़प्पाईयों का लाखों की संख्या में वध किया और शेष बचे लोगों को गुलाम बना लिया। मुझे यह लिखते हुए भारी हर्ष होता है कि डॉ. त्रिशरण ने मेरे विचारों की **सप्रमाण पुष्टि** की है।

उन्होंने आगे विशेष बतलाई है कि वध किए गए हड़प्पाईयों (मूलनिवासी बहुजन समाज) की पत्नियों को भोग-विलास एवं संतानोत्पत्ति के लिए अपने घरों में रख लिया जाता था क्योंकि वे दासों (दास=महादानी) की पत्नियां थीं, अतः उन्हें ऋग्वेद में दासी या काली दासी कह कर पुकारा है। आर्य क्षत्रियों द्वारा अपने ब्रह्मण ऋषियों को भारी संख्या में इन दासियों को दान में दिया जाता था। इन दासियों से उत्पन्न संतान में आर्य खून होने के कारण वह सुंदर थीं। इसके दो प्रमुख परिणाम हुए, उनकी पुरुष संतान, उनमें पितृ-सत्तात्मक परिवार परंपरा होने के कारण, ब्राह्मण बन गई। आज पुरुषों से अधिक स्त्रियों के सुंदर होने का यही मूल कारण है।

मगर क्योंकि दासियां अनार्य थीं, अतः इनके साथ आर्यों ने शूद्रों जैसा व्यवहार किया और स्मृतियों में ऐसे ही कानूनों का सृजन किया। इस ऐतिहासिक घटना से एक और महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि आर्य भारत में शरणार्थी के रूप में नहीं, आक्रमणकारी के रूप में आए थे। इसी कारण वे अपने साथ स्त्रियां नहीं लाए थे।

डी.एन.ए. विश्लेषण से स्पष्ट किया गया है कि उच्च जातियों के पुरुष यूरोप के पुरुषों के बहुत निकट हैं, जबकि निम्न अनार्य जातियों का संबंध एशिया से है। स्पष्ट है **डॉ. त्रिशरण ने उक्त निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए भाषाई, पुरातत्वीय, प्रमाणों का ही नहीं, डी.एन.ए. के प्रमाणों का भी सहारा लिया है, जो इस शोध का मजबूत आधार है।**

जिस कौम का इतिहास अंधेरे में होता है, उसका भविष्य भी अंधकारमय ही बना रहता है। मगर मुझे पूर्ण आशा है, **डॉ. त्रिशरण जी की यह रचना आदिवासी जनों के उस अंधेरे को प्रकाश में बदल देगी। इससे प्रेरित हो कर वह स्वाभिमानी बनेगा, प्रोत्साहित होगा और अंततः उसके अंदर जज्बे की चिन्गारी बन कर धधक उठेगी और वह अपनी गुलामी की बेड़ियों को तोड़ डालेगा।**

आशा है यह रचना पाठकों को अपनी ओर भारी आकर्षित करेगी और प्रेरित भी।

दिनांक 28 अप्रैल, 2010

डॉ. नवल वियोगी
डायरेक्टर,
इंडियन नेशनल हिस्टेरिकल रिसर्च काउंसिल
लुधियाना (पंजाब)

मनोगत

यह सर्वविदित है कि भारत के मूलनिवासी बहुजन समाज के लोग पिछले 3500 वर्षों से विदेशी आर्य ब्राह्मणों के शासन और शोषण के शिकार रहे हैं। इसके पूर्व एक सुविकसित, सुसमृद्ध और सुप्रसिद्ध मूलनिवासियों की सभ्यता थी; जिसे सिन्धुघाटी सभ्यता (हरप्पा असुर सभ्यता)[1] के नाम से जाना जाता था। परन्तु विदेशी आर्यों ने ईसा पूर्व 1500 वर्ष पहले भारत पर आक्रमण कर इसे नष्ट कर दिया तथा अपनी सभ्यता, संस्कृति, सत्ता और धर्म की स्थापना की जिसे आज हिन्दू अथवा ब्राह्मण धर्म-संस्कृति के नाम से जाना जाता है।

यह इतिहास का सर्वमान्य तथ्य है कि विदेशी आर्य ब्राह्मण भारत में आक्रमणकारी के रूप में आए थे। सन् 2001 में अमेरिका के **डॉ. माइकल बामशाद** और भारत के **प्रो.वी. भास्कर राव** के संयुक्त आनुवांशिक शोध (DNA research) रिर्पोट एवं बाद में पूना के **जय दीक्षित** के आनुवांशिक शोध ने उपर्युक्त ऐतिहासिक तथ्य पर वैज्ञानिक मुहर लगा दी है। इसके बाद आर्य ब्राह्मणों के विदेशी और आक्रमणकारी होने के संबंध में कोई संदेह नहीं रह जाता है। "प्राकृतिक इतिहास, साहित्य, तकनीक, उत्पत्ति का इतिहास, जैव वनस्पतिक विज्ञान तथा भौगोलिक जीवशास्त्र आदि से प्राप्त जानकारियां और निष्कर्ष ऐसा प्रमाणित करती है कि भारत में आर्यों (यूरेशियन लोगों) का प्रवेश हुआ था।"[2] चूंकि यह तथ्य ब्राह्मणी अस्मिता और अस्तित्व से जुड़ा हुआ है, इसलिए हिन्दूवादी इतिहासकार मण्डली इन साक्ष्यों को विकृत कर लोगों को भ्रमित करने के अभियान में जुट गए हैं तथा दुष्प्रचार कर रहे हैं कि "द्रविड़ (मूलनिवासी बहुजन समाज) भी विदेशी हैं। प्रस्तुत पुस्तक का उद्देश्य आर्यों के इसी विदेशी मूल की स्थापना संबंधी ऐतिहासिक, पुरातात्विक, वैदिक एवं वैज्ञानिक पड़ताल को जन-आवाम से अवगत कराना है।

आर्य ब्राह्मण विदेशी और आक्रमणकारी हैं, यह तथ्य भारत के मूलनिवासी

दलित-बहुजनों को बताना इसलिए आवश्यक है कि वे इस सत्य को जान सकें कि उन्हें हजारों वर्षों से जानवरों की भांति जीवन जीने के लिए किसने विवश किया? शिक्षा, सम्पत्ति और सत्ता से वंचित कर उन्हें किसने गुलाम बनाया? वे कौन जिम्मेदार लोग हैं, जिन्होंने दलित-बहुजनों के संगठित कुटुम्ब को 6245 जातियों में बांटकर उनमें आपसी ऊंच-नीच और भेद-भाव पैदा किया? वे कौन लोग हैं, जो आज भी बहुसंख्यक समाज को सांस्कृतिक गुलाम बनाकर रखे हुए हैं तथा भारत की समतामूलक संविधान को संकुचित कर उन्हें आर्थिक गैर-बराबरी के गर्त में जीवित रहने को मज़बूर किए हुए हैं? इन सब बातों को जान-समझ कर मूलनिवासी दलित-बहुजन समाज अपने शत्रु-मित्र की ठीक-ठीक पहचान कर सकेंगे तथा अपनी मुक्ति और उन्नति के पथ पर प्रशस्त होते हुए पुनः **मूलनिवासी बहुजन धर्म, संस्कृति, समाज और सत्ता की स्थापना कर सकेंगे।** आशा है पुस्तक के उद्देश्यों का सकारात्मक प्रतिफल मिलेगा।

"वैदिक आर्यों का कलंक मिटाने के लिए आप कितनी ही बातें क्यों न बतावें, पर वह अमिट है, मिट नहीं सकता। उनका शूद्रातिशूद्र वर्ग के साथ जो अकथनीय अत्याचार और दुर्व्यवहार हुआ है, वह अत्यंत, दारुण, लोमहर्षक और हृदयविदारक है। जब तक आप अपने किए हुए कुकर्मों पर शुद्ध हृदय से पश्चाताप नहीं करेंगे तथा उनको अपने बराबर धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक सब प्रकार के अधिकारों को न दे देंगे, तबतक केवल बातों से यह कलंक दूर नहीं हो सकता।"[3] विरोध और वैमनस्यता का बीज बोने वाले बहुजन नहीं, ब्राह्मण ही हैं, जिसका प्रमाण उन्हीं के रचित शास्त्रों में भरा पड़ा है।

इतिहास से समाज सबक लेता है, कुछ सीख़ता है तथा अतीत में हुई चूक की पुनरावृत्ति को रोकता है, साथ ही एक ऐसे भविष्य का निर्माण करता है जहां मानव-मानव में विश्व-बंधुत्वमय दृष्टिकोण का प्राबल्य हो। परन्तु हम देख रहे हैं कि ब्राह्मणवादियों द्वारा आज भी वही गलतियां दोहराई जा रही हैं। उनके द्वारा हजारों वर्ष पूर्व विदेशी आर्य ब्राह्मणों की विषमता पर स्थापित जातिवादी, वर्णवादी, ब्राह्मणवादी और सामंतवादी समाज-व्यवस्था को आदर्श रूप दे कर उसे और पुष्ट किया जा रहा है। इसके पुनर्महिमामंडन से दलित-बहुजन समाज भय, भ्रम, लोभ और पतन

के गर्त में गिरते जा रहा है। एक सशक्त और समृद्ध राष्ट्र निर्माण की दिशा में इसे रोकना बहुत ज़रूरी है। जाति तोड़ कर समाज जोड़ना तथा विषमता का विनाश कर मानवता स्थापित करना समय की मांग है। इसके लिए बहुजनों को सतर्क, चौकन्ना और जानकार बनना अति आवश्यक है। जानकारी ही बहुजनों का प्रबल हथियार है।

मैं सुविख्यात शोधकर्ता इतिहासकार डॉ. नवल वियोगी के प्रति आभारी हूं, जिन्होंने न केवल इस पुस्तक का प्राक्कथन लिखने हेतु अपना बहुमूल्य समय निकाला, बल्कि इस पुस्तक-लेखन के दौरान इन्होंने महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शन भी किया। इसके लिए मैं इनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूं। मेरे धम्म मित्र डॉ. महेश प्रसाद अहिरवार, एसोसिएट प्रोफेसर प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वराणसी को मैं हृदय से धन्यवाद देना चाहुंगा, जिन्होंने महत्त्वपूर्ण पुरोवाक लिखकर इस पुस्तक का महत्त्व बढ़ा दिया है। मैं उन विद्वान लेखकों और शोधकर्ताओं के प्रति कृतज्ञ हूं , जिनके ग्रंथों से सहायता प्राप्त कर इस पुस्तक की रचना कर सका हूं। मैं सम्यक प्रकाशन के संस्थापक महोपासक शांतिस्वरूप बौद्ध के प्रति आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंने इस पुस्तक के प्रूफ रीडिंग, स्वच्छ मुद्रण एवं प्रकाशन में रुचि लेकर बहुजन मिशन को अग्रसर करने में विशेष तत्परता दिखाकर इसे जिज्ञासु और सजग पाठकों तक पहुंचाया है।

17 सितम्बर, 2012
(रामासामी पेरियार जयंती)

डॉ. विजय कुमार त्रिशरण
आवास संख्या—बी-699,
भवनाथपुर टाउनशिप, गढ़वा (झारखण्ड)

विषय सूची

भारत देश किसके नाम पर

इस देश का नामकरण 'भरत' नाम के एक ट्राइब्स राजा के नाम पर हुआ है। परन्तु अधिकांश लोगों में यह भ्रम है कि दुष्यंत और शकुंतला के पुत्र भरत के नाम पर इस देश का नाम 'भारत' पड़ा है। ऋग्वेद में कई 'ट्राइब्स' का उल्लेख आया है, जैसे—तृस्तस, तुर्वश, द्रुह्यु , यदु, पुरू और अनु। ऋग्वेद के समय पुरू की कई शाखाएं हो गई थीं, जिसमें भरत, तृत्सु और कुथिक का नाम प्रसिद्ध है। भरत रावी नदी (अब पाकिस्तान में है) के तीर पर रहते थे। रावी को ही ऋग्वेद में 'परुष्णी' कहा गया है। आगे चलकर इसी भरत के नाम पर हमारे देश को 'भारत भूमि' के नाम से जाना गया। भागवत पुराण के श्लोकों के आधार पर बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर ने लिखा है कि "भरत नरायण का ज्येष्ठ पुत्र था, जिसके नाम पर इस भूमि को 'भारत' नाम मिला।"

प्रियवंदो नाम सुतो मनोः स्वायं भुवस्य ह[4]।
तस्याग्नी ध्रस्ततो नाभि ॠषभश्व सुतस्ततः ॥
अवतीर्ण पुत्रशतं तस्यासीद्रह्य पार गम्।
तेषां वै भारतो ज्येष्ठों नरायण परायणः।
विख्यातं वर्षयेतद्यन्नाम्ना भारत मुक्तप्रभ ॥

अर्थात् मनु, जो स्वयंभू का पुत्र था, के पुत्र का नाम प्रियवंदा था। उसके पुत्र का नाम अग्निध्र था। अग्निध्र का पुत्र नभी था। नभी का पुत्र ऋषभ था। उसके 100 पुत्र थे, जिसमें ज्येष्ठ पुत्र का नाम भरत था। इसी 'भरत' के नाम से इस सुन्दर भूमि का नाम 'भारत' जाना गया।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने **'ऋग्वैदिक आर्य'** में कहा है कि भरत कभी परुष्णी (रावी) के तट पर रहते थे, पर आज उनके नाम पर हमारा सारा देश प्रसिद्ध है। सिन्धु ने यदि भारत से बाहर हमारे देश को अपने नाम पर प्रसिद्ध किया, तो देश में परुष्णी तीर वाले भरतों (भरत और उनके वंशज) ने अपना नाम हमारे देश को दिया। इसी भरत के

वंशजों में **सुदास** नाम का एक पराक्रमी, वीर और सुन्दर दान देने वाला शूद्र राजा हुआ था जिसने ब्राह्मणों के नेता वशिष्ठ को पराजित किया था। सुदास को "पुरू भरत" भी कहा जाता है। वशिष्ठ के समर्थक ब्राह्मणों को अपने पराक्रम से हरा देने के कारण ब्राह्मणों ने सुदास को उस समय की प्रचलित परंपरा—यज्ञोपवित संस्कार कराने से इनकार कर दिया। इससे सुदास की सामाजिक प्रतिष्ठा गिर गई और वे शूद्र श्रेणी में गिने जाने लगे। सुदास और ब्राह्मणों के बीच का मुद्दा था कि क्या पुरोहित के पद के लिए वह केवल ब्राह्मण की सेवाएं लेने को बाध्य था। प्रसिद्ध विद्वान एस.के. विश्वास के अनुसार "आर्यों के भारत आक्रमण के पूर्व इस देश का नाम भारतवर्ष था। ऋग्वेद की ऋचाओं में भी आर्य ऋषिगण मूलनिवासी असुर समुदाय को भारतीय कह कर संबोधित करते हैं (ऋग्वेद, 1/14/9; 3/4/8 एवं 7/2/8)।" परन्तु आर्यों को यह नाम कभी पसंद नहीं था। आज भी एक वर्ग इस देश को 'हिन्दुस्तान' कहना पसंद करता है, जबकी विदेशों में न तो 'भारत' और न ही 'हिन्दुस्तान' का नामोनिशान है; वहां सिर्फ 'इंडिया' ही प्रसिद्ध है। आज हमें अपने देश के प्रचीनतम नाम **'भारत'** को अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर पहचान दिलाने की आवश्यकता है।

इस प्रकार यह पता चलता है कि गौरवशाली विश्व गुरु भारत देश का नाम भारत के मूलनिवासी राजा 'भारत' के नाम पर हुआ है, जिसे आर्यों ने ईसा पूर्व 1500 में भारत आक्रमण के बाद 'आर्यावर्त' कहा। आर्यावर्त का अर्थ होता है 'आर्य'=घुमक्कड़+'आवर्त'=आवृति (बारंबारता) अर्थात् विदेशी घुमक्कड़[5] (यायावर या मुसाफिर)। आर्यों की छोटी-छोटी टोलियों में भारत आना बहुत सालों तक लगातार होता रहा। विद्वानों का कहना है कि जब फारस के लोगों ने सिन्धु के आस-पास के लोगों को 'हिन्दू' नाम दिया, तो इस नाम को विदेशी आर्य ब्राह्मणों ने अपना लिया और इसके बाद 'सिंधी' को 'हिंदी' तथा 'सिंधस्थान' को 'हिंदुस्तान' कहा जाने लगा। इस प्रकार देश का नाम 'हिन्दुस्तान' पड़ा। भाषा उच्चारण भेद के कारण फारस निवासी सिन्धु के 'स' को 'ह' और 'ध' को 'द' उच्चारित करते थे। परन्तु निम्नलिखित प्रश्न इस दावे को खारिज कर देता है—

1. यदि 'सिन्धु' को ही 'हिन्दू' कहा गया, तो 'हिन्दू' शब्द का उल्लेख ऋग्वेद में अवश्य होना चाहिए, क्योंकि 'सिन्धु' का वर्णन ऋग्वेद में आया है। परन्तु ऋग्वेद में हिन्दू शब्द का एक बार भी उल्लेख नहीं है, क्यों?
2. सिन्धु नदी के आसपास के लागों द्वारा इसके परिवर्तित नाम 'हिन्दू' के रूप में उच्चारित किए जाने के बावजूद अभी तक सिन्धु नदी का नाम अपरिवर्तित ही है, क्यों? सिन्धु नदी 'हिन्दू नदी' के रूप में क्यों नहीं प्रचलित हुआ।
3. 'सिन्धु' शब्द से बना 'हिन्दू' शब्द के साथ धर्म जुड़ कर 'हिन्दू धर्म' बन गया, देश का नाम हिन्दुस्तान' हो गया परन्तु नदी के रूप में 'सिन्धु' आज भी यथावत है, ऐसा क्यों?

वास्तविकता है कि मध्यकाल में भारत के मुसलमान शासकों ने मुसलमानों को छोड़कर शेष भारतीयों को घृणावश 'हिन्दू' शब्द का प्रयोग काला, काफिर, चोर, डाकू, गुलाम आदि के अर्थ में किया। फारस के लोग 'श' अथवा 'स' वर्ण को समुचित उच्चारण[6] करने में समर्थ थे। इस कथन की पुष्टि में निम्नलिखित उद्धरण पेश किया जाता है—**"हिन्दू दर मुहाविरे फारसियां बमानी दुज्द व रहमान मी आयद।"**[7] अर्थात फारसी भाषा के मुहावरे में 'हिन्दू' शब्द काला, काफिर, चोर और डाकू के अर्थ में आता है। "आर्य समाज के संस्थापक दयानंद सरस्वती के प्रसिद्ध शिष्य पं. लेखराम, जो उर्दू-फारसी के विद्वान थे, ने अपनी पुस्तक **'कुलियात आर्य मुसाफिर'**[8] में 'हिन्दू' का शब्दार्थ चोर, दास, और काला बताया है और आर्यसमाजियों को सचेत किया है कि 'हिन्दू' शब्द एक गाली है, जो भारतीयों को मुस्लिम शासकों ने दीन-हीन समझ कर दी है। बौद्ध-जगत के विख्यात विद्वान महोपासक भद्रशील रावत के अनुसार सामाजिक तथा प्रयोगात्मक रूप से 'हिन्दू' शब्द का अर्थ कुछ और ही है। वर्णव्यवस्था के कठोर नियमों के कारण ऊंचे वर्ण के लोग निम्न वर्ण के लोगों को कई प्रकार से अन्याय और अत्याचार का शिकार बनाते हैं, जिसका अनुमोदन हिन्दू शास्त्र भी करते हैं। ऋग्वेद आर्यों द्वारा अनार्यों पर लोमहर्षक हिंसा के वर्णनों से भरा पड़ा है। स्मृति ग्रंथों में शूद्रातिशूद्र वर्ग के विरुद्ध क्रूरतम दंड के विधान हैं। वर्णाश्रम

धर्म अथवा ब्राह्मणी धर्म को ही हिन्दू धर्म कहा जाता है। अतः रावत साहब हिन्दू शब्द का अर्थ-विन्यास करते हुए लिखते हैं—"हिन्दू वह है, जो हिंसा (हिं=हिंसा) के द्वारा सामाजिक वातावरण को दूषित (दू=दूषित) करते हैं।" निम्नलिखित संस्कृत का श्लोक इस कथन की पुष्टि करता है, यथा—

हिंसया यो दूषयति अन्यानां मनासि जाति।[9]
अहंकार वृत्तिना सततं सो हिंदूः॥

अर्थात "जाति-पांति के घमंड में आकंठ डूबे जो ऊंच-नीच की भावना से ओत-प्रोत दूसरों की भावना को सदैव चोट पहुंचाते हैं, उसे हिन्दू कहते हैं।" हिन्दू की यही परिभाषा व्यवहारिक और प्रयोगात्मक है।

"हिन्दू" शब्द का उपयोग परसीपोलिस, हेम्डान और नक्श-ए-रूतम् के स्तम्भों में फारसी सम्राट डरियास[10] द्वारा उत्कीर्ण शिलालेखों में पाया गया है। भारत का धर्म हिन्दू धर्म के रूप में भले ही प्रसिद्ध है, परन्तु हिन्दू संज्ञा की उत्पत्ति संस्कृत स्रोत[11] से नहीं हुई है; वह फारसी भाषा से उत्पन्न हुई है। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने मत व्यक्त किया है कि "'हिन्दू' शब्द हमारे प्राचीन साहित्य में बिल्कुल भी उपयोग नहीं हुआ है। इस शब्द का उपयोग एक हजार वर्ष या इससे अधिक पहले के वर्षों में पश्चिमी लागों द्वारा भारत और एशिया के लिए अथवा सिन्धु नदी के दूसरे किनारे पर रहने वाले लागों के लिए किया था।"[12] 'हिन्दू' शब्द संस्कृत साहित्य में सर्वप्रथम मुस्लिम काल[13] के बाद ही आया था। इस शब्द की उत्पत्ति "काला, काफिर और गाय-चोर"[14] के अर्थ में प्राचीन फारसी भाषा में हुई थी।

न केवल हिन्दू शब्द, बल्कि निर्विवाद रूप से संस्कृत[15] की उत्पत्ति भी भारत के बाहर किसी स्थान में हुई है। संस्कृत को देवभाषा, देवताओं तथा आर्यों की भाषा कहा जाता है, आर्य विदेशी थे, जिन्हें 'देव' भी कहा जाता है, अतः स्पष्ट है कि संस्कृत विदेशी मूल की भाषा हुई। सर विलियम जोन्स[16] के अनुसार ग्रीक, लैटिन और संस्कृत एक ही स्रोत से निकली हुई भाषाएं हैं। विद्वान इतिहासकार आर.सी. मजूमदार[17] के अनुसार आर्यों की संस्कृत शब्द ग्रीक, लैटिन, जर्मन, इंग्लिश भाषा से मिलते-जुलते हैं। उदहारणार्थ—

क्रम संख्या	भाषा	शब्द
1.	संस्कृत	पितर, मातर (Piter, maater)
2.	लैटिन	पतेर, मतेर (Pater, Mater)
3.	ग्रीक	पतेर, मेतेर (Pater, Meter)
4.	इंगलिश	फ़ादर, मदर (Father, Mother)
5.	जर्मन	वतेर मत्तर (Vater, Mutter)

इसका प्रमुख कारण है कि आर्य ग्रीक, जर्मन, लैटिन, रोमन, इंगलिश, डच, स्कोण्डीनेवीयन, स्पेनिश, फ्रेंच और रशियन पूर्वजों के संसर्ग में दीर्घ काल तक रहे। इस प्रकार संस्कृत विभिन्न विदेशी भाषाओं के मिश्रण से संश्लेषित भाषा का प्रतिफल है।

डॉ. नवल वियोगी के अनुसार सोवियत रूस के लिथुनियाई भाषा और संस्कृत भाषा में जबरदस्त साम्य है। लिथुनियाई भाषा और उसके उच्चारण दोनों ही संस्कृत शब्दों में और उच्चारण से बहुत कुछ मिलते हैं। दोनों भाषाओं में कितना साम्य है, यह निम्नलिखित उदाहरण से पता चलता है—

हिन्दी	संस्कृत	लिथुनियाई
तुम कौन हो?	क्स त्वम असि	कस तो असि
तुम्हारा पुत्र कौन है?	कसत्व सुनु	कस तव सुनुस
आग	अग्नि	अग्निम्
देवता	छेव	छेवस
धुवां	धूम	धूमस
सपना	स्वप्न	सपनम्
पांव	पाद	पदस

(स्रोत—सिन्धु घाटी सभ्यता के सृजनकर्ता शूद्र और वणिक—डॉ. नवल वियोगी, पृ. 120)

इतना ही नहीं लिथुनियां के कितने ही पहाड़ों और नदियों के नाम भारत के पहाड़ों और नदियों के नाम से मिलते हैं। इस भाषाई समानता के आधार पर डॉ. वियोगी प्रमाणित करते हैं कि वोल्गा का पश्चिमी प्रदेश तथा कैस्पियन

सागर के चारों ओर की भूमि ही आर्यों[18] का मूलनिवास स्थान था। प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक माइकल विट्ज़ेल[19] के मतानुसार वैदिक संस्कृत और ईरानी भाषा दो अलग भाषा न हो कर एक ही भाषा की दो बोलियां हैं। जैसे—

तम् मित्रम् यजामहे—संस्कृत (हम सूर्य की आराधना करते हैं।)

तम् मिथ्रम यजमैदे—ईरानी (हम सूर्य की आराधना करते हैं।)

आर्य-पूर्व भारत में संस्कृत भाषा का प्रयोग नहीं होता था। सिन्धुघाटी सभ्यता की लिपि अलग थी, जिसे अभी तक पढ़ा नहीं गया है। सम्राट अशोक की राजभाषा पालि थी। संस्कृत को परिष्कृत कर विकसित भाषा का रूप देने में व्याकरणाचार्य पाणिनी का महत्त्वपूर्ण योगदान है; फिर भी यह आर्य ब्राह्मणों तक ही सीमित रखा गया। इसे जनभाषा कभी नहीं बनाया गया। यही कारण है कि तथागत बुद्ध ने स्वयं न तो संस्कृत में देशना दी और न ही भिक्खुओं को इस भाषा में शिक्षा[20] लेने की अनुमति दी; उन्होंने पालि भाषा में ही उपदेश दिया। किन्तु कालान्तर में ब्राह्मणों ने बुद्ध के आदेश के बिपरीत बौद्ध साहित्य का संस्कृतकरण करके भारत के मूलनिवासियों की भाषा को मिटा दिया।

'हिन्दू' शब्द के अस्तित्व में आने से देश का नामकरण 'हिन्दुस्तान' के रूप में हुआ। अतः यह स्पष्ट हो गया कि 'आर्यावर्त' और 'हिन्दुस्तान' दोनों ही नाम विदेशी हैं, जिस प्रकार 'इंडिया' अंग्रेजों का दिया हुआ विदेशी नाम है। प्राचीन यूनानी (Greeks) सिन्धु नदी को 'इंडस' (Indus) कहते थे। आगे चल कर 'इंडस' से 'इंडिया' बन गया तथा इसके वाशिंदों को इंडियनस् कहा जाने लगा। परन्तु मूलतः इस देश का प्राक्वैदिक नाम भारत' ही है। भारत के संविधान के प्रथम अनुच्छेद में 'भारत' का ही उल्लेख है—भारत, अर्थात् इंडिया राज्यों का संघ होगा (India that is Bharat there shall be an union of State)'। दूसरे शब्दों में भारत, जो ब्रिटिश राज में इंडिया के नाम से जाना जाता था, अब स्वतंत्र है और वही भारत राज्यों के संघ के रूप में जाना जाएगा। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश का नामकरण मूलनिवासी अनार्य राजा भरत के नाम पर भारत के रूप में स्वीकार किया जाना बड़ी ही गर्व की बात है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी देश की पहचान भारत के नाम से ही हो, ऐसा प्रयास किया जाना चाहिए।

भारत के मूलनिवासी सभ्यता एवं संस्कृति

सिन्धु उपत्यका में प्रवेश करने के समय जिस जाति से घुमन्तु आक्रमणकारी आर्य घोड़सवारों का मुकाबला हुआ था, वह वस्तुतः सिन्धु उपत्यका की बहुत संस्कृत और समृद्ध जाति थी। लगभग 2500 ई.पू. भारत में एक अति विकसित सभ्यता थी—**'सिंधुघाटी सभ्यता'**। यह मेसोपोटामिया और सुमेरियन सभ्यता जैसी पुरानी सभ्यता थी। इस सभ्यता के संस्थापक भारतीय मूलनिवासी थे। "सिन्धु घाटी सभ्यता के सृजन में जिन लोगों का हाथ था वे द्रविड़ों के ही पूर्वज थे। इनका रंग काला, कद छोटा, घुंघराले काले बाल, छोटी चपटी नाक थी तथा वे आर्यों द्वारा न समझे जाने वाली द्रविड़ भाषा बोलते थे। इनका दस्यु या दास के रूप में ऋग्वेद में बार-बार वर्णन आया है और जिनका आर्यों के साथ युद्ध हुआ था।"[21] इस संबंध में सुप्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. नवल वियोगी ने **"सिन्धु घाटी सभ्यता के सृजनकर्ता शूद्र और वणिक"** नाम से एक ऐतिहासिक शोध-प्रबंध ही लिखा है। इस ग्रंथ में उन्होंने 'सिन्धु घाटी सभ्यता' का काल वैज्ञानिक तकनीक कार्बन सी-14 की खोज के आधार पर 2500-1700 ई.पू. माना है।

भारत के मूलनिवासी अनार्य (द्रविड़) बड़े ही सभ्य, शांतिप्रिय, हिंसा-विरत, मृदुल और धार्मिक प्रकृति वाले थे। ये वृक्ष तथा पशु (बैल अथवा सांड) के पूजक थे। वृक्षों में पीपल[22] वृक्ष को काफी पवित्र मानते थे। धार्मिक अनुष्ठानों में महिलाएं सिर पर पीपल की टहनियां[23] धारण करती थी। ये सूर्य की भी आराधना करते थे। द्रविड़ योगविद्या के आविष्कारक थे। सिंधु सभ्यता के उत्खनन के दौरान योगमुद्रा में कई मानव आकृतियां तथा सिक्के प्राप्त हुएं हैं। भारत के मूलनिवासी कर्मकाण्ड, यज्ञ और पशुबलि से अपरिचित थे। यही कारण है कि विदेशी आर्य ब्राह्मण मूल भारतीय को ऋग्वेद में अयाग्निक (यज्ञ विहीन), यज्ञ विरोधी[24], यज्ञ[25] नहीं करने वाले, ब्राह्मण विरोधी[26], अन्यब्रतम[27] (अन्य धर्म में विश्वास करने वाले) अन्यधर्मी[29] (आर्य धर्म नहीं मानने वाले), सत्यधर्मा, योती[28] (योगी), बलि[30] नहीं देने वाले, यज्ञ-बलि विरोधी[31] आदि कहा है। मूलनिवासी मुख्य रूप से प्रकृति-पूजक

थे। प्रकृति से इनकी आवश्यकता पूरी होती थी तथा बैल कृषि के लिए उपयोगी थे, इसीलिए वे इनकी पूजा करते थे।

प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता सर जॉन मार्शल द्वारा 1921 में सिन्धुघाटी सभ्यता (हड़प्पा और मोहनजोदड़ो शहर) की कराई गई खुदाई में पीपल-पत्र, सांड, हिरण, मोर, हाथी, बाघ, गेंडा तथा योगमुद्रा युक्त सिक्के तथा मानव आकृतियां मिली हैं। इनके अध्ययन से पता चला है कि भारत के मूलनिवासी पूर्वज 'श्रमण संस्कृति' अर्थात् बौद्ध धर्म में विश्वास करते थे। सिंधु सभ्यता की पोशाक-शैली[32], प्रार्थना-शैली[33] तथा मुहरों पर योग-शैली[34] में उत्कीर्ण चित्र बिल्कुल बौद्ध भिक्खुओं जैसा ही है। सिंधु सभ्यता (हड़प्पा और मोहनजोदड़ो) के प्रचीन नगरों में बौद्ध-स्तूप[35] भी खुदाई के क्रम में मिले हैं। हड़प्पा नगर का स्तूप[36] उन्नीसवीं सदी के उतरार्द्ध में स्थानीय लोगों द्वारा नष्ट कर दिया गया परन्तु मोहनजोदड़ो का स्तूप आज भी अत्यंत जर्जर अवस्था में मौजूद है। स्तूप में मिले बर्तन पर की गई चित्रकारी तथा उसमें रखे राख और हड्डियों के अवशेष बौद्ध परंपरा के अनुरूप ही थे। ये अवशेष बौद्ध भिक्खुओं के ही थे। इस प्रकार उत्खनन में प्राप्ते मोहरें, सिक्के, बौद्ध-स्मारक, स्तूप एवं परम्पगत प्रतीक श्रमण संस्कृति से जुड़े हैं, जो सिद्ध करता है कि बौद्ध धर्म भारत का आदि और वेद-पूर्व[37] धर्म था तथा सिंधु सभ्यता के निवासियों का एक धार्मिक नगर था और वे अत्यंत धार्मिक प्रवृति के थे। श्रमण का अर्थ होता है श्रम द्वारा अध्यात्मिक ज्ञान का विस्तार, श्रम द्वारा जीविकोपार्जन करना।

मूलनिवासी ब्राह्मण धर्म (हिन्दू धर्म) तथा संस्कृत मंत्रों[38], ब्राह्मण पुजारियों, वैदिक देवता जैसे इंद्र, सोम अथवा ब्रह्मा, विष्णु जैसे देवों से बिल्कुल अनभिज्ञ थे। ब्राह्मणी धर्म (वर्णाश्रम धर्म अथवा हिन्दू धर्म) तो विदेशी आर्य ब्राह्मणों ने ईसा पूर्व 1500 में भारत के मूलनिवासियों को छलपूर्वक जय कर स्थापित किया था जबकि हड़प्पा असुर सभ्यता 5500 वर्ष पुरानी सभ्यता है। प्रश्न उठ सकता है कि भगवान बुद्ध का जन्म तो ईसा पूर्व 563 में हुआ था और उन्होंने ईसा पूर्व 528 में बौद्ध भिक्खुसंघ की स्थापना की तो आज से 5500 वर्ष पूर्व बौद्ध धर्म भारत के मूलनिवासियों का कैसे धर्म हो सकता है? इस प्रश्न का हल इतिहास में मौजूद है। पाठकों को यह समझ लेना चाहिए कि केवल गौतम सिद्धार्थ ही ज्ञान प्राप्ति के बाद बुद्ध नहीं हुए थे;

उनके पहले 27 और बुद्ध हुए थे और उन्हीं पूर्वबुद्धों की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए गौतम सिद्धार्थ ने प्रव्रज्या ग्रहण करने के पश्चात बौद्ध भिक्खुसंघ की स्थापना की थी। बौद्ध धर्म के सारे नीति सिद्धांतों की स्थापना तथागत बुद्ध ने ही की थी[39]।" पालि साहित्य (अट्ठाविस्ती पास्तिवा अट्ठ गाथा)[40] में 28 बुद्धों का उल्लेख मिलता है। सम्राट अशोक ने कोनाकमनस[41] (कनकमुनि) नामक एक पूर्वबुद्ध[42] के स्तूप की मरम्मत करवाई थी। पूर्वबुद्ध की उपासना पद्धति अशोक के काल में स्थापित हो चुकी।

भारत के मूलनिवासी अर्थात द्रविड़ मुख्यतः 'नाग' लोग थे, क्योंकि ये एक फन (रानी) और पांच फन[43] (राजा) युक्त नाग का मुकुट धारण करते थे। नाग उनका टोटम था। चूंकि नाग 'द्रविड़ भाषा' बोलते थे, इसीलिए उन्हें द्रविड़ कहा जाता है। अतः नाग और द्रविड़ दोनों[44] एक ही लोग हैं। द्रविड़ 'दमिल'[45] शब्द से बना है और दमिल 'तमिल' से। द्रविड़ शब्द 'तमिल' का ही संस्कृतनिष्ठ रूप है। आर्य-पूर्व भारत में द्रविड़ समस्त भारत[46] की भाषा थी। "उत्तर भारत के नाग लोगों ने अपनी मातृभाषा 'तमिल' छोड़कर 'संस्कृत' अपना ली, जबकि दक्षिण भारत के नाग अपनी मातृभाषा के रूप में तमिल अपनाए रहे और आर्यों की भाषा संस्कृत नहीं अपनाई।" उत्तर भारत के लोग तमिल छोड़ने के लिए इसलिए विवश हुए होंगे कि इस भाग में आर्यों का विस्तार और प्रभाव अधिक हुआ था और दक्षिण में विंध्य पर्वत के कारण वे बहुत बाद में आर्य दक्षिण की ओर बढ़े। इस प्रकार द्रविड़ 'नस्ल' न होकर 'भाषा' से संबंधित हैं, जबकि 'नाग' एक नस्ल है। दूसरे शब्दों में नाग एक नस्ल है, जिसे द्रविड़ कहा जाता है, जो भारत के मूलनिवासी थे। इन्हीं के नाम पर नागपुर महानगर बसा है। नागों की धरती होने के कारण ही परमपूज्य बाबासाहेब ने 14 अक्टूबर, 1956 को नागपुर में अपने पांच लाख अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म ग्रहण किया था।

मूलनिवासियों का निवास स्थायी होता था। वे बड़े-बड़े किलों/नगरों के मालिक थे। सिन्धु सभ्यता के पास मोहनजोदड़ो (अब पाकिस्तान में सिंधप्रांत के लरकाने जिले में) तथा हड़प्पा (पंजाब के मिन्टगुमरी जिले में) जैसे सुनियोजित भव्य नगर थे। इन नगरों में पहियेदार सवारी गाड़ी चलने वाली चौड़ी सड़के थी। प्रत्येक गली और सड़क पर सार्वजनिक उपयोग के कुएं थे। मूलनिवासियों के अधिकांश घरों में कुएं और स्नानागार (Bath-

room) होते थे। पानी निकालने के लिए नालियां और मोरियां लगाई गई थीं। सभ्यताओं के इतिहास में निकास-नालियों का इतना सुंदर प्रबंध और कहीं नहीं मिलता जितना कि सिंधु सभ्यता में, यहां तक कि सिंधु सभ्यता के बाद के भारत में भी नहीं। मकान पक्की ईंटों के बने होते थे, जो लाल सुर्ख रंग के थे। सबसे छोटे घरों में दो कमरे होते थे। बड़े-बड़े घर तो महल जैसे बने होते थे। खुदाई में बड़े आकार (180×180 फीट) के 'स्नानपूल'[48] भी पाए गए हैं, जिनके चारों तरफ बरामदा, कमरे और गैलरी होती थी। आज के स्वीमिंग पूल सिन्धु घाटी सभ्यता के स्नान-पूल का ही विकसित रूप है। मकानों के बीच में ईंटों के आंगन होते थे। घरों में पखाना घर भी (छत पर) होता था। शहर में सड़कों पर रात को दीपक जला करते थे। गेहूं जौ, धान, तिल, मटर की खेती होती थी। लोग मांसाहार भी करते थे। वे सूती-ऊनी कपड़े पहनते थे। वे पहनावे के रूप में धोती और कमर के ऊपर इस तरह से अंगवस्त्र रखते थे जो बाएं कंधे के ऊपर से गुजरते हुए दाहिनी बांह के नीचे से गुजरता था। दाहिना कंधा खुला रहता था। स्त्रियों की पोशाक पुरुषों की तरह ही थी। स्त्रियां जेवर भी पहनती थीं। समाज मातृ-सत्तात्मक था, जो मातृ देवी के प्राप्त मूर्ति से पता चलता है। घर के सामान में तांबे एवं पीतल की सुईयां, कुल्हाड़ा, आरा हसिया, चाकू, मछली की वंशी का उपयोग करते थे। उनके पास फरसे, भाले, कटार, तलवार और धनुषबाण भी थे। वे कवच का भी इस्तेमाल करते थे तथा गदा पत्थर की होती थी। उनका व्यापारिक संबंध मेसोपोटामियां और मिश्र से था। समाज में शासक वर्ग, पुरोहित, योद्धा, कारीगर, शिल्पी और व्यापारी थे। सबों में परस्पर सौहार्द था। अलगाव नाम की कोई चीज नहीं थी। समाज बिल्कुल जाति-पांति विहीन और धर्मनिरपेक्ष था।

ऐसी समृद्धि और ऐश्वर्य भरी स्थायी सभ्यता को विदेशी बर्बर आर्य ब्राह्मणों ने नष्ट कर दिया तथा मोहनजोदड़ो और हड़प्पा जैसे नगरों को संहार कर विजित भूमि को पशुचारी आर्यों ने आपस में बांटकर उसे चारागाह भूमि में परिणत कर दिया। आर्य पशुचारी घुमन्तु जीवन ही बरकरार रखना चाहते थे तथा वे नगरों और नागरिक जीवन से घृणा करते थे। "चूंकि वे घुमक्कड़ थे, इसलिए उन्हें घर-बार बना कर रहना पसंद नहीं था। पशु ही उनका धन था। वे अक्सर मंडपों (झोपड़ी) में रहते थे। मगर

उनकी संतान कालक्रम में घर बना कर रहने लगी। लेकिन यज्ञ के लिए मंडप ही चाहिए। यह प्रथा अब तक बनी हुई है।"[49] हड़प्पा नगर का उल्लेख ऋग्वेद में **'हरियुपिया'** के रूप में हुआ है (ऋग्वेद 6/27/5) । पर मोहनजोदड़ो का उल्लेख नहीं है। इससे पता चलता है कि हरप्पा नगर (अब पंजाब के मिन्टगुमरी जिला में) आर्यों का प्रिय स्थान रहा होगा अथवा वहां आर्यों का कोई महत्त्वपूर्ण जनसमुदाय बस गया होगा जिसके कारण उन्होंने इसका उल्लेख अपने ऐतिहासिक ग्रंथ ऋग्वेद में किया। दर्शन-दिग्दर्शन में महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने लिखा है कि आर्यों के भारत आगमन के बाद पंजाब दूसरा बसेरा था। पहला अफगानिस्तान और तीसरा बसेरा गंगा-यमुना का उर्वर मैदानी भाग था। आर्यों का जो जन जहां बसा वहां का नाम उस जन पर पड़ गया। लगता है मोहनजोदड़ो में कोई महत्त्वहीन आर्य बसा होगा, जिस कारण इसका ऋग्वेद में कोई जिक्र नहीं है।

आर्यों को घुमन्तु जीवन पसंद था, इसलिए उसने शांति प्रिय मृदुल मूलनिवासियों को छलपूर्वक एक-एक कर कत्ल कर दिया। महापंडित राहुल सांकृत्यायन के अनुसार हड़प्पा की खुदाई में निर्मम हत्या काण्ड का प्रमाण मिला है। आर्यों के अधिपति इन्द्र द्वारा वृत्र, नमुची, शंबर, चुमुरि आदि प्रसिद्ध अनार्य राजाओं की कपटपूर्ण हत्या, काला असुर कृष्ण को जिंदे जला कर मारना, उसकी गर्भवती पत्नियों को मारना आदि निर्मम हत्याओं का प्रमाण तो ऋग्वेद में ही मौजूद है।

आर्यों ने यहां के मूलनिवासियों को घृणावश असुर (सुरा नहीं पीने वाले), रक्षस (अपने परिवार-समाज की रक्षा करने वाले), यतुधान[50] (भारतीय), पणि (व्यापारी), मुनि (मौन व्रत रखने वाले), मृद्धवाक्[51] (घटिया भाषा बोलने वाला), नृपशु[52] (दो पैर वाला पशु), किनास (कृषक), मनुष्य (मनु के वंशज), विश, (आम जनता अथवा नगरवासी), दस्यु (लुटेरे), शूद्र (बेकार, घृणित और बहिष्कृत लोग) आदि नामों से पुकारा जिसका उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। इतना ही नहीं, इन मूलनिवासी राजाओं की छवि को उन्हीं के वंशजों की नज़र में घृणाजनक बनाया। आर्यों ने भारत में स्थापित हो कर स्वयं को "देवताओं, पुरोहितों, ऋषियों, विप्रों, ब्राह्मणों"[53] और सुर के रूप में पहचान बनाया। वास्तव में आर्य ब्राह्मण को ही देव, देवता, विप्र और सुर कहा जाता है। वाल्मीकि रामायण में लिखा है कि चूंकि आर्य "सुरा" पिते

थे (ऋग्वेद नवम मंडल) इसलिए इन्हें 'सुर' कहा जाता था। मूलनिवासी 'सुरा' अर्थात् शराब नहीं पीते थे, इसीलिए इन्हें 'असुर' कहा जाता है। असुर इंसान थे, वे शक्तिमान, उर्जावान और भारत के मूलनिवासी थे। उसी प्रकार राक्षस भी। वास्तविक शब्द 'राक्षस' नहीं 'रक्षस' है जिसका अर्थ है अपने पविार, समाज और देश की रक्षा करने वाला। मूलनिवासी अनार्य नायकों ने आर्यों से अपने समाज की रक्षा में अन्तिम सांस तक लड़ा और अन्त में विदेशी आर्य ब्राह्मणों के षड्यंत्र के शिकार हुए। अतः मूल शब्द 'रक्षस' को ब्राह्मणों ने ही 'राक्षस' के रूप में बिगाड़ा। दानव ईरानी शब्द 'दानउना' से बना है जिसका उपयोग आर्य ब्राह्मणों ने मूलनिवासियों के लिए ईर्ष्यावश किया है। अतः सिन्धुघाटी सभ्यता का नाम मुख्यतः **'हरप्पा असुर सभ्यता'**[54] होना चाहिए। दुनिया की सभी सभ्यताएं नदी के किनारे ही विकसित हुई थीं, परन्तु किसी का नामकरण नदी घाटी के नाम पर नहीं हुआ। सिर्फ भारत में ही विकसित सभ्यता का नाम सिंधु नदी के नाम पर विकसित हुआ। इसमें आर्य ब्राह्मणों की गहरी साजिश है; हडप्पा असुर सभ्यता की पहचान मिटाने और उसके वाशिदों के वंशजों को हमेशा के लिए गुलाम बनाए रखने के लिए। आज मूलनिवासी बहुजन समाज को आर्य ब्राह्मणों की इस धूर्तता को समझने की आवश्यकता है तथा आपस में एकता बनाने की जरूरत है।

उच्चवर्णीय जातियां विदेशी

यह इतिहास और पुरातत्व का सर्वमान्य तथ्य है कि भारत की उच्चवर्णीय जातियां (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) विदेशी हैं, अर्थात भारत के मूलनिवासी नहीं हैं। भारत के मूलनिवासी केवल पिछड़ा वर्ग, एस.सी. वर्ग, एस.टी. वर्ग और धर्मपरिवर्तित समुदाय के वर्ग ही हैं। ऐतिहासिक, पुरातात्विक एवं वैदिक ग्रंथों के आधार पर यह प्रमाणित किया जा चुका है कि आर्य ब्राह्मण सहित क्षत्रिय और वैश्य वर्ग हमारे देश में ईसा पूर्व 1700-1500 के बीच रूस के वोल्गा के तटीय इलाके से ईरान होते हुए हिन्दू कुश पर्वत के दर्रों से होकर सर्वप्रथम पंजाब (हरप्पा नगर) आए और वहां से सम्पूर्ण उतरी भारत में फैल गए। भाषाई साक्ष्य के आधार पर सुविख्यात इतिहासकार डॉ. नवल वियोगी[55] लिखते हैं कि "आर्यों का मूल वासस्थान रूस के वोल्गा नदी का पश्चिमी प्रदेश तथा कैस्पियन सागर के चारों ओर का भूभाग था। इसके बाद वे दक्षिणी रूस के प्रदेशों में जा बसे। वहीं से आर्य स्वात वैली[56] (गंधार), ईरान होते हुए भारत की ओर बढ़े।" महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन के अनुसार ईसा पूर्व 3000 भारत और ईरान की श्वेत जातियों का एक कबीला था जिसका सम्मिलित नाम **आर्य**[57] था। इनकी मुख्य जीविका पशुपालन था। आर्य का मतलब **'घुमक्कड़'** (यायावर) होता है, जो बाद में श्रेष्ठता के प्रतीक के रूप में जाने जाना लगा।

यह सर्वमान्य तथ्य है कि आर्य शीतप्रधान भूभाग के निवासी थे। इसी कारण उनका वर्ण गोरा, नाक ऊंची, आंखें और बाल भूरे तथा कद लम्बा था। आर्य अधिक गर्मी के आदी नहीं थे। इसका वर्णन ऋग्वेद (ऋ.—1/42/8 में कहा गया है कि हमारे मार्ग में अधिक गर्मी न हो) में भी मिलता है। वे निश्चय ही शीतप्रधान क्षेत्र के निवासी थे। पतंजलि[58] (महाभाष्य सूत्र 2/2/6) के अनुसार ब्राह्मणों का रंग साफ, पीले भूरे बाल होते हैं। "आर्य अर्ध-सभ्य, बर्बर गड़ेरिये थे। वे आर्य बोलियां बोलने वाले घुमक्कड़ चरवाहे थे। वे कुत्तों को पालते थे, बैलों द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी में यूरोप के मैदान में घूमते थे। वे वृक्ष के मोटे तनों से छोटी नाव बनाते थे।"[59]

भारत में आने के बाद विदेशी आर्य ब्राह्मण सर्व प्रथम हिमालय के तराई क्षेत्रों के किरात और निषाद तथा सिन्धुघाटी सभ्यता के (मोहनजोदड़ों और हरप्पा) जनों के सम्पर्क और संघर्ष[60] में आए। ऋग्वेद के मंत्रों से ही ज्ञात होता है कि विदेशी आर्य ब्राह्मणों ने भारत आक्रमण के बाद यहां के शासकों से मेल-जोल बढ़ाया, उन्हें विश्वास में लिया तथा उनका इस्तेमाल उन्हीं के पड़ोसी अनार्य राजाओं के विरुद्ध किया। आर्य अधिपति इंद्र ने प्रतापी अनार्य राजा शंबर से दिवोदास[61] को लड़वाया तथा राजा सुदास[62] की सहायता से सभी प्रमुख दस राजाओं का विनाश करवाया जिन्होंने विदेशी आक्रमण के प्रतिरोध हेतु एक संयुक्त मोर्चे का निर्माण किया था। इस प्रकार आर्यों ने अनार्य राजाओं को आपस[63] में लड़वा कर नष्ट करने की छलनीति अपनाई। आर्यों ने कुछ अनार्य राजाओं (चुमुरि और धुनि) को गाढ़ी नींद[64] में सुला कर मारा, तो कुछ को जिंदे भस्म[65] कर दिया। सारे कत्ल आर्य शराब के नशे[66] में करते थे। इस प्रकार उन्होंने यहां के हजारों साल के कठिन परिश्रम से स्थापित की गई विकसित सभ्यता के सुंदर शहरों को ऐसे उजाड़कर नष्ट-भ्रष्ट कर दिया जैसे अबोध बच्चा अज्ञान से सुन्दर खिलौने को तोड़ फेंकता है।

भारत के मूल आदि-निवासी काले रंग के थे जिनका चेहरा गोल और आंखें बड़ी थीं। इससे संबंधित ऋग्वेदिक ऋचाएं निम्नवत हैं–

ऋग्वेद 5/29/10–हे इंद्र! तूने **छोटी नाक वाले दस्युओं** को मारा तथा संग्राम में मृध्रवाक (न समझ में आने वाली भाषा) बोलने वालों को मारा।

ऋग्वेद 5/29/10–हे स्तोता! **काले रंग** के असुरों को मार कर विचरण करने वाले जल के समान द्रव्य तेजयुक्त निष्पन्न सोम की भली प्रकार स्तुति करो।

ऋग्वेद 1/138/8–तूने **काली त्वचा वाले** शत्रुओं को विनष्ट किया।

ऋग्वेद 4/16/13–हे इंद्र! तूने 5000 **काले रंग के असुरों** को मारा तथा जैसे लोग जीर्ण-शीर्ण कपड़ों को फाड़ डालते हैं, उसी तरह तूने शत्रु के नगरों को तोड़ डाला।

उपर्युक्त मंत्रों में छोटी नाक वाले दस्यु, काले रंग के असुर, काली त्वचा वाले शत्रु, भारतीय मूलनिवासियों को ही कहा गया है। आर्य मूल भारतीयों

के काले रंग के कारण भी उनसे घृणा करते थे। ईरानी लोग भारतीयों को काले रंग वाले कहते हैं, जैसा की हिन्दू[67] शब्द का अर्थ पर्सियन में काला होता है। राहुल सांकृत्यायन ने बोल्गा से गंगा में लिखा है कि आर्य लोगों ने कुनार, पंजकोरा जैसी नदियों को कितनी मुश्किल से पार किया। इसका भी प्रमाण कहीं अन्यत्र नहीं, ऋग्वेद में ही मौजूद है—

ऋग्वेद 1/121/15—"तुम नाव द्वारा पार होने योग्य **नब्बे नदियों** को पार कर **यज्ञ विहीन असुरों** के पास पहुंचो एवं उन्हें कर्तव्य में लगाओ।"

उल्लेखनीय है कि यज्ञ आर्यों की संस्कृति के ही परिचायक हैं। इनके आने के पूर्व यज्ञ और पशुबलि भारत में प्रचलित नहीं थी। इन दोनों का प्रचलन ईरान में था। जेन्द अवेस्ता (ईरानी ग्रंथ) से सिद्ध होता है कि इसमें 100 घोड़े, 1000 बैल, 10,000 भेड़ अथवा बकरों की बलि की चर्चा की गई है। ऋग्वेद से भी यह बात स्पष्ट होती है कि यज्ञों में पशुओं की बलि होती थी जो आर्यों की देन है। मंत्र में स्पष्ट कहा गया है कि "यज्ञ नहीं करने वाले असुर समुदाय में यज्ञ की परंपरा शुरू करो।" जो लोग यज्ञ संस्कृति से बिल्कुल अनजान थे, वे भारत के मूलनिवासी असुर समुदाय के ही लोग थे।

वोल्गा से भारत का सफर तय करने के दौरान आर्यों को कई छोटी-बड़ी नदियों को पार करना पड़ा, जिसका उल्लेख उपर्युक्त मंत्र में किया गया है। इन नब्बे नदियों में से कुछ के नाम ऋग्वेद में हैं। जैसे—**अंशुमति**, अंजसी, **अनितमा, अपित, अश्मन्वती, उद्री, ऊर्णावती, लिशिकुलिशी**, क्षिप्रा, **देष्ट्री, यव्यावती, रसा, विबाली, वीरपत्नी, शिफा, श्वेत्यावरी**, सरयु, **सीलमावती, सुवास्तु, सुसर्तु, हरियुपिया, परुष्णी, सिन्धु** आदि (ऋग्वेदिक आर्य)। इसके अलावा और कई नदियां हैं जिसे आर्यों को भारत आक्रमण के दौरान लांघना पड़ा जैसे, वोल्गा, कुनार, पंजकोरा, धुनि, आदि।

आर्यों के विदेशी होने तथा भारत पर आक्रमण का परम प्रमाण **'ऋग्वेद'** है। इसमें मौजूद ऋचाएं यह सिद्ध करती हैं कि आर्यों ने भारत के मूल वाशिंदों पर आक्रमण कर उन्हें छलपूर्वक पराजित किया। यह निम्न प्रकार उल्लेखित हैं—

ऋग्वेद 1/42/1—हे पूषा! हमें मार्ग के पार लगा दो। हे जलवर्षक मेघ के पुत्र! हमारे आगे चलो।

ऋग्वेद 2/15/5—इंद्र ने धुनि नामक विशाल नदी को इतना सुखा दिया कि सरलता से पार किया जा सके। इस प्रकार उन्होंने नदी पार करने में असमर्थ ऋषियों को सरलता से पार उतार दिया। वे ऋषि धन के उद्देश्य से नदी के पार गए। इंद्र ने यह सब काम सोमरस के नशे में किया था।

ऋग्वेद 1/42/3—तुम हमारा रास्ता रोकने वाले चोर एवं कुटिल व्यक्ति को हमारे मार्ग से दूर भगा दो।

ऋग्वेद 1/42/7—हमारा मार्ग सुगम और शोभन बनाओ। हे पुषा! इस मार्ग में हमारी रक्षा का उत्तरदायित्व तुम्हारा है।

ऋग्वेद 1/42/8 —तुम हमें घास वाले सुंदर देश में ले जाओ। हमें मार्ग में कोई नया कष्ट न हो। हे पुषा! इस मार्ग में हमारी रक्षा के विषय में तुम्हीं जानते हो।

उपर्युक्त मंत्रों से स्पष्ट पता चलता है कि आर्य कहीं बाहर से आक्रमणकारी के रूप में भारत आए थे। इस दौरान इनके मार्ग में कई बाधाएं आई थीं, जिससे उबरने के लिए उन्होंने अपने अधिपति इंद्र से गुहार लगाई थी। भारत आक्रमण के दौरान मार्ग में आने वाली कठिनाइयों पर विजय पाने की अभिलाषा प्रयुक्त मंत्र में स्पष्ट रूप से व्यक्त की गई है। मंत्र में **"हरे घास वाला देश"** भारत को ही लक्ष्य कर के कहा गया है, क्योंकि वोल्गा के तटिय क्षेत्र और ईरान आदि क्षेत्रों से जीविका के साधन समाप्त हो जाने के बाद ही आर्य-ब्राह्मणों ने भारत की ओर कूच किया। उन्हें हरे-भरे घास वाले स्थान की आवश्यकता थी, ताकि चारागाह और जीविका की कोई कमी न हो। आर्यों के लिए ऐसा स्थान भारत जैसे सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम् देश ही हो सकता था।

ऋग्वेद तथा अन्य ग्रंथों में कई और साक्ष्य हैं, जो प्रमाणित करते हैं कि आर्य ब्राह्मण विदेशी हैं, जैसे—

सोम—आर्यों के इस प्रारंभिक देवता ईरानी देव होमा (haoma) से मिलता जुलता है, जिसकी चर्चा जेन्द अवेस्ता में है। जेन्द अवेस्ता का **'होमा'** ही ऋग्वेद का **'सोम'** है। ऋग्वेद का सम्पूर्ण नवम् मंडल **'सोमरस'** एक (नशीला पेय पदार्थ) के ही वर्णन से भरा पड़ा है।

अग्नि—अग्नि आर्यों के प्रमुख देवता थे। ईरान में आग जला कर अग्निवेदी की पूजा करने की प्रथा थी। रूस के पास काले सागर के नजदीक रहने वाले लोग भी अग्निपूजक थे। वहां का **'उग्निस'** ऋग्वेद के **'अग्नि'** से मेल खाता है। हड़प्पा संस्कृति में अग्निवेदी नहीं मिलती।

वरुण—ये आर्यों के प्रमुख देवता थे, जो ईरानियों के 'औरानस' (ouranus) से मिलता-जुलता है।

इंद्रपूजा और सोमपान—इंद्रपूजा और सोमपान की विधि आदि की मूल बाबिलोनियन[68] संस्कृति में है। बाबिलोनिया में वहां के बहुत से सम्राटों की उनके जीवन काल में ही देवताओं में गणना की गई थी। एक बड़े उत्सव का आयोजन कर उन सम्राटों को सोमपान (नशीली भांग जैसे पेय) करने के लिए आमंत्रित किया जाता था। ऐसे कई खुदे हुए चित्र बाबिलोनिया में मिले हैं। ठीक इसी तरह ऋग्वेद में भी इंद्र को श्रेष्ठ अधिपति और देवता के रूप में स्तुति करते हुए सोमपान करने हेतु आमंत्रित किया गया है। ऋग्वेद का सम्पूर्ण नवम् मंडल तो सोमपान और सोमरस के वर्णन के लिए ही समर्पित है।

नरसिंह अवतार—नरसिंह अवतार बेबिलोन के नृसिंहदेव[69] हैं, जिसने अनार्य असुर राजा हिरण्यकश्यप की धोखे से हत्या कर दी थी। इनके वंशज आज भी ईरान में रहते हैं, जो 'नृग्रिटो' कहलाते हैं। ईरानी इतिहासकार के अनुसार नृसिंह को 'नरमसिन' भी बताते हैं। वहां इनकी अर्धसिंहमूर्ति भी है। बाद में यही नरमसिन भगवान के दस अवतारों में से एक अवतार 'नरसिंह' के रूप में प्रचारित किए गए।

वैदिक संस्कृति—धर्मानन्द कोसाम्बी[70] के अनुसार वैदिक संस्कृति की उत्पत्ति बाबिलोनियन संस्कृति से हुई है। सुमेरियन लोगों की आर्यों से बहुत समानता है। विद्वानों की राय में सुमेरियन मध्य एशिया से आए थे। आर्यों का भी मूलवास स्थान मध्य एशिया ही है, अतः दोनों में साम्य है। इसी आधार पर वैदिक संस्कृति की उत्पत्ति बाबिलोनियन संस्कृति से हुई मानी जाती है। ईसापूर्व 4000-5000 वर्ष वर्तमान मेसोपोटामिया में आकर बसे लोग सुमेरियन कहे जाते हैं। सेमेटिक लोग जो प्राचीन अरबों से निकट थे, और सुमेरियन लोगों को सम्मिलित रूप से बाबिलोनिया कहा जाता है। परन्तु कोसाम्बी जी का उपर्युक्त मत[71] अब मान्य नहीं है।

सरस्वती—ऋग्वेद में बहने वाली नदी के रूप में प्रयुक्त हुआ है। वास्तव में सरस्वती ईरानी नदी 'हरहवैती'[72] को कहा गया है। अब हिन्दूवादी संगठन घाघरा को ही सरस्वती साबित करने के हठ पर अड़े हैं। (सर=पानी+स्वती—बहता हुआ पानी)। ऋग्वेद में सरस्वती धन की देवी के रूप में प्रयुक्त हुई है। शायद इसके पीछे यह धारणा रही हो कि नदी से सिंचाई होती है, सिचाई से खेती, और खेती से धन। इस प्रकार सरस्वती को धन की देवी के रूप में आर्यों द्वारा प्रार्थना की गई है।

दानव—विदेशी आर्य ब्राह्मणों ने ईर्ष्यावश मूलनिवासियों को दानव कहा। यह शब्द ईरान के 'दानउना' (daniuna) से निकला है। भारत में दानव जाति का कोई पूर्व से इतिहास नहीं है।

दाहकर्म—यह प्रथा हिन्द-यूरोपियाई समाज में तथा पश्चिम एशिया, मध्य एशिया और यूरोप में प्रचलित थी। इसे वैदिक आर्य ब्राह्मण अपने साथ भारत में लाए। सिन्धुघाटी सभ्यता में मुर्दों को गाड़ा जाता था।

होता—ऋग्वेद में यज्ञकर्ता को 'होता' कहा गया है। यज्ञकर्ता ब्राह्मण ही बन सकता था। प्राचीन ईरान में भी 'होता' पाए जाते थे। उड़ीसा में कुछ ब्राह्मणों का सरनेम 'होता' रखा जाता है। यह शब्द भी ईरान से ही आया है।

ब्राह्मण—आर्यों ने भारत की सीमा (पंजाब) में प्रवेश करने के पूर्व अफगानिस्तान और बलूचिस्तान आदि इलाकों में काफी समय बिताया था। अतः यह संभव है कि 'ब्राह्मण' शब्द की उत्पत्ति बलूचिस्तान की ब्राहुई भाषा से हुई हो। **'ब्रह्म'**[73] शब्द ऋग्वेद में प्रार्थना मंत्र के रूप में आया है तथा **ब्रह्मा** प्रार्थना करने वाले व्यक्ति के रूप में। बाद में यज्ञ के अध्यक्ष (यजमान) को ब्रह्मा कहने की प्रथा आरम्भ हुई। इस प्रकार ब्रह्मा से 'ब्राह्मण' शब्द की उत्पत्ति हुई होगी। वर्तमान में दुनिया में 'ब्राह्मण' शब्द भारत के अलावा और कहीं नहीं मिलता। एक मत के अनुसार भारत के ब्राह्मण दरअसल असीरिया से भगाई गई ज्यु लोगों की जनजातियां ही हैं। यह बात ब्राह्मणों के गोत्रों से भी उजागर होती है; जैसे गौड ब्राह्मण ज्यु लोगों की गाड (Gad) जनजाति है, शर्मा ब्राह्मण ज्यु लोगों की सायमन (Simeon) जनजाति है, मिश्रा ब्राह्मण ज्यु लोगों के मिशना (Mishna) से बना है और पराशर ब्राह्मण ज्यु लोगों की अशर (Asher) से बना है।

ब्रह्मा—यह शब्द वस्तुतः यहुदियों के कुलदेवता 'अब्राहम' से बना है। जिस तरह 'सारा' अब्राहम की बीबी भी थी, और बहन भी, उसी प्रकार "सरस्वती" ब्रह्मा की पत्नी भी थी, और बेटी भी। अतः भारत के आर्य ब्राह्मण मूलतः अब्राहम वंशी हैं, दूसरे शब्दों में अब्राहम ब्राह्मणों के पूर्वपुरुष[74] हैं। ब्राह्मण साहित्य में 'पृथ्वी' को 'उर्वी' भी कहा जाता है, जो आदिपुरुष अब्राहम की जन्मभूमि 'ऊर'[75] है। भारत आगमन के बाद ब्राह्मण अपने को अब्राह्मम से ब्रह्म[76] के रूप में हमेशा जोड़कर रखा। इसका आशय है कि अब्राहम ही ऋग्वेद में 'ब्रंह्मा' के रूप में वर्णित है जो बाद में आर्य ब्राह्मणों द्वारा संसार के कर्त्ता के रूप में प्रचारित किया गया।

पुरोहित प्रथा—यह प्रथा ईरानी समाज की देन है। वहां पुरोहित को अथ्रवन कहा जाता है। पुरोहित का मतलब होता है, वह जिसको आगे रखा जाए। बाद में यह पैतृक पेशा के रूप में प्रचलित हो गया। भारत में ब्राह्मण ही पुरोहित होता है.।

तीन वर्ण—ईरान में मिलते हैं। वहां के समाज को तीन वर्ण में विभाजित किया गया था। भारत में आर्य ब्राह्मण ने इसे ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के रूप में प्रचलित किया। तीन वर्णों के वर्णन का उल्लेख ऋग्वेद के आठवें मंडल तक मिलता है। बहुत काल बाद दशवें मंडल में चौथा वर्ण 'शूद्र वर्ण' जोड़ा गया।

पुरुष सत्तात्मक समाज—यह हिन्दयूरोपियन समाज की विशेषता है। सिन्धुघाटी सभ्यता में मातृ सतात्मक समाज था। यूनानी ग्रंथों और अवेस्ता में पुरुष प्रधानता की चर्चा है। यूरेशिया में भी पुरुष प्रधान समाज था।

अश्वमेध—ऋग्वेद में इसकी खूब चर्चा है। यह अनुष्ठान[77] हिन्द-यूरोपियन समाज में अक्टूबर माह में होता था, जिसमें घोड़े की बलि दी जाती थी। आर्यों ने इस प्रथा को भारत आकर भी जारी रखा। वैदिक साहित्य के फ्रांसीसी विद्वान लुई रनु[78] के अनुसार ईसा पूर्व 1500 में (प्राक्-वैदिक काल में) भारत में घोड़ा नहीं पाया जाता था। सिन्धुघाटी सभ्यता की खुदाई में अश्व अथवा अश्व बलि का कोई प्रमाण नहीं मिला है। विश्व के जाने माने भाषाशास्त्री एवं वैदिक संस्कृति के मर्मज्ञ माइकेल विट्ज़ेल[79] (संयुक्त राज्य अमेरिका) के अनुसार सिंधु सभ्यता वाले अवशेषों में घोड़े का अस्थिपंजर या

उसका एक भी टुकड़ा आज तक नहीं मिला है, जबकी ऋग्वेद में पालतु घोड़ों का, घोड़ों से हांके जाने वाले रथों का, रथों की दौड़ का तथा घुड़सवारी का उल्लेख मिलता है। सबसे अधिक घोड़ा रूस के वोल्गा नदी क्षेत्र में मिलने का प्रमाण है, जो आर्यों का मूल वासस्थान था।

पशुबलि—ईरान में गाय, गोरू की बलि की प्रथा था, जिसका वर्णन ज़ेन्द अवेस्ता में आया है। इसी प्रथा को विदेशी आर्य ब्राह्मण भारत में लाए। भाषा वैज्ञानिक तथा पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर विद्वानों का मत है कि वैदिक काल की पशुबलि या पशुवध के रिवाज का मूल पूर्वी युरोप की पूर्ववर्ती स्टेपी-संस्कृति में देखा जा सकता है। प्राचीन ईरान के ग्रंथ ज़ेन्द अवेस्ता[80] में 100 घोड़े, 10,000 भेंड़-बकरियों और 1000 ऊंटों के अतिरिक्त 100 बैलों तथा 1000 अन्य गो-वंशियों की बलि का उल्लेख है। ज़ेन्द अवेस्ता की तरह वैदिक पाठों में भी घोड़ों, भेड़ों, बकरियों, बैलों, भैंसों, बहिला गायों और सूअरों की बलि के उल्लेख बार-बार हुए हैं (ऋग्वेद—10—28—3, 10—27—2, 6—17—11, 6—29—7,8, 10—91—4, 10—16—7, 10—85—13)। वेदों में प्रयुक्त 'यज्ञ' शब्द अवेस्ता के 'यस्न'[81] शब्द के रूप में आया है।

रथ—रथ का उपयोग हिन्द-यूरोपियन समुदाय के द्वारा किया जाता था। द. रूस में ईसा पूर्व 3000 रथ होने का प्रमाण मिला है। रथ के कोई चिह्न सिन्धुघाटी सभ्यता की खुदाई में नहीं मिले हैं।

भारतीय दर्शन के विश्वविख्यात विद्वान डॉ. एस. राधाकृष्णन[82] के अनुसार भारतीय ऋग्वेद और ईरानी ज़िन्द अवेस्ता में काफी समानता है। ज़िन्द अवेस्ता और सिंधुघाटी सभ्यता के खुदाई (1921) में मिले अवशेषों के गहन परीक्षण और विश्लेषण करने पर परत-दर-परत यह जानकारी प्राप्त होती है कि आर्य ब्राह्मण युरोएशियाई (विदेशी) थे और वे भारत में आक्रमणकारी के रूप में आए थे।

आर्य ब्राह्मणों के विदेशी होने संबंधी पाश्चात्य विद्वानों का मत[83]

पाश्चात्य विद्वानों ने आर्यों और आदिम भारतीय जातियों के रंग, रूप, नाक, बाल आचार, व्यवहार वैदिक ऋचाओं और भाषा आदि पर गंभीर विचार करके दोनों जातियों के बीच एक ऐसी लकीर खींच दी है जिससे कि दोनों जातियां स्पष्ट अलग-अलग देखी जा सकती हैं। प्रसिद्ध जर्मन विद्वान तथा वैदिक शस्त्रों के **महापंडित प्रो. मैक्समूलर** आर्यों के विदेशी होने संबंधी सिद्धांत के जनक[84] माने जाते हैं। पाश्चात्य विद्वानों की राय में आर्यों के विदेशी मूल के सिद्धांत को सारांशतः निम्नानुसार सूचीबद्ध किया जा सकता है।

1. आर्य लोग मध्य एशिया या उत्तर ध्रुव के किसी निकटवर्ती स्थान के मूलवासी हैं।
2. ये इन्हीं स्थानों से भारतवर्ष में, धीरे-धीरे कई टोलियों में घोड़ों पर चढ़ कर आए और यहां बस गए।
3. आर्य गोरे रंग के और लम्बे मुख वाले थे। वे लोग सोमरस नाम के मादक पदार्थ पीते और मांस खाते थे।
4. आर्य अग्नि, इंद्र, वायु, सूर्य आदि देवताओं की पूजा करते थे। वे अपने **देवताओं के** नाम पर खाने-पीने के पदार्थ को अग्नि में हवन **किया करते** थे। वे अपने अनार्य शत्रुओं के विनाश के लिए सदैव अपने देवताओं से प्रार्थना किया करते थे।
5. आरम्भ में यहां के मूल निवासियों से बहुत काल तक उनका संग्राम होता रहा।
6. इस संग्राम में जो लोग सहज में उनके वश में हो गए, उन्हें आर्यों ने अपना गुलाम बना लिया। बाद में यही विजित लोग शूद्र वर्ण में रखे गए।

7. जो लोग उनके वश में नहीं आए और हजारों वर्षों तक अपनी स्वाधीनता की रक्षा के लिए उनसे लड़ते-भिड़ते रहे, उनको उन्होंने दस्यु, दास, यातुधान, राक्षस, अरावण, दैत्य, दानव और असुर आदि घृणापरक नामों से स्मरण किया।
8. भारत के मूलनिवासी काले-सांवले रंग के थे। चेहरे गोल और आंखें कुछ बड़ी थीं। ये लोग आर्यों के देवताओं को नहीं मानते थे और न ही अग्नि में हवन करते थे। ये लोग गाएं पालते थे।
9. मूलनिवासी धनी और बुद्धिमान थे; इनके सैकड़ों लोहे और पत्थरों के नगर होते थे परन्तु आर्यों की तरह इनमें संगठन शक्ति और विजय की लिप्सा नहीं थी।
10. ऋग्वेद आर्यों के देवताओं की महिमा, आर्यों की प्रशंसा, इन दस्युओं की निंदा और उनके नाश होने की प्रार्थनाओं से भरा पड़ा है।

आर्य ब्राह्मणों के विदेशी होने संबंधी भारतीय विद्वानों का मत

"आर्य ब्राह्मण विदेशी हैं" इस तथ्य को न केवल विदेशी विद्वान मानते हैं बल्कि इतिहास वेद और संस्कृत के कई हिन्दूनिष्ठ भारतीय पंडित भी इसे डंके की चोट पर स्वीकारते हैं तथा अपने कथन के पक्ष में अलग-अलग प्रमाण भी प्रस्तुत करते हैं; भले ही उनके दावे में आर्यों के मूलवास स्थान संबंधी मतैक्यता न हो। कुछ उदाहरणस्वरूप यहां दिया जा रहा है।

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक का मत[85]—तिलक भारत के सुविख्यात राजनीतिज्ञ, स्वतंत्रता सेनानी, इतिहास तथा वैदिक शास्त्र के प्रकांड विद्वान थे। इन्होंने अपनी पुस्तक 'आर्कटिक होम ऑफ द आर्यन' में लिखा है कि आर्य लोग सबसे पहले उत्तरीय ध्रुव के निवासी थे। हमारे शास्त्रों में लिखा है कि देवताओं के दिन-रात छह-छह महीने के होते हैं। यह बात उत्तरीय ध्रुव के विषय में आज भी घटित है। आइसलैंड नामक टापू में भी यही दशा है। जब तक सूर्य उत्तरायण रहते हैं, तब तक वहां बराबर दिन रहता है। इसी प्रकार दक्षिणायण सूर्य में छह मास (आश्विन से फाल्गुन) रात बनी रहती है। इस प्रकार ध्रुव प्रदेशों में वर्ष में एक ही दिन-रात होती है। हिन्दू शास्त्र में देवताओं का यही दिन मानते हैं। उनके अग्नि-होत्री और हवन-प्रिय (यज्ञ) होने का यही कारण है कि वे छः माह अनवरत रात्री का सामना करते थे। दीप-दान प्रथा भी इसी से प्रचलित हुई जान पड़ती है। दीपक का उपयोग रात में ही होता है। इससे यही सिद्ध होता है कि आदिम आर्य लोग उत्तरीय ध्रुव में रहते थे। इसके लिए तिलक ने ऋग्वेद के प्रथम मंडल के उस मंत्र का सहारा लिया है जिसमें लिखा है कि—**"हमारे वैदिक रात्रि और उपस-काल मीठे हैं। भारत, जहां हम जाते हैं, हमारे लिए योग्य हो; जो स्वर्ग हम छोड़ रहे हैं वह भी हमारे योग्य है।"** भविष्य पुराण बतलाता है कि आर्य उत्तर कुरू (तिब्बत) में रहते थे और वहां से मध्य भूमि (मध्य एशिया) में आए।

स्वामी दयानंद सरस्वती का मत—इन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में इस मत की स्थापना की है कि आर्यों का मूलनिवास तिब्बत[86] में था और वहीं से ये भारत आ कर बस गए। परन्तु इस पर विद्वान सहमत नहीं हैं।

लाला लाजपत राय—इन्होंने अपनी पुस्तक "भारत वर्ष का इतिहास—प्रथम भाग" में लिखा है कि—"मेरी सम्मति में इस बात को ऐतिहासिक रूप से स्वीकार कर लेना चाहिए कि हिन्दू-आर्य भारत के मूलनिवासी नहीं हैं। आर्य जाति एक बहुत बड़ी जाति थी। योरोप की प्रायः सभी जातियां और एशिया में भारतीय तथा ईरानी ये सब इस वंश से बतलाई जाती हैं। हिन्दू आर्य भारत वर्ष में उत्तर पश्चिमी दर्रों से ऐतिहासिक काल के बहुत पहले प्रविष्ट हुए। कहा जाता है कि उस समय भारत में द्रविड़ जाति अपनी सभ्यता के उच्चतम शिखर पर थी और आर्य लोगों ने उनको दक्षिण की ओर ढकेल दिया।"

सर रमेशचंद्र दत्त—विश्व प्रसिद्ध इतिहासकार तथा वेदों के मर्मज्ञ दत्त के अनुसार "आर्यों ने पंजाब देश में आ कर निवास किया था, इस काल के इतिहास का पता ऋग्वेद के सूक्तों से पता चलता है। आर्यों ने अपने बाहुबल से इस देश को यहां के आदिनिवासियों से छीन लिया। इस प्रकार यह युग आदिनिवासियों और आर्यों के बीच युद्ध और विजय करने का था। आर्य-योद्धा अपनी जय का अभिमान हर्ष के साथ भजनों में करते थे और देवताओं से प्रार्थना करते थे कि वे उन्हें धन और नए अधिकार दें, और अनार्यों का नाश करें। प्रकृति में जो उज्ज्वल, आनंदमयी और तेजस्वी था, उसकी आर्य लोग प्रशंसा करते थे। प्रकृति की ऐसी विभूति की वे पूजा करते थे और उनको देवता मान कर उनका आवाह्न करते थे।"

आचार्य पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी—"प्राचीन आर्य जब भारतवर्ष में पहले-पहल पधारे, तब भारत वर्ष उजाड़ न था, आबाद था। जो लोग यहां रहते थे वे आर्यों की तरह सभ्य न थे। आर्यों ने धीरे-धीरे उन्हें आगे हटाया और देश पर कब्जा कर लिया। प्राचीन आर्यों के प्रतिपक्षी वर्तमान द्रविड़ और मुंडा जाति के पूर्वज थे। आदि आर्य एशिया के जिस प्रांत से भारत आए थे, उस प्रांत में भारत की बहुत सी चीजें न थीं। इससे भारत में आ कर आर्यों ने उन चीजों

के नाम द्रविड़ और मुंडा जाति के पूर्वजों से सीखे और उन्हें अपनी भाषा में मिला लिया (हिन्दी भाषा की उत्पत्ति, पृ. 69-71)।"

पंडित जवाहर लाल नेहरू[87]—"आर्य उत्तर-पश्चिम से क्रमवार भारत में आए थे। उनका भारत प्रवसन (migration) सिंधु-सभ्यता के एक हजार वर्ष के बाद हुआ था। उन्होंने भारत आकर यहां के मूलनिवासी द्रविड़ों को पराजित कर उन्हें गुलाम बनाया। द्रविड़ सिंधुघाटी सभ्यता के प्रतिनिधि थे। चतुर्वर्णीय व्यवस्था और जातिप्रथा आर्यों की देन है। बाद में जाति को और कठोर बनाया गया। जाति का निर्माण मूलतः आर्यों को अनार्यों से अलग रखने की नीयत से किया गया था। आर्यों ने न केवल समाज को चार वर्णों में बांटा, बल्कि मानवीय जीवन को भी चार भागों में बांट दिया।"

"पिता का पत्र पुत्री के नाम" नामक पुस्तक में नेहरू ने लिखा है कि "उत्तर से आर्यों ने इन द्रविड़ लोगों पर आक्रमण किया। अवश्य ही इन आर्य लोगों का मध्य एशिया में एक बड़ा समूह होगा, जिनको भोजन न मिलने के कारण अन्य देशों में बसना पड़ा। ये लोग फारस (ईरान), यूनान और पश्चिमी देशों को बड़ी संख्या में गए। भारत वर्ष में भी इनका एक बहुत बड़ा समूह कश्मीर के निकट पहाड़ों द्वारा आया। ये आर्य लोग बलिष्ठ और लड़ाकू जाति के थे। उन्होंने द्रविड़ लोगों को मार भगाया। इन आर्यों का एक झुंड के पश्चात् दूसरा झुंड भारत वर्ष उत्तर-पश्चिम से अवश्य आया है। संभवतः द्रविड़ लोगों ने आर्यों को पहले रोका है, परन्तु ज्यों-ज्यों वे अधिक होते गए, वे रोके न जा सके। अधिक काल तक ये आर्य लोग केवल अफगानिस्तान और पंजाब में रहे, फिर वे आगे बढ़े और उस प्रांत को आए, जिसे आजकल संयुक्त प्रांत कहते हैं और हम लोग जहां रहते हैं। वे मध्य भारत में विंध्य पर्वत माला तक फैल गए। विंध्याचल को पार करना एक कठिन कार्य था, क्योंकि वह सघन वन से परिपेष्ठित और आकीर्ण थी। इसीलिए आर्य लोग बहुत काल तक विंध्यपर्वत के उत्तर में ही रहे। उनमें से बहुतों ने प्रयत्न करके विंध्याचल पार भी कर लिया और दक्षिण चले गए, परन्तु समूह का समूह न जा सका, इसी कारण दक्षिण के लोग द्रविड़ ही हैं।"

राजाराम मोहन राय[88]—ने 1884 में, लंदन की अपनी यात्रा के दौरान कहा था—"मैं पूर्व से पश्चिम की ओर आया हूं और मुझे महसूस हो रहा है कि एक

बार फिर हम अपने पुराने आर्य-भाई एक हो जाएं विभाजन से पहले के इतिहास में हमारी विजय प्रदान करने वाली शक्ति और श्रेष्ठता का प्रेरणादायी प्रसंग है।

मोहनदास करमचन्द गांधी[89]—"अंग्रेज और आर्य भारतीय, एक ही डाली के दो फूल हैं। भारतीय आर्य ब्राह्मण लोग अपने आर्य-वंशी होने की बात से अत्यंत गौरवान्वित होते थे, उसका खूब बखान करते थे, एवं अपनी संस्कृति एवं धर्म को अन्य मूल भारतीय संस्कृतियों से श्रेष्ठ मानते थे, ताकि अंग्रेजों का विश्वास उन पर बढ़े और भारत उनके प्रशासन के लिए उपनिवेश बना रहे।" *(सन् 1894 में गांधी जी द्वारा मेम्बरर्स ऑफ लेजिस्ले ऑफ नेटाल, साउथ अफ्रीका को लिखे एक खुले पत्र का उद्धरण)*। "आर्य जाति के आक्रमणकारियों ने हिन्दुस्तान के मूलनिवासियों से अगर ज्यादा बुरा नहीं है तो कम से कम बिल्कुल वैसा ही सुलूक किया जैसा कि हमारे साथ अंग्रेज आक्रमणकारी आज हमारे साथ कर रहे हैं।"[90]

स्वामी विवेकानंद[91]—ने कई स्थानों पर उल्लेख किया है कि आर्य यूरोपीय क्षेत्र से आए थे।

रवीन्द्र नाथ टैगोर[92]—जब आर्य लोग यहां आ कर हिमालय के तट पर आ कर बसे थे, उस समय यहां द्रविड़ सभ्यता प्रचलित थी। आर्यों ने उसे बहुत कुछ अपने में मिला लिया। इस संबंध में टैगोर का कहना है—"कोई यह न समझे कि अनार्यों ने आर्यों के जीवन के मूल को थोड़ा भी नहीं बढ़ाया। प्राचीन अनार्य सभ्यता शून्य नहीं थे। उन लोगों की सभ्यता के संयोग ने आर्य सभ्यता को विविधतामय बनाया और उसमें विशेष आत्म-शक्ति को प्रविष्ट किया। अनार्य भावुकता, कल्पना-शक्ति, गायन और निर्माण कार्य में उच्च श्रेणी के थे। वे कला-कौशल में श्रेष्ठ थे। आर्यों का विशुद्ध अध्यात्मिक ज्ञान मूलनिवासियों की रस प्रधान प्रकृति और सौंदर्य-शक्ति से मिल कर एक उत्कृट श्रेणी का मिश्रण बन गया। वह मिश्रण विशुद्ध आर्य भी नहीं है और विशुद्ध अनार्य भी नहीं है; वह हिन्दुत्व पूर्ण हैं।"

इन्दिरा गांधी[93]—एक आर्य प्रतिनिधि के रूप में उजागर किया था कि भारत में उनकी जड़ें नहीं हैं।

आर्य ब्राह्मणों के विदेशी होने संबंधी आनुवांशिक शोध (DNA) प्रमाण

आर्य ब्राह्मण अपने को विदेशी होने का साहित्यिक और पुरातात्विक प्रमाणों पर भले ही भ्रामक दलील दें, परन्तु DNA शोध प्रमाण के आगे उनके मुंह पर ताला लग गया है। उनकी चालबाजी पकड़ ली गई है। उताह विश्वविद्यालय, साल्टलेक सीटी अमेरिका के **डॉ. माइकल वामशाद** (Michel Bamshad) और आन्ध्र विश्वविद्यालय विशाखापतनम् के मानवशास्त्र में **प्रो. बी. भास्कर राव** के संयुक्त आनुवांशिक शोध (DNA reaserch)[94] ने प्रमाणित कर दिया है कि भारत की उच्चवर्णीय जातियां यूरोशियन अर्थात् विदेशी हैं। यह शोध 1996 में शुरू किया गया तथा 2001 में इसकी रिर्पोट देश-विदेश के पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई। आनुवांशिक शोध बिल्कुल सटीक एवं विश्वसनीय होता है। इसमें मिलावट और साक्ष्य मिटाने की संभावना नहीं रहती है।

इस शोध अध्ययन में विभिन्न वर्गों, वंशावलियों का ध्यान रखते हुए नमूनों का चुनाव करके उनका जातीय समुदाय से, आनुवांशिक संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। आन्ध्र प्रदेश से आठ विभिन्न वर्ग बनाकर 265 पुरुषों से नमूने एकत्र किए गए। पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में 400 अलग-अलग जातियों के नमुनों के साथ उनका तुलनात्मक अध्ययन किया गया। महाद्वीपियन जन समुदाय से तुलना करने के उदेश्य से अफ्रीका, एशिया और युरोप महाद्वीप में लोगों से 350 नमूने इस अध्ययन के लिए एकत्र किए गए। इस प्रकार सभी नमूनों का गहन जांच एवं विश्लेषण किया गया। विश्लेषण में पाया गया कि भारतीय ब्राह्मणों, क्षत्रिय और वैश्यों की आनुवांशिक संरचना (DNA) यूरोपियन लोगों से काफी मिलती जुलती है। इनकी समानता का प्रतिशत निम्न प्रकार है।

टेबल नं.-1

वर्ण	भारत में जनसंख्या	यूरोपियन लोगों से आनुवांशिक संरचना की समानता प्रतिशत
ब्राह्मण	3.3%	**99.98%**
क्षत्रिय	5.5%	**99.88%**
वैश्य	6.0%	**99.84%**

ऊपर के आंकड़े दर्शाते हैं कि ब्राह्मण यूरोपियन से बिल्कुल समान है। उनका अंतर केवल .02% है, जो प्रमाणित करता है कि ब्राह्मणों का यूरोपियन से पुराने संबंध हैं। जबकि निम्नजातियों की आनुवांशिक संरचना (DNA) एशियन के करीब है।

परिणाम का विश्लेषण

➢ **Mitochondrial DNA** (Mitochondrial DNA मां की वंशावली से आता है) यह प्रमाणित करता है कि भारत के मूलनिवासियों के पुरखे प्राचीन एशियन थे। इसके साथ 20 से 30 प्रतिशत का सम्मिश्रण भी पाया गया है।

➢ भारतीय जातियों की जनसंख्या में, जो एशियन मूल के नहीं हैं, उनका Mitochondrial DNA हाप्लोटाइप प्राचीन यूरोप के दूसरे मुख्य Mitochondrial DNA हाप्लोटाइप से मिलता-जुलता है।

➢ स्त्रियों की आनुवांशिक संरचना यह प्रमाणित करती है कि वे पूर्व एशियन मूल की हैं। निम्न जाति से उच्च जाति की ओर बढ़ने से उनकी आनुवांशिक दूरी एशियन लोगों से बढ़ती जाती है।

➢ उच्चवर्णीय लोगों के 'Y' क्रोमोजोम एशियन लोगों के 'Y' क्रोमोजोम के बजाय यूरोपियन लोगों के 'Y' क्रोमोजोम से अधिक मेल खाता है अर्थात भारतीय उच्च जाति यूरोपियन लोगों के सदृश्य है और निम्न जातियां एशियन लोगों के करीब हैं।

➢ ब्राह्मणों और यूरोपियन लोगों के बीच की आनुवांशिक दूरी मात्र .02 है अर्थात इन दोनों में काफी समानता है। जबकि क्षत्रियों और यूरोपियन तथा

वैश्य और यूरोपियन के बीच की आनुवांशिक दूरी क्रमशः 0.12 और 0.16 है। भारत के उच्च वर्णों की यूरोपियन लोगों से आनुवांशिक समानता यह प्रमाणित करती है कि उनके यूरोपियन लोगों से पूर्व संबंध हैं।

➢ उच्च जातियां, यूरोपियन लोगों के बहुत ही समतुल्य हैं, मध्य जातियां एशियाई के बहुत करीब हैं।

उपर्युक्त जेनेटिक रिसर्च के अलावा पूना के डॉ. जय दीक्षित (चित्तपावन ब्राह्मण), डॉ. रघुनंदन दीक्षित और डॉ. अजय जोशी ने भी अपने आनुवांशिक शोध विश्लेषण में यह प्रमाणित किया है कि पूना के चित्तपावन ब्राह्मण रूस के काला सागर के नज़दीक के रहने वाले थे, जो वहां से सर्पिनिया, स्काटलैंड, जर्मनी के रास्ते से कोंकण में आए अथवा भूमध्य सागर प्रदेश से शकद्वीप सीरिया के रास्ते तुर्कस्तान होकर भारत में आए हुए हो सकते हैं। इस प्रकार आनुवांशिक शोध से निष्कर्ष निकलता है कि **"भारत में आर्यों का आक्रमण हुआ था तथा जाति प्रथा आर्यों की देन है।"**[95] बाल गंगाधर भी चितपावन ब्राह्मण थे, जिन्होंने भी अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'The archtic home of the Aryan' में प्रमाणित किया है कि आर्य ब्राह्मण विदेशी हैं। डॉ. जयदीक्षित शोध दल के अगुवा थे, जो स्वयं पूना के चित्तपावन ब्राह्मण हैं। उनकी खबर पुढ़ारी, मराठी दैनिक अखबार में 24/10/2007 को प्रकाशित हुआ था। उसी ख़बर को बामसेफ ने अपनी साप्ताहिक पत्रिका 'बहुजनों का बहुजन भारत' के जनवरी 2008 के तीसरे अंक में प्रकाशित किया, ताकि लोग असलियत को जानें और मानें।

क्या है DNA रिसर्च?

DNA एक सूक्ष्म संरचना होती है, जो मानव कोशिका (Cell) के न्यूक्लीयस में पाया जाता है। मानव शरीर असंख्य कोशिकाओं (Cells) से बना होता है। सारे सेल्स, एक ही सेल्स से विकसित होते हैं, जिसे Zygote कहते हैं। Zygote माता के अण्डाणु (ovum) और पिता के शुक्राणु (sperm) के मिलने से बनते हैं। सेल ठीक उसी प्रकार का होता है जिस प्रकार की मकान की ईंट। ईंटों के जुड़ाव से मकान बनता है और सेल्स के जुड़ाव से शरीर की रचना होती है। यही सेल्स मानव शरीर के रचनात्मक और कार्यात्मक क्रियाओं के लिए उतरदायी होता है। सेल में विभिन्न प्रकार की संरचनाएं होती हैं, जैसे न्यूक्लीयस, माइटोकॉन्ड्रिया आदि जो अलग-अलग कार्य के लिए उत्तरदायी होते हैं। सेल में पाए जाने वाले द्रव पदार्थ को सायटोप्लाज्म कहते हैं।

DNA दोहरा घुमावदार फीता जैसी संरचना है जो क्रोमोजोमस (सेल की एक रचना) में अवस्थित होते हैं। DNA श्रेणी के एक अंश को जीन्स (Genes) कहते हैं। Genes ही वह पदार्थ हैं जो माता-पिता के चरित्र को उनकी संतान में स्थानातंरित करता है। स्त्री-पुरुष में 23-23 क्रोमोजोमस् होते हैं, जो उनके सेल के न्यूक्लीयस में पाए जाते हैं। न्यूक्लीयस के क्रोमोजोमस् जो डीएनए में अवस्थित होता है, उसे न्यूक्लीयर डीएनए कहते हैं। मिटोकॉन्ड्रिया में भी डीएनए मोलिक्यूल्स होता है, जिसे Mitochondrial DNA कहते हैं। मिटोकॉन्ड्रिया सेल का एक महत्त्वपूर्ण अंग है जिसे **सेल का पावर हाउस** कहा जाता है। न्यूक्लीयर डीएनए का प्रतिरूप मिटोकॉन्ड्रियल डीएनए से दस गुना अधिक परिवर्तनशील होता है। पिता के वीर्य से हॅपलायड क्रोमोजोम का सेट एकत्र हो कर मां के न्यूक्लीयस एग्स से मिलकर Zygote का निर्माण करते हैं अर्थात पिता के वीर्य में पाए जाने वाले स्पर्म और माता के अण्डाणु से मिलकर जिग्गोट बनाते हैं। पिता से प्राप्त 23 क्रोमोजोम्स और माता से प्राप्त 23 क्रोमोजोम्स मिल कर 46 क्रोमोजोम्स बनाता है। पिता के neuclear choromosomes का सेट ही संतान के लिंग का निर्धारण करता है। पिता में 'xy' chromosomes

जबकि माता में 'xx' Choromosomes होता है। माता का X और पिता का Y मिलकर लड़का को और माता का X और पिता का X मिलकर लड़की को जन्म देता है। इस प्रकार एक व्यक्ति का Neuclear DNA उसके पिता के Y Choromosomes को तथा उसी व्यक्ति का Mitochondrial DNA उसके मां के आनुवांशिक कोड़ को दर्शाता है। DNA **पैतृक आनुवांशिक चरित्र के साथ-साथ उसके आए परिवर्तनों को भी उसके अतीत का जीव वैज्ञानिक दस्तावेज की भ्रांति प्रकट करता है।** नमूने के DNA में, एक विशिष्ठ क्रम की, control sample से दूरी को मापने के लिए अत्यंत संवेदनशील सांख्यकीय डेटा को प्रयोग में लाया जाता है। sample DNA अनुक्रम और control sample को जांचा जाता है, यदि दोनों के नमूने समान या बहुत ही सादृश्य हो। sample DNA sequence यदि control sample से मेल नहीं खाता है, तो उसे किसी और नियंत्रित अनुक्रम से तुलना करके देखा जाता है। DNA शोध काफी जटिल एवं पेचीदा होता है, किन्तु यह स्पष्ट वैज्ञानिक जानकारी प्रदान करता है। अमेरिका के जेनेटिक लैब में दुनिया की सभी जातियों का क्रोमोजोमस् सुरक्षित है।

आर्य ब्राह्मण आक्रमणकारी

पुरातात्विक साक्ष्यों, भाषा-विज्ञान से प्राप्त तथ्यों एवं सिन्धुघाटी सभ्यता की खुदाई से प्राप्त अवशेषों से यह प्रमाणित होता है कि आर्यों के पास घोड़े, रथ और नुकीले हथियार होते थे और उन लोगों ने व्यवस्थित कृषि व्यवसाय करने वाले मूल निवासियों पर आक्रमण किया। **"आनुवांशिक विश्लेषण (Y. Choromosenes analysis) से पता चला है कि भारत में सवर्ण जाति के लोगों का संबंध यूरोपियन लोगों से अधिक है, और एशियन लोगों से कम है। यह भी प्रमाणित हुआ है कि भारत में आने वाले यूरोपियन लोग अधिकांशतः पुरुष थे और केवल पुरुष का आना आक्रमण को ही प्रमाणित करता है, विस्थापन नहीं। यदि विस्थापन होता, तो उनके साथ यूरोपियन महिलाएं भी होतीं। विदेशी आर्य ब्राह्मण भारत में घोड़े पर चढ़कर आए थे। उनके पास नुकीले हथियार भी थे और रथ का भी उपयोग करते थे, जिनकी पुष्टि वर्तमान आनुवांशिक शोध भी करता है। अतः अनुसंधान ने स्पष्टतः यह प्रमाणित कर दिया है कि घुड़सवार रथी और लोहे के नुकीले हथियार चलाने वाले लोगों ने भारत के मूलनिवासी, कृषि व्यवसाय करने वाली, शांतिप्रिय जनता पर आक्रमण किया और अपने वर्चस्व को मजबूती प्रदान करने के उद्देश्य से उन पर जाति प्रथा का शिकंजा कस दिया।"[96]**

राहुल सांकृत्यायन ने **'वोल्गा से गंगा'** में लिखा है कि अच्छी घुड़सवारी के कारण ही पुरहुत और पुरुधान (आर्य सेनापति) असुर अनार्यों पर विजय प्राप्त कर सका। सांकृत्यायन के अनुसार "अपने से अधिक मृदुल और सभ्य प्रतिद्वन्द्वियों (भारत के मूलनिवासियों) से आर्यों का खूनी संघर्ष 1500 ई.पू. के आसपास हुआ। हड़प्पा की खुदाई में ऐसे निर्मम हत्याकाण्ड के प्रमाण मिले हैं।"[97] सिंधु सभ्यता की खुदाई करने वाले प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता एम. व्हीलर के अनुसार "आर्यों ने मूलनिवासियों को सामूहिक रूप से निर्मम कत्ल किया था। उत्खनन में प्राप्त मानव-कंकालों पर तेज धार युक्त हथियार के गंभीर घाव के निशान पाए गए हैं। बर्बर आर्यों ने प्राण रक्षार्थ

भागते हुए भी अनार्यों का वध किया था। कंकालों के पड़े होने की स्थिति, स्थान, तथा संख्या के गहन अध्ययन के पश्चात व्हीलर ने स्पष्ट किया है कि उन्हें छत पर छुपने के लिए सीढ़ियों पर चढ़ते हुए, कमरे के अन्दर तथा सड़क पर बड़ी ही बेरहमी से कत्ल किया। कुछ लोग कुएं के अन्दर जाने के लिए बनी सीढ़ियों के सहारे कुएं में छुपना चाहते थे, उन्हें भी सीढ़ियों पर ही कत्ल किया। विदेशी आर्य ब्रह्मणों ने इतना मार-काट किया कि मारे गए शवों के अंतिम संस्कार करने वाला भी कोई नहीं बचा था। शव तब तक खुले में पड़े रहे जब तक वे सारे कंकाल में परिणत नहीं हो गए। रक्तपिपासु आर्यों ने स्त्री और बच्चों को भी नहीं बख्शा। आक्रमणकारी आर्यों ने क़त्लेयाम के पश्चात मारे गए लोगों की बस्तियों को धू-धूकर जलने के लिए आग के हवाले कर दिया था। व्हीलर ने अपने निष्कर्ष में कहा कि—"सिंधु सभ्यता का पतन दीर्घ काल तक क्रमिक और विध्वंसात्मक था।"[98] आर्यों ने भारत के मूलनिवासियों पर आक्रमण कर उनके नगर को नष्ट कर डाला, उन्हें सम्पत्ति और सत्ता से बेदखल कर दिया। इसका पुष्ट प्रमाण ऋग्वेद में ही मौजूद है, जो निम्नलिखित उद्धरण से स्पष्ट होता है—

ऋग्वेद 2/14/6— इन्द्र (धर्मानंद कोसंबी के अनुसार इन=योद्धा+द्र= प्रमुख अथवा अधिपति याने आर्यों का अधिपति—) ने शंबर असुर (हिमालयी तराई क्षेत्रों का मूलनिवासियों का राजा) की प्राचीन सौ नगरियों को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला।

ऋग्वेद 2/12/6— इंद्र ने असुरों के नब्बे नगरों को एक साथ कंपकपा डाला।

ऋग्वेद 2/20/7— पुरंदर (नगरों को ध्वंस करने वाला) आर्य इन्द्र ने नीच जाति वाली सभी काली दासियों को नष्ट कर डाला।

ऋग्वेद 2/20/8— इंद्र ने शत्रुओं की लौह निर्मित नगरी को पूरी तरह नष्ट कर दिया।

ऋग्वेद 3/30/17— हे इंद्र! राक्षसों के वंश को समूल नष्ट करो, उनका मध्य भाग काट डालो, अग्र भाग विनाश करो। सब ओर फिरने वाले इन राक्षसों को दूर करो और इन ब्राह्मणों से द्वेष करने वालों पर अपने संतापकारी अस्त्र का प्रहार करो।

ऋग्वेद 6/20/10— इंद्र ने शरदासुर की सात पुरियों को वज्र से चूर्ण कर दिया।

ऋग्वेद 11/99/7— इंद्र ने दस्यु का वध किया और उनकी अनेक नगरियों को तोड़ डाला।

ऋग्वेद 1/32/15— वृत्र को मार कर वज्रधारी इन्द्र ने स्थावर, जंगम, सींग रहित और सींग वाले पशुओं के स्वामी बने। इन मनुष्यों (अनार्यों) के भी राजा बने।

ऋग्वेद 1/101/01— आर्य सेना के अधिपति इंद्र ने मूलनिवासी राजा कृष्ण की गर्भवती स्त्रियों को निर्ममतापूर्वक वध कर दिया था।

ऋग्वेद 1/53/7—8— इंद्र तुमने मायावी असुर नमुचि का मस्तक चूर्ण किया है।

ऋग्वेद—2/15/4— इंद्र ने सोमरस के नशे में असुरों से बहुत सी गायें, घोड़े तथा रथ छीनकर दभीति को प्रदान किए।

ऋग्वेद—8/40/6— हम इंद्र[99] की कृपा से दास द्वारा एकत्रित धन का भोग करेंगे। इंद्र और अग्नि हमारे सभी शत्रुओं को मारें।

ऋग्वेद—10/99/3— इंद्र शत्रु की सौ द्वारों वाली नगरी में स्थित धन को बल से छीनकर ले आते हैं और उन्हें पराजित करते हैं।

ऋग्वेद—10/69/6— अग्नि ने पर्वत पर उत्पन्न धन को दासों से जीत कर आर्यों को दिया।

ऋग्वेद—1/51/5— जो असुरगण विविध प्रकार का अन्न यज्ञ में होम न कर के अपने ही सुंदर मुखों में रख लेते थे, हे इंद्र! उन मायावी नीच लोगों को आपने अपनी माया के द्वारा परास्त किया था। आप हम पर प्रसन्न हैं। आपने पिप्रु नामक असुर के नगर को नष्ट कर दिया था, और ऋजिस्वान के स्तोता को दस्युओं के हाथ से मारे जाते हुए की रक्षा की।

ऋग्वेद—1/33/5— हे इंद्र! आपने इन यज्ञ-रहित और यज्ञ करने वालों के साथ स्पर्धा करने वाले लोगों के सिर घुमाकर इन्हें भगा दिया है। हे हर्यश्व-संपन्न, पलायन रहित उग्र इंद्र! आपने इन व्रत-हीन नीचों को उजाड़ दिया है।

ऋग्वेद—1/33/7— हे इंद्र! आपने रोते हुए, खाते हुए एवं हंसते हुए जैसे पाया, इन दस्युओं को युद्ध कर के देश से बाहर भगा दिया है। आपने देवलोक से आकर बड़े उत्कर्ष के साथ इन दस्युओं को जला कर हम यज्ञ और स्तुति करने वालों की रक्षा की है।

ऋग्वेद—1/53/8— इंद्र ने अकेले ही असुरों के सौ नगरों को घेरकर विनाश कर दिया।

ऋग्वेद—1/176/4— हे इंद्र! सोमरस न निचोड़ने वाले और दुःसाध्य शत्रुओं का नाश कर उनका धन हमें दो।

ऋग्वेद—5/28/4— हे अग्नि! हमें धनवान बनाने के लिए शत्रुओं को नाश करो।

ऋग्वेद—6/31/4— हे इंद्र! तुमने शंबर नाम के दस्यु के 100 नगरों को ध्वस्त किया।

ऋग्वेद 2/15/9— चुमुरि और धुनि नामक अनार्य को गहरी नींद में सुलाकर इंद्र ने भांग पीकर मारा तथा उसका धन छीन लिया।

ऋग्वेद 2/15/5— आर्य नदी पार करके भारत में धन लूटने आए थे।

ऋग्वेद 4/16/13— काली चमड़ी वाले 50,000 राक्षसों (मूलनिवासी अनार्यों) को इंद्र ने हत्या कर दी।

ऋग्वेद 4/30/15— 5000 सौ सेवकों से घिरे रहने वाले वर्ची नाम के असुर राजा का इंद्र ने वध कर दिया।

ऋग्वेद 4/30/14— इंद्र ने शंबर नाम के अनार्य राजा को उल्टा सिर लटका कर (अधोमुख कर) बड़ी ही निर्ममतापूर्वक मारा।

ऋग्वेद 4/30/20– इंद्र ने हवि दान करने वाले यजमान दिवोदास को शम्बर के पत्थर से बने 100 नगर दिए।

ऋग्वेद 1/130/7– इंद्र ने राजा दिवोदास के लिए उसके शत्रुओं के 90 नगरों का ध्वंश कर दिया। हे इंद्र! राजा दिवोदास के कल्याण के लिए शंबर असुर को पर्वत से नीचे गिरा दिया।

ऋग्वेद 1/130/8– इंद्र ने कृष्ण नामक असुर को अंशुमती नदी के किनारे उसकी खाल उतार कर मारा और जिंदा भस्म कर दिया। इंद्र ने सभी हिंसक मनुष्यों को नष्ट कर डाला।

ऋग्वेद–4/30/20– इंद्र ने पत्थरों के बने हुए सौ नगर (असुरों से लूटकर) दिवोदास को दिए।

ऋग्वेद–4/30/21– इंद्र ने दभीति के कल्याण के लिए अपनी शक्ति द्वारा 30,000 राक्षसों को अपने आयुध से मार डाला।

ऋग्वेद 1/51/6– इंद्र ने अर्बुद नामक महान असुर को पैरों से कुचल कर मारा।

ऋग्वेद 1/51/8– हे इंद्र! कौन लोग आर्य हैं, और कौन लोग दस्यु उनको आप भली-भांति जानो। कुश-युक्त यज्ञ के विरोधी लोगों का शासन करके वशीभूत करो। आप शक्तिमान हैं, अतएव हम यज्ञ करने वालों के आप सहायक हो जाओ। हम आपको प्रसन्न करने वाले यज्ञ में आपके इन सब कर्मों की प्रशंसा करने की इच्छा करते हैं।

इस प्रकार "आर्यों और अनार्यों के बीच केवल राजनीतिक, शासन और अधिकार के लिए ही लड़ाई-झगड़ा नहीं होता था, बल्कि उसका कारण जातिय और धार्मिक विद्वेष भी था इन्हीं कारणों से आर्य विजेताओं ने अपने को श्रेष्ठ और अपने रहन-सहन, रीति-रिवाज और

धर्म-विश्वास को अच्छा कहा तथा विजित भारतीयों को दस्यु, दास, राक्षस, यातुधान, दैत्य, दानव, असुर, क्रव्याद, सनक, अव्रती, अयज्वान, अरावण, ब्रह्मद्वेषी इत्यादि नामों से स्मरण किया। इन शब्दों के अर्थ घृणित, क्रूर, और निंदित ठहराए। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। अपने शत्रु को बुरी दृष्टि से देखना मनुष्य का स्वभाव है। उपर्युक्त मंत्रों से यह भी विदित होता है कि आर्य लोग अपने विरोधियों को निर्मूल करने तथा उनका धन, गाएं, धरती और दुर्ग छीन लेने पर सदैव उद्धत रहते थे। वे उन्हें पर्वतों पर ढकेलते, उनकी खालें खींचते, और उनकी गर्भवती स्त्रियों तक को भी मार डालते थे। वे उनके नगरों और किलों को विध्वंश करते और उन्हें जला देते थे। यहां तक कि अन्न, जल, वायु और औषधि के लिए भी दुआएं मांगी गई हैं कि वे हमारे लिए अमृत हों और हमारे शत्रुओं के लिए विष के समान।"[100]

ऋग्वेद के अनुसार युद्ध में जितने के बाद अनुमानतः 2,66,000 भारत के मूलनिवासियों को आर्यों द्वारा हत्याएं की गई थी[101] तथा हजारों शहरों, नगरों और किलों को ध्वस्त किया गया। इसका साक्षी स्वयं वेद है। यह निम्नलिखित युद्ध-हत्याओं के ऋग्वेदिक विवरण से पता चलता है।

टेबल नं.-2

ऋग्वेद की ऋचाएं	मारे गए दस्युयों की संख्या
6—16—13	50,000
4—30—21	30,000
4—30—15	5,000
6—26—6	60,000
7—18—4	66,000
7—99—5	10,000
योग	**2,66,000**

(स्रोत—सिन्धु घाटी सभ्यता के सृजनकर्ता शूद्र और वणिक—डॉ. नवल वियोगी, पृ. 167)

प्राचीन इतिहास के प्रकांड पंडित डी.डी. कोसंबी[102] ने लिखा है कि

"भारत पर आर्य आक्रमण, मूलनिवासियों पर विजय और यहां की सभ्यता के विध्वंस की जानकारी का प्रमुख स्रोत प्रचीनतम चारों वेद हैं।"

ऋग्वेद में ऐसे और कई उदाहरण हैं जिससे पता चलता है कि बर्वर आर्यों ने भारत के मूलनिवासियों पर आक्रमण किया था। अनार्यों पर आर्यों द्वारा आक्रमण और हत्या के जिस क्रूरतम तरीकों का वर्णन उन्हीं के लिखे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद में आया है, उससे स्पष्ट पता चलता है कि **"आर्यों में प्रेम, प्रीति और मानवता नाम की कोई चीज नहीं थी। हिंसा द्वेष हत्या उत्पीड़न और बर्बर दुर्धर्षता उनका मुख्य चारित्रिक लक्ष्य था।"**[103] इस प्रकार कई साहित्यिक और पुरातात्विक साक्ष्य यह प्रमाणित करते हैं कि विदेशी आर्य ब्राह्मणों ने भारत के मूलनिवासियों के सुन्दर सुव्यवस्थित और सुरम्य नगरों और सभ्यताओं (सिन्धु घाटी सभ्यता) को नष्ट कर अपनी संस्कृति कायम की। यही संस्कृति आर्य समाज अथवा ब्राह्मणी धर्म अथवा वर्णाश्रम धर्म या हिन्दू धर्म के रूप में प्रचलित हुई, जिसमें सिर्फ विषमता ही विषमता है।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन के अनुसार आर्यों और मूलनिवासियों के बीच हुए प्रथम युद्ध को ही 'देवासुर संग्राम'[104] का नाम दिया गया है। उत्तरवैदिक ग्रंथों (पौराणिक ग्रंथ) में वर्णित हथियारों से लैस हिन्दू देवी-देवताओं द्वारा अपने खड़ग-खंजर का इस्तेमाल कर असुरों को छलपूर्वक कत्ल करने की घटना आर्य-अनार्य संघर्ष की ही कहानी है। जब भारत में विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा मंदिर तोड़े गए, सोने-चांदी की मूर्तियों और मंदिरों के ख़ज़ाने लूटे गए तो हिन्दू देवी-देवताओं के अस्त्र-शस्त्र काम नहीं आए। ये गोरी, गजनी, तैमूरलंग आदि का कुछ नहीं बिगाड़ सके। इससे सिद्ध होता है कि ब्राह्मणों ने कल्पित अस्त्र-शस्त्रधारी देवी-देवताओं की आड़ में राजा बलि, महिषासुर, हिरण्यकश्यप तथा रावण जैसे भारत के मूलनिवासी शूरवीरों की छलपूर्वक हत्या कर भारत की धरती पर ब्राह्मणराज की स्थापना की। सच्चाई जानने के लिए बहुजनों को अपना इतिहास जानना होगा तथा इससे सबक सीखना होगा।

आर्यों ने भारत के मूलनिवासियों को ही असुर, दानव, दास, दस्यु और राक्षस कहा है। वास्तव में राक्षस शब्द **रक्षस**[105] (अर्थात् अपने समाज और

राज्य की रक्षा करने वाला) से बना है। "इसी प्रकार असुर का अर्थ होता है (असु=प्राण) प्राणवाण, वीर्यवान, शक्तिवान तथा सुरापान नहीं (अ=नहीं+ सुर=सुरा पीने वाला) करने वाला। ईश्वर असुर को ही कहा जाता है। ऐतेरेय ब्राह्मण में कहा गया है कि जो प्राणों के इन्द्रियों में रमण करता है वह असुर है **(असुषु प्राणेषु इन्द्रियेषु एव रमन्त इति असुराः)**।[106] ये हमेशा विजयी होते थे, इसीलिए इन्हें प्राणवाण और शक्तिवान कहा जाने लगा।" इस प्रकार विदेशी आर्य ब्राह्मणों ने जिन्हें असुर या राक्षस (अपने समाज की रक्षा करने वाला) के नाम पर छलपूर्ण पराजित किया, हत्या किया, वे सभी भारत के वीर स्वाभिमानी मूलनिवासी राजा थे तथा बहुजन समाज के रक्षक एवं गौरव थे; जैसे लंकापति रावण, महिषासुर, हिरण्याक्ष, हिरण्यकश्यप, जालंधर आदि। जब मस्तिष्क से ब्राह्मणवादी इतिहास का पर्दा हट जाएगा तो असलियत साफ-साफ झलकने लगेगी।

बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर संपूर्ण वांगमय खण्ड-7 (पृ. 15-16, 320) में बाबासाहेब ने लिखा है कि **"प्राचीन भारत के इतिहास का काफी हिस्सा बिल्कुल भी इतिहास नहीं है। प्राचीन भारत का इतिहास अपना स्वरूप खो चुका है। महिलाओं और बच्चों का मनोरंजन करने के लिए इसे जान-बूझकर पौराणिक आख्यान बना दिया गया है। ब्राह्मणवादी लेखकों ने जान-बूझकर ऐसा किया है। जैसे 'देव' शब्द। बौद्ध साहित्य के अनुसार देव मानव समुदाय से थे जो बुद्ध के पास मिलने जाते थे। परन्तु ब्राह्मणों ने इसे मानव से ऊपर की चमत्कारी शक्ति के रूप में प्रचारित किया। उसी प्रकार 'असुर' नाम को लीजिए। असुर का वर्णन इस प्रकार किया गया है कि वे दस बैलगाड़ी-भर भोजन करते हैं। वे दैत्य के आकार के हैं। वे छह मास तक सोते हैं। उनके दस मुख हैं। वे मानवरहित दुनिया में रहते हैं। राक्षस को भी अमानवीय प्राणी बताया गया है। परन्तु 'असुर' अथवा 'राक्षस' भी जन-विशेष मानव ही थे। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार, असुर सृष्टि के निर्माता प्रजापति के वंशज थे। कथा है कि दक्ष प्रजापति के साठ कन्याएं थी, जिनमें से तेरह कन्याओं का विवाह कश्यप के साथ हुआ था। कश्यप की तेरह पत्नियों में से एक दिति और दूसरी अदिति थी। जो दिति से उत्पन्न हुए, वे दैत्य अथवा असुर कहलाए और जिनका जन्म दिति से**

हुआ, वे सुर कहलाए। इन दोनों के बीच पृथ्वी पर आधिपत्य के लिए अनवरत भीषण युद्ध चला जिसमें असुर दुर्भाग्यवश सुरों या देवताओं के द्वारा पराजित हो गए वास्तविकता जानने के लिए बौद्ध-साहित्य की मदद से प्रचीन इतिहास के मलबे से असलीयत खोद कर निकाला जा सकता है जिसे ब्राह्मण लेखकों ने पागलपन में उसे दबाकर रख दिया है।"

"सुर शब्द देव या देवता का पर्याय न होकर सुरा (शराब) पीने वाले आर्यों का पर्याय है। जैमिनीय ब्राह्मण के अनुसार सुर का मतलब कमजोर या शक्तिहीन होता है (ऋग्वेदिक असुर और आर्य)।" चूंकि आर्य शीतप्रधान देश (रूस में वोल्गा नदी के तटीय क्षेत्र) से आए थे, इसीलिए ठंड से बचने के लिए शराब जैसे मादक पेय पीते थे। ऋग्वेद का सम्पूर्ण नवम् मंडल सोमरस अर्थात् भांग जैसी मादक पेय के वर्णन से भरा पड़ा है। बाद में उस पेय को सुरों द्वारा पीए जाने के कारण सुरा कहा जाने लगा। सुरा से शराब बना अर्थात् सुरों का आब यानी पानी। भारत के मूलनिवासी असुर, अनार्य, कुरमी, क्रत्य, मनुष्य, विष, कीनास जैसे नामों से पहचाने जाते थे, जो सुरा नहीं पीते थे।

"आर्य तो प्राक् सभ्य लिपिहीन दुर्घर्ष योद्धा मात्र थे। वे बर्बर एवं ध्वंस उत्पीड़न प्रेमी थे। वे पशुपालक और शिकारी थे। ऋग्वेद से ही प्रमाणित होता है कि आक्रमणकारी आर्यों की छवि चोरी, छिनतई राहजनी तथा धन अपहरणकर्ता की जैसी है (एस.के. विश्वास)। इन्द्र को रात के अन्धकार में गौशालों से पगहा खोलकर चोरी[107] करते देखा गया है।"[108] आक्रमणकारी आर्यों ने नदियों के ऊपर बने बांधों को तोड़कर ही सिन्धु सभ्यता के उत्पादनों का ध्वंस किया। यही कारण है कि वह सभ्यता पुनः उठ खड़ी न हो सकी।

सभी उच्चवर्णीय स्त्रियां भारत की मूलनिवासी

आनुवांशिक शोध से यह स्पष्ट हो गया है कि आर्य ब्राह्मण तथा अन्य उच्च वर्णीय जातियां भारत के मूलनिवासी नहीं हैं। वे विदेशी (यूरोएशियाई) हैं, जो आक्रमणकारी के रूप में भारत आए थे। परन्तु ब्राह्मण तथा अन्य उच्च वर्णीय स्त्रियां विदेशी नहीं, बल्कि भारतीय मूल[109] की हैं। यह तथ्य आनुवांशिक शोध से पता चलता है। स्त्रियों का आनुवांशिक संरचना (Mitochondrial DNA) यह प्रमाणित करता है कि वे लोग एशियन मूल के हैं। ब्राह्मणों के संसर्ग में लम्बे काल तक लगातार रहने के कारण उनके घरों की स्त्रियां मूलनिवासी होते हुए भी वाह्य आकृति, रंग-रूप तथा प्रवृति-व्यवहार में मूलनिवासी परिवारों की स्त्रियों से भिन्न होती हैं; परन्तु उनके आनुवांशिक चरित्र में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ, क्योंकि उनका DNA उनके अतीत को जीव वैज्ञानिक दस्तावेज की भांति प्रकट करता है।

यह प्रमाणित हो चुका है कि आर्य ब्राह्मण भारत में मध्य एशिया से आक्रमणकारी के रूप में आए थे। आक्रमणकारी स्त्रियों को लेकर नहीं चलता है। साहित्यिक और पुरातात्विक प्रमाणों से यह सिद्ध हुआ है कि आर्यों के पास घोड़े, रथ और लोहे के नुकीले हथियार थे, जिनकी पुष्टि वर्तमान आनुवांशिक शोध भी करता हैं। रथ और घोड़े के चिह्न विदेशी आर्य ब्राह्मणों के भारत आक्रमण के पूर्व भारत में नहीं पाए गए हैं। आर्य सिंधुघाटी सभ्यता (हरप्पा असुर सभ्यता) के जनों के सम्पर्क और संघर्ष में आए। उन्होंने यहां के मूलनिवासियों को न केवल छलपूर्वक पराजित कर उनकी सत्ता और सम्पत्ति पर आधिपत्य स्थापित किया, बल्कि मूलनिवासी स्त्रियों का अपहरण करके उनसे संतानोत्पत्ति भी की, वंश वृद्धि की, और और यहां के मूलनिवासियों के साथ समिश्रित होने लगे। यही कारण है कि ब्राह्मणों ने **'अनुलोम विवाह'** (Hypogamy) की प्रथा कायम रखी। आर्यों में पितृप्रधान समाज की परंपरा के कारण मूलनिवासी स्त्रियों से उत्पन्न संतान अपने पिता की जाति को बरण करके आर्य ब्राह्मण बने रहे। यह बात स्पष्ट है कि जब आर्यों ने भारत पर आक्रमण

किया तब बहुत ही लूट-पाट, नरसंहार, औरतों के साथ दुर्व्यवहार एवं बलात्कार आदि हुए। इसका भी प्रमाण ऋग्वेद में ही है—

ऋग्वेद—5/30/9— इंद्र ने अनार्य राजा नमूची कर स्त्री सेना को पराजित कर उनको अपने कब्जे में ले लिया था।

ऋग्वेद—8/19/36— उत्तम दानी, स्वामी, सज्जनों के पालक एवं पुरुकुत्स के पुत्र त्रसदस्यु ने मुझे पचास स्त्रियां (दासियां) प्रदान की हैं।

स्पष्ट है युद्ध में पराजित एवं मारे गए अनार्य योद्धाओं की स्त्रियों को आर्य दासी के रूप में रख लेते थे अथवा किसी को उपहार में दे देते थे। इस प्रकार वेद और आनुवांशिक शोध, दोनों ही द्वारा सिद्ध होता है कि भारत की सभी स्त्रियां यहां की मूलनिवासी हैं, जिनसे आर्यों ने अपनी वंशवृद्धि की और जनसंख्या बढ़ाई। तत्पश्चात समय की आवश्यकता समझकर, ये आक्रमणकारी आर्य यहां की मूल जनता के साथ मिल तो गए, किन्तु जाति-प्रथा का निर्माण कर अपने वर्चस्व को उच्चस्थ बनाए रखा तथा भारत के मूलनिवासियों को शूद्रातिशूद्र की श्रेणी में धकेल दिया।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन (वोल्गा से गंगा) ने लिखा है कि आर्य शूद्र पुरुषों को मार कर उनकी स्त्रियों को अपनी स्त्रियों में शामिल कर लेते थे, अर्थात् उन्हें पत्नी के रूप में रखते थे। यही कारण है कि सभी ब्राह्मणवादी धर्मग्रंथों में स्त्रियों को भी शूद्र माना गया है। चूंकि स्त्रियां भी मूलनिवासी ही थीं; आर्यों को इस बात का डर था कि स्त्रियां कहीं उनके विरुद्ध बगावत न कर दें, इसीलिए आर्यों ने उन्हें भी शूद्र श्रेणी में रखा। हिन्दू शास्त्रों में शूद्रों की भांति स्त्रियों पर भी ढेर सारे निर्योग्यताएं लाद दी, यथा—

मनुस्मृति—स्त्री और शूद्र को बुद्धि नहीं देनी चाहिए। **(स्त्री शूद्रा नाधियातमिति इतिः)**

स्कन्द पुराण—ब्राह्मण द्वादशमंत्र और ऊंकार का जाप कर सकते हैं, परन्तु स्त्री और शूद्र नहीं कर सकते। **(द्विजाती नां सहोंकार सहितों द्वादशाक्षरः। स्त्री शूद्रा नामं नमस्कार पूर्वकः समुदादृतः।)**

गीता—9:32—स्त्री, शूद्र और वैश्य पाप योनी के होते हैं।

मनुस्मृति—5:147—48—स्त्री को स्वतंत्रता पूर्वक कोई काम नहीं करना चाहिए। कुमारी अवस्था में पिता, युवावस्था में पति और बुढ़ापे में पुत्र के अधीन स्त्रियां होती हैं। स्त्रियों को स्वतंत्रता नहीं होती है। (**पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने। रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा न स्त्री स्वातंत्रयर्महति।**)

याज्ञवल्क्य संहिता—स्त्रियों को सदैव अधीन रखो। (**अभावज्ञात यस्तेषां न स्वातंत्रय क्वचि स्त्रियाः**)

अत्रिस्मृति—35—जप-तप-व्रत, तीर्थयात्रा, संन्यास, मंत्रसाधना, देवता की आराधना ये छः कार्य स्त्री और शूद्र के लिए पतनकारी हैं।

मनुस्मृति—3:14—ब्राह्मणों को चारों वर्णों की कन्या से विवाह करने का अधिकार है।

श्रीमद्भागवत—1:4:25—स्त्रियों को वेदपाठ करने का अधिकार नहीं है।

मनुस्मृति—9:18—स्त्रियों को ज्ञान नहीं होता, उन्हें मंत्रों का अधिकार नहीं है, उनकी स्थिति झूठ ही में है।

मनुस्मृति—11:36—कन्या, युवती, स्त्री, कम पढ़ा-लिखा, मूर्ख, पीड़ित और अनुपनीत (जनेऊ—विहीन) ये अग्निहोत्र हवन-कर्म न करें।

मनुस्मृति—9:14—स्त्री न रूप की परीक्षा करती है, न उम्र का ही ख्याल रखती है, सुन्दर हो चाहे कुरूप, पुरुष होने से ही उसके साथ भोग करती है।

मनुस्मृति—4:206—ब्राह्मण उस यज्ञ में दिये गए भोजन को कभी ग्रहण न करे जिसमें किसी स्त्री द्वारा हवन किया गया हो। वह सज्जनों के लिए अमंगलकारी और देवताओं के लिए प्रतिकूल होता है।

मनुस्मृति—4:206—पत्नी, पुत्र और सेवक, ये तीनों निर्धन कहे गए हैं, उनका हासिल किया गया धन उनका होगा, जिसके ये पुत्र, पत्नी और सेवक हैं।

मनुस्मृति—5:147—बालिका हो या युवती या वृद्धा स्त्री को स्वतंत्रतापूर्वक कोई काम नहीं करने देना चाहिए।

मनुस्मृति—9:17—शय्या, आसन, अलंकार, काम (सेक्स), क्रोध, कुटिलता, द्रोह और दुराचार ये सभी स्त्रियों के लिए ही बने हैं।

मनुस्मृति—9:27—बच्चा जनना, जने हुए का पालन करना, और नित्य गृहकार्य करना स्त्रियों का मुख्य काम है।

मनुस्मृति—9:33—स्त्रियां खेत के समान होती हैं, यानी उनका काम सिर्फ बच्चा पैदा करना है।

मनुस्मृति—9:26—बच्चा पैदा कर स्त्रियां बड़ा उपकार करती हैं, इसीलिए वे आदर की पात्र और घर की शोभा होती हैं। बच्चा पैदा करने के कारण स्त्री को घर की लक्ष्मी कहा गया है। (विवाहोपरान्त स्त्री को केवल बच्चा पैदा करने की जिम्मेवारी दी गई है इसीलिए औरत को विवाह के बाद 'देवी' कहा जाता है।)

मनुस्मृति—9:96—ब्रह्मा जी ने गर्भधारण करने के लिए ही बनाया है।

मनुस्मृति—9:59—जिस स्त्री को अपने पति से संतान न हो उसे देवर अथवा परिवार के अन्य पुरुष से संतान उत्पन्न कराना चाहिए याने हर हाल में स्त्री को बच्चा पैदा करना चाहिए।

मनुस्मृति—5:151—पिता अथवा भ्राता बेटी को जिस पुरुष के साथ ब्याह दे, उसकी जीवनपर्यन्त शुद्ध हृदय के साथ सेवा करे। पति की मृत्यु के बाद स्त्री धर्म का उल्लंघन न करे।

मनुस्मृति—9:2—पुरुषों को चाहिए कि स्त्रियों को कभी स्वतंत्र न होने दें। उन्हें सदा अपने वश में रखें।

मनुस्मृति—5:147—बालिका हो या युवती या वृद्धा, स्त्री को स्वतंत्रतापूर्वक घर का कोई काम नहीं करना चाहिए।

मनुस्मृति—5:154—पति दुराचारी हो, पर-स्त्री गमन करने वाला हो, गुणहीन और शीलहीन हो तो भी स्त्री को उस पति की देवता की तरह सेवा करनी चाहिए।

मनुस्मृति—5:155—स्त्रियों के लिए न अलग यज्ञ है, न व्रत और न अलग उपवास, पति की सेवा ही उसे स्वर्ग ले जाती है।

स्कन्दपुराण—शीलवती पतिव्रता स्त्री को चाहिए कि पीटी जाने पर भी जोर से रोना-चीखना न करे। स्त्री को पीटने के लिए पतली छड़ी और रस्सी सुझाई गई है।

ऋग्वेद, 8/33/17—स्त्री की बुद्धि नहीं होती है।

महाभारत—भीष्म का कथन है कि स्त्री के लिए किन्हीं भी धार्मिक कर्मों क्रियाओं का विधान नहीं है। **(न च स्त्रीणां क्रियाः काश्चिदिति धर्मो व्यवस्थितः)**

ऋग्वेद, 10/95/15—स्त्रियों की मैत्री-झूठी होती है। स्त्रियों का हृदय भेड़ियों के समान होता है।

ऋग्वेद, 8/33/19—हे प्रायोगि तुम नीचे देखो, ऊपर मत देखो। तुम स्तोता होते हुए भी स्त्री हो।

उपर्युक्त उद्धरणों से प्रमाणित होता है कि आर्य ब्राह्मण स्त्रियों को शूद्रों के समान ही नीच समझते थे; क्योंकि वे जानते थे, कि सभी स्त्रियां मूलनिवासी हैं। "ब्राह्मणों ने स्त्री के प्रति क्रूरता का जो विधान बनाया है, वह संभव नहीं हो सकता था, अगर स्त्रियां उन्हीं की नस्ल की रही होतीं।"[110]

ब्राह्मणों ने अपनी यौनेच्छा तृप्ती और जनसंख्या वृद्धि के लिए **'अनुलोम विवाह'** (नीच वर्ण की लड़की और उच्च वर्ण के लड़के के साथ विवाह) की अनुमति दी, परन्तु जातिवाद कायम रखने के लिए **'प्रतिलोम विवाह'** (नीच वर्ण का लड़का और उच्च वर्ण की लड़की के साथ विवाह) को प्रतिबंधित किया। आर्यों ने प्रतिलोम विवाह का उल्लंघन दंडनीय अपराध भी माना। मनु के विधान के अनुसार—

अनुलोम विवाह का प्रश्रय

मनु—3:13—ब्राह्मणों को चारों वर्णों की कन्या से विवाह करने का अधिकार है।

मनु—8:365—"उत्तम जाति के पुरुष के साथ सम्भोग करने की इच्छा से उसकी सेवा करने वाली कन्या को दंडित नहीं करें।

प्रतिलोम विवाह का निषेध

मनु—8:365—उत्तम (ब्राह्मण) वर्ण की कन्या के साथ सम्भोग करने वाला नीच वर्ण का पुरुष वध के योग्य है।

मनु—3:13—शूद्र शूद्र कन्या से, वैश्य वैश्य कन्या से और क्षत्रिय क्षत्रिय कन्या से ही व्याह करे।

मनु—8:359—जो शूद्र द्विजाति स्त्री के अस्पृशीय अंगों को छुए, तो उसको जान से मरवा दे।

मनु—8:374—यदि ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य की असंरक्षित स्त्री से कोई शूद्र सम्भोग करे, तो राजा उसका लिंग कटवा कर उसका सब धन छीन ले और यदि संरक्षित स्त्री से सम्भोग करे, तो राजा उसका सब धन छीनकर वध कर दे।

मनु—9:157—शूद्र को दूसरे वर्ण की कन्या से विवाह करने का अधिकार न होने के कारण अपनी समान जाति की ही पत्नी होती है।

मनु के अनुसार अनुलोम विवाह के फलस्वरूप उत्पन्न संतान अपने पिता की वंश—जाति का वरण करती है, न कि माता का, अर्थात् स्त्री की हैसियत उच्च वर्ण के साथ शादी करने पर भी शूद्र की ही रहती है। दूसरे कि, मनु ने ऐसे नियम बना कर आर्य—अनार्य रक्त-मिश्रण पर रोक लगा दी थी, ताकि आर्यों की रक्त-शुद्धता बनी रहे। यही कारण है कि ब्राह्मणों की यूरोपियन लोगों से 99.98 प्रतिशत समानता उनके भारत आक्रमण के 3500 सौ वर्ष के बाद भी है। **अनुलोम विवाह को छूट और प्रतिलोम विवाह को निषिद्ध किए जाने के कारण ही औरतों के आनुवांशिक संरचना Mitochondrial DNA और Y क्रोमोजोम विश्लेषण विभिन्न स्तर की औरतों में परिवर्तनशील होता है।** आर्य आक्रमणकारियों ने अपनी सुविधा के लिए जाति प्रथा के बावजूद औरतों को शिथिलता प्रदान की तथा निम्नवर्णीय औरतों के साथ इच्छानुसार सम्भोग करने का नियम बनाया। उन्हें आर्थिक-सामाजिक अधिकारों से वंचित तो किया, परन्तु उनसे अस्पृश्यता नहीं बरती, ताकि उनका आवश्यकतानुसार भोग कर सकें। **वशिष्ठ धर्मसूत्र** के अनुसार "काली जाति की शूद्र स्त्रियों के साथ सम्भोग किया जा सकता है, विवाह नहीं।" इन सबको भी DNA शोध प्रमाणित करता है। इतना ही नहीं, मूलनिवासी स्त्रियों के साथ नाजायज संबंध बनाने की प्रवृति को अनैतिकता और अश्लीलता की सभी हदें पार कर बढ़ावा दिया गया; इसका प्रमाण है रूद्रयामल तंत्र[11] का निम्नलिखित विधान, जिसमें लिखा है कि—

रजस्वला पुष्करं तीर्थ चांडाली तु स्वयंकाशी।
चर्मकारी प्रयागःस्याद्रज की मथुरा मता, अयोध्या पुक्कसा प्राक्ता॥

अर्थ—रजस्वला (माहवारी के समय) के साथ सम्भोग करने से पुष्कर जाने का फल, चाण्डाली से समागम करने से काशी यात्रा का फल, चमारिन के साथ संभोग करने से मानो प्रयाग स्नान, धोबी की स्त्री का भोग करने से मथुरा यात्रा और कंजरी के साथ व्यभिचार करने से मानो अयोध्या तीर्थ यात्रा का फल प्राप्त होता है। ब्राह्मणी शास्त्रों के इस विधान के कारण आज भी सवर्ण दलित-पिछड़ी महिलाओं के साथ बलात्कार करना अपना धर्म समझते हैं तथा सामंत लोग खुलेआम उन्हें रखैल के रूप में रखकर अपनी काम-वासना की भूख मिटाते हैं।

अपने अंतिम बसेरा को ही आर्यों ने तीर्थ-स्थल घोषित किया

यह देखने को मिलता है कि अधिकांश प्राचीन हिन्दू तीर्थ स्थल गंगा यमुना नदी के आस-पास के क्षेत्रों में ही स्थित हैं। वाराणसी, इलाहाबाद, हरिद्वार, अयोध्या, काशी, प्रयाग, मथुरा आदि हिन्दुओं के प्राचीन तीर्थस्थल हैं। इनके महात्म्य का वॅर्णन पौराणिक कथाओं में भी बढ़-चढ़ कर आया है। इतना ही नहीं, इन तीर्थस्थानों में जो पंडे होते हैं उनके पास, ख़ास कर उत्तर भारत के हिन्दू यजमानों की कई पीढ़ी की वंशावली भी रहती है। प्रत्येक पंडा किसी निश्चित क्षेत्र के लिए अधिकृत होता है और उस क्षेत्र का यजमान उसी पंडे के पास पहुंचता है। यद्यपि आजकल पंडे दलालों का प्रयोग कर दूसरे के यजमानों को भी अपने बिछाए जाल में फंसा लेते हैं।

इन सब बिन्दुओं पर विवेचना करने से स्पष्ट पता चलता है कि ऐसा होने का संबंध आर्य ब्राह्मणों के भारत आक्रमण के बाद उनके विस्तार और विकास से है। ईसा पूर्व 2500 में आर्य ब्राह्मण ईरान से भारत की तरफ प्रस्थान कर चुके थे। अफगानिस्तान होते हुए भारत की सीमा में इन्होंने ईसा पूर्व 1500 में प्रवेश किया, अर्थात् ईरान से भारत तक पहुंचने में उन्हें 1000 वर्ष लग गए। "भारत पहुंचने के 300 वर्ष बाद ईसापूर्व 1200 में वशिष्ठ, भारद्वाज और विश्वास जैसे वैदिक ऋषियों ने ऋग्वेद के मंत्रों का सृजन करना प्रारम्भ कर दिया। आर्य ब्राह्मण गंगा-यमुना के मैदानी भाग तक पहुंचते-पहुंचते ऋग्वेद लगभग पूरा कर चुके थे।"[112]

यहां उल्लेखनीय है कि आर्य-ब्राह्मणों ने रूस के वोल्गा से गंगा तक का सफर चार चरणों में पूरा किया। अर्थात् इन्होंने चार ठहरावों का प्रयोग किया, जिसमें से एक ठहराव भारत के बाहर था और तीन ठहराव भरत के अन्दर। भारत के बाहर जिन ठहरावों का इस्तेमाल आर्य लोगों ने किया, वह था ईरान। ये यहां काफी काल तक रहे होंगे, क्योंकि वर्तमान भारत में अधिकांश सभ्यता संस्कृति ईरान से ही आयातित है। डॉ. राधाकृष्णन के

अनुसार ईरानी ग्रंथ जेन्द अवेस्ता और भारतीय ऋग्वेद में काफी समानता है। इसका मतलब की ऋग्वेद में ईरानी सभ्यता संस्कृति की ही झलक है बाद में ईरानियों ने जेन्द अवेस्ता की रचना कर वहां के समाज, संस्कृति और सत्ता का वर्णन किया। प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ धर्मानन्द कोसाम्बी वैदिक संस्कृति को बाबिलोनियन संस्कृति की उपज मानते हैं, क्योंकि बाबिलोनियन संस्कृति सुमेरियन संस्कृति से बनी है और सुमेरियन लोगों का मूल वासस्थान मध्य एशिया है। चूंकि आर्यों का भी मूल वासस्थान मध्य एशिया ही है, अतः दोनों में काफी समानता है।

आर्य ब्राह्मणों ने भारत के अन्दर जिन पड़ावों या ठहरावों का इस्तेमाल किया, उसमें पहला पड़ाव था **अफगानिस्तान,** दूसरा **पंजाब** और तीसरा पड़ाव **गंगा-जमुना** का उर्वर मैदानी भाग। प्रथम आर्य-अनार्य संघर्ष आर्य ब्राह्मणों के प्रथम पड़ाव अफगानिस्तान में ही ईसा पूर्व 2500 में हुआ था। वहीं पर इन्द्र (आर्यों के अधिपति) के चुनाव की परिपाटी की शुरूआत हुई। पुरहुत प्रथम इन्द्र था। आर्य ब्राह्मणों का दूसरा बसेरा पंजाब था, जहां पर अतिविकसित प्राक्वैदिक हड़प्पा नगर का खुदाई में पता चला है। यहां पर कोई प्रभावशाली आर्य समुदाय रहा होगा जिस कारण हड़प्पा का नाम ऋग्वेद में **'हरियुपिया'** के रूप में उल्लेख हुआ है। इनका भारत में तीसरा और अंतिम पड़ाव गंगा यमुना का मैदानी भाग था। **इन नदियों के आस-पास के क्षेत्रों में इनका स्थायी वास हुआ, जिस कारण ये अपने पूर्व निवास स्थान (रूस के वोल्गा क्षेत्र और ईरान) की सभ्यता, संस्कृति और धर्म को इन्हीं क्षेत्रों में सबसे अधिक स्थापित और प्रचारित करने में कामयाब हुए।** इन स्थानों को धार्मिक महत्त्व से जोड़ कर इसे पवित्र बना दिया गया तथा इन्हें तीर्थ के रूप में घोषित कर दिया गया। आम जनता में यह धार्मिक भावना पैदा की गई कि जीवन के रहते प्रत्येक प्राणी को कम से कम एक बार इन तीर्थों को देखना और भ्रमण करना जरूरी है, अन्यथा जीवन निर्रथक है। विद्वानों के अनुसार ऋग्वेद का अंतिम मंडल आर्य ब्राह्मण अपने तीसरे पड़ाव आने तक लिख चुके थे। यही कारण है कि आर्य ब्राह्मण अपने तीसरे पड़ाव को सांस्कृतिक और धार्मिक महत्त्व का क्षेत्र घोषित करने में सफल रहें।

जैसे-जैसे काल बीतता गया, आर्य ब्राह्मण यज्ञवाद के साथ नाना प्रकार के कर्मकाण्ड पद्धति का सृजन करते गए। यद्यपि वेदों में आत्मा, ईश्वर तथा

मंदिर का कोई उल्लेख नहीं है, तथापि उत्तरवैदिक काल में इन सब के नाम पर ब्राह्मणों ने व्यापक व्यापार करना शुरू कर दिया था। इन्होंने अपने इस अंतिम पड़ाव को धार्मिक महत्त्व दे कर इसका संबंध पवित्रता से जोड़ दिया तथा मोक्ष के लिए प्रत्येक हिन्दू को तीर्थ यात्रा, दान-पुण्य और चढ़ावा अनिवार्य कर दिया। गौरतलब है कि आर्यों ने उसी स्थान को तीर्थस्थल के रूप में महत्त्व दिया, जो उनका अन्तिम पड़ाव था, जहां वे स्थायी रूप से बसे। उन्होंने उस स्थान का तीर्थ के रूप में पुराण ग्रंथों में वर्णन कर उसको धार्मिक महत्त्व प्रदान किया। प्रयाग के संबंध में संत तुलसीदास लिखते हैं—

तीरथ पति पुनि दिख प्रयागा।
निरखरवत जनम कोटि अध भागा॥[113]

अर्थात् "प्रयाग को तीर्थों का राजा कहा जाता है, जिसके एक बार दर्शन से हजारों जन्मों के पाप दूर हो जाते हैं।" आर्यों की इस धार्मिक भावना से प्रतीत होता है कि तीर्थों में प्रयाग विशेष महत्त्व का स्थान था। ऐसा प्रतीत होता है कि कोई प्रभावशाली आर्य अधिक संख्या में प्रयाग में बसे होंगे; इसीलिए शास्त्रों में इसके धार्मिक महत्त्व का खूब बखान किया गया है। आम जनता पर इसका भारी असर हुआ, यही कारण है कि दुख से व्याकुल भारत की आम जनता बगैर परिश्रम दुख निवारण हेतु इन जगहों पर खिंचा चला आता है और कथित परलोक में स्थान सुनिश्चित कराने हेतु इस जन्म के खून-पसीने की कमाई लुटा देता है।

आर्य ब्राह्मणों के वंशजों ने भी अपने पूर्वजों की धार्मिक धंधेबाजी को आगे बढ़ाते हुए समय-समय पर यहां काफी मंदिरों और मठों का निर्माण किया तथा कर्मकाण्ड आदि को बढ़ावा दिया, जो आज तक जारी है। चूंकि ब्राह्मण ब्रह्मा के मुख से पैदा हुए हैं, उनको श्रम नहीं करना है, केवल शिक्षा और पूजा का काम करना है, इसीलिए बाद की पीढ़ियों ने गंगा-यमुना के तटीय इलाके को धार्मिकता और पवित्रता से जोड़ा तथा मुफ्त में पेटभरी का उपाय किया। गंगा का उल्लेख वेद में भी आया है, परन्तु पौराणिक ग्रंथों में तो गंगा का वर्णन बड़े ही चमत्कारी, मनोहारी और सर्वफलदायिनी गंगा मइया के रूप में आया है। आज भी प्रत्येक हिन्दू गंगाजल को पवित्र मानता है तथा उसका उपयोग धार्मिक अनुष्ठानों में करता है। गंगाजल के प्रति

हिन्दुओं में पवित्रता के भाव उत्पन्न करने में प्रकृति का भी हाथ है। यदि गंगाजल को किसी वर्तन में सालों रखा जाए, तो भी उसमें जीवाणु नहीं लगते हैं; यही प्राकृतिक विशेषता है गंगाजल की, और गंगा का यही गुण आम जनता में श्रद्धा उत्पन्न करता है। परन्तु गंगा के पानी में जीवाणु क्यों नहीं लगते इसका एक वैज्ञानिक कारण है और वह है गंगा के पानी में **'वैक्टीरियोफेज'** का होना। वैक्टीरियोफेज एक ऐसा जीवाणु है जो रोग फैलाने वाले जीवाणु को नष्ट कर देता है, जिस कारण पानी जीवाणुमुक्त रहता है। गंगा की पवित्रता का यही रहस्य है। परन्तु जब उसी गंगाजल की रासायनिक प्रक्रिया (वाटर ट्रीटमेन्ट) द्वारा शुद्धिकरण के बाद पीने के पानी के रूप में शहर में आपूर्ति की जाती है और उस जल को किसी बर्तन में बहुत दिन तक रखा जाता है तो, उसमें जीवाणु लग जाते हैं। वाटर ट्रीटमेन्ट के दौरान प्रयुक्त रासायनिक पदार्थ से वैक्टिरीयोफेज मर जाता है जिससे जीवाणु की वृद्धि होने लगती है और पानी सड़ जाता है। पाठकगण गंगाजल की पवित्रता के इस मिथक की वास्तविकता जान कर पंडों के जाल में नहीं फसेंगे, ऐसी आशा है।

आर्य ब्राह्मण अपने अस्तित्व और प्रभुत्व को टिकाए रखने के लिए समय-समय पर मंदिरों और तीर्थों का नवनिर्माण करते रहते हैं। इसी संदर्भ में आदिशंकराचार्य ने भारत की चारों दिशाओं में ब्राह्मणी संस्कृति के विस्तार के लिए चार धाम—केदारनाथ, कन्याकुमारी, द्वारका और जगन्नाथपुरी स्थापित किया, जिसमें ब्राह्मण जाति के 'शंकराचार्य' नियुक्ति की परंपरा आज तक चल रही है। अक्षर धाम, अयोध्या में प्रस्तावित राम मंदिर उसी कड़ी का एक हिस्सा है।

अतः वे लोग, जो यह समझते हैं कि हरिद्वार, वाराणसी, काशी, अयोध्या, प्रयाग, जगन्नाथपुरी, द्वारका, कुंभ आदि स्थानों में घूमने और नहाने से पाप कट जाएगा; दुख से मुक्ति मिल जाएगी तथा मरने के बाद बैकुण्ठ धाम मिल जाएगा, वाराणसी में श्राद्ध करने और गया में पिंडदान करने से पितरों को स्वर्ग मिल जाएगा, उनकी यह भूल है। यदि ऐसा होता तो गंगा नदी में पाए जाने वाले मछली, मेढक, मगर आदि तथा तीर्थस्थानों में भटकने वाले कुत्ता, बिल्ली, खच्चर को पहले स्वर्ग की प्राप्ति होती। सच्चाई यह है कि उनकी मुक्ति और उन्नति उनके स्वयं के परिश्रम और संघर्ष से ही संभव है। और 4 मार्च, 1933 को बंबई में आयोजित अछूत

बैठक में बाबासाहेब द्वारा दी गई सीख का हमें पूर्ण मनोयोग से अमल करना चाहिए। इस बैठक में उन्होंने कहा था कि—**"तुम्हें अपनी दासता स्वयं मिटानी होगी, अपनी दासता मिटाने हेतु ईश्वर अथवा अतिप्राकृतिक शक्ति पर निर्भर मत होओ। धार्मिक ग्रंथों, तीर्थस्थानों और उपवासों के प्रति तुम्हारी आस्था तुम्हें दासत्व और दरिद्रता से मुक्त नहीं कर देगा। तुम्हारे पूर्वज पीढ़ियों से ऐसा करते आ रहे हैं, लेकिन तुम्हारे जीवन की दयनीयता किसी भी प्रकार कम नहीं हुई। तुम्हारा धार्मिक उपवास, तपस्या और प्रायश्चित तुम्हें भूखे मरने से नहीं बचा पाया है। अतः तुम्हें राजनीतिक शक्ति प्राप्त करनी होगी ताकि तुम अपने उद्धार के लिए कानून बना सको, अतः तुम अपना ध्यान पूजा-पाठ से हटा कर विधि निर्माणकर्ता की शक्ति प्राप्त करने में लगाओ। इसी में तुम्हारी मुक्ति निहित है। तुम्हें इसके लिए चौकन्ना मजबूत, सुशिक्षित और स्वाभिमानी बनना पड़ेगा।"** वास्तव में तीर्थस्थानों का केवल भौगोलिक और ऐतिहासिक महत्त्व है। ये स्थान आर्य आक्रमण के निशानी का प्रतीक हैं। मूल निवासियों के उर्वर मैदानी इलाकों पर आर्यों द्वारा कब्जा जमाने तथा उन्हें गुलाम बनाने का प्रतीक है। ऐसे प्रतीक स्थलों को तीर्थ मानना, उसे ईश्वरीय समझना अपनी आजादी धन, समय और स्वामित्व का नाश करना है। मूलनिवासी दलित-बहुजनों के लिए तीर्थ तो सारनाथ, लुम्बनी, कुशीनगर, बोधगया, राजगृह है जो बहुजन उद्धारक महामानव बुद्ध का जन्म और कर्मस्थली है। बुद्ध ने बहुजनों को असमानता पर आधारित ब्राह्मणवादी गर्त से निकाल कर समतावादी समाज में जीने का अवसर प्रदान किया है। इनकी प्रेरणा पाकर विश्वविभूति बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर हमें ब्राह्मणी गुलामी से मुक्ति दिला कर सम्मान के साथ जीने का मार्ग दिखाया। हमारे देवता, भगवान बुद्ध, महावीर, कबीर, रविदास, रामासामी नायकर, ज्योतिबा फुले, संत गाड़गे, गौरेया बाबा, चौहरमल क्षत्रपति शाहूजी महाराज, बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर हैं। हमें इनका स्मरण करना चाहिए तथा इनसे जुड़े, साहित्य और क्षेत्रों से संबंध रखना चाहिए। दलित-बहुजनों का इसी में कल्याण है।

विदेशी पहचान छिपाने का धूर्त प्रयास

भारत के मूल निवासियों को आपस में लड़ाना, मतभेद पैदा करना और उन पर राज करके सुख भोगना, विदेशी आर्य ब्राह्मणों की पुरानी पहचान रही है। इन्हें मालूम था कि इनकी चालबाजी एक दिन पकड़ी जाएगी, इसीलिए इन्होंने उत्तरवैदिक धर्मशास्त्रों में शूद्रों के प्रति कई निर्योग्ताएं लाद दीं। शास्त्रों में यह भी लिखा कि "शूद्र वेद पढ़े, तो जीभ काट देना चाहिए, सुने तो कान में शीशा पिघला कर डालना चाहिए और याद कर लें, तो शरीर टुकड़े–टुकड़े कर देना चाहिए (गौतम धर्मसूत्र)।" आज आनुवांशिक शोधों से यह प्रमाणित हुआ है कि आर्य ब्राह्मण विदेशी और आक्रमणकारी हैं, तो ये देश में कई तरह के विरोधाभास पैदा करने में लग गए हैं ताकि बहुजनों में एकता नहीं बन सके तथा असली मुद्दा गौण हो जाए। जब आर्य ब्राह्मणों को लगा कि वे विदेशी हैं और अल्पसंख्या में हैं, तो उन्होंने मुसलमान आक्रमणकारियों का दिया हुआ नाम **'हिन्दू'** अपना लिया और इस नाम को मूलनिवासियों पर थोप दिया ताकि उन पर हिन्दू के नाम पर दीर्घकाल तक राज किया जा सके। यह सर्वविदित है कि **'हिन्दू'** नाम मुसलमानों की देन है। इस प्रकार 'हिन्दू' शब्द भी इंडिया की तरह विदेशी[114] ही है।

विदेशी आर्य ब्राह्मणों अपने कुत्सित उदेश्यों के पूर्ति हेतु बेशर्म दलीलें देने लगे कि सिन्धुघाटी सभ्यता के समकालीन एक सभ्यता विकसित हुई थी, जिसका नाम था **'सरस्वती सिंधु सभ्यता'**[115] था। ऋग्वेद में उल्लेखित सरस्वती नदी का संबंध वे वर्तमान की **'घाघरा'** नदी से जोड़ने लगे तथा कहने लगे कि सिंधुघाटी सभ्यता ही वास्तव में सरस्वती सिंधु सभ्यता है, जो वर्तमान में हिन्दू सभ्यता/ब्राह्मणी सभ्यता के नाम से जानी जाती है। यह एक कपट भरा निर्लज तर्क है। वास्तव में ऋग्वेद में वर्णित सरस्वती नदी ईरान की **'हरहवैती'**[116] नदी को इंगित करती है। 'सरस्वती'[117] का अर्थ होता है, सर=पानी+स्वति=बहता हुआ। ऋग्वेद में इसका उल्लेख मूलतः धन (ऋ.–6/61/3,4,6,11,14) की देवी एवं शक्तिवान जलस्रोत के रूप में हुआ है। ऋग्वेद का अन्तःसाक्ष्य बताता है कि इस नदी का मूल जल-भरण स्रोत पहले ही लुप्त[118] हो चुका था और इसीलिए यह नदी एक सीमावर्ती झील (समुद्र) में जा समाती रही होगी। ब्राह्मण साहित्य[119] (जैमिनीय

ब्राह्मण—2.29,7) में लिखा मिलता है कि सरस्वती रेगिस्तान में विनशन/उपमज्जन नामक स्थान पर विलुप्त हो गई।

"उच्चवर्णीय जातियां, आर्ययूरेशियन हैं" आनुवांशिक शोध से प्रमाणित के लेखक डॉ. पी.डी. सत्यपाल लिखते हैं कि "राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ से संबंध रखने वाले स्वंयभू वैदिक इतिहासकारों, साहित्यकारों एवं पुरातत्वेताओं जैसे—एस. तालेगारी, के.डी. सठना, एस.पी. गुप्ते, बी.एस. गिडवानी आदि ने अपनी धोखे भरी बातों से यह प्रमाणित करने की कोशिश की आर्य लोग विदेशी नहीं हैं।"[120] इसके लिए लिए उन्होंने बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर के नाम का भी दुरुपयोग किया है, ताकि मूलनिवासियों में इस कपटपूर्ण तर्क की स्वीकृति मिल सके। हिन्दूवादी विद्वानों ने इसके लिए नकली खुदाई कराकर स्वयं द्वारा प्रत्यापित सामग्रियों को निकालकर कम्प्यूटर के द्वारा अपने तर्क को प्रमाणित करने की कुचेष्टा किया। इस संदर्भ में एन.एस. राजाराम नामक साफ्टवेयर व्यवसायी तथा स्वयंभू इतिहासकार का छल तब पकड़ लिया गया, जब वह मूलनिवासी संस्कृति के प्रतीक 'सांड' को विदेशी आर्य संस्कृति के प्रतीक 'घोड़ा' के रूप में परिवर्तन करने की कोशिश कर रहा था।"

तालेगरी साहब ने पुराणों के साक्ष्य को विश्वसनीय मानते हुए आर्यों का मूल निवास उत्तर प्रदेश होने की बात कही है, परन्तु भाषा विज्ञानी और वैदिक साहित्य के प्रकांड पंडित माइकेल विट्ज़ेल के अनुसार "पुराण साहित्य की रचना का उद्देश्य धर्मोपदेश मात्र है। इसका उद्देश्य ऐतिहासिक या तर्कपरक पांडित्य प्रदर्शन कदापि नहीं था इसलिए आज भी पुराण साहित्य पर केवल धार्मिक दृष्टि से विचार करने की आवश्यकता है।"[121] तालेगरी ने अपने दावे की पुष्टि में ऋग्वेद में प्रयुक्त 'जाह्नवी' शब्द का भी हवाला दिया है, जिसे उन्होंने गंगा के पर्यायवाची अर्थ में लिया है। ऋग्वेद में 'जाह्नवी' शब्द का प्रयोग मात्र दो बार मंत्र संख्या 1/116/16 और 3/56/6 में हुआ है। माइकेल विट्ज़ेल ने गंभीर गवेषणा के पश्चात यह निष्कर्ष निकाला है कि दोनों प्रसंगों में 'जाह्नवी' का अर्थ गंगा नहीं है; यह एक कबीलाई[122] शब्द है। इस तथ्य को सायण सहित ऋग्वेद के अन्य भाष्यकारों ने माना है। इस प्रकार विट्ज़ेल के शब्दों में तलेगरी ने अन्यत्र कहीं इस शब्द का वास्तविक अर्थ जाने 'जाह्नवी' को गंगा नदी का पर्याय मानने में जल्दीबाजी कर दी। अतः ऋग्वेद में 'जाह्नवी' शब्द गंगा क्या, किसी अन्य नदी का भी पर्याय नहीं है। यह गंगा के

अर्थ में केवल पुराणों और महाकाव्यों में लिखा मिलता है, जो एक अनोखा[123] विचार है। यदि यह मान लिया जाए कि ऋग्वेद की रचना पंजाब में हुई थी और इसकी रचना काल 4000-5000 ई.पू. है जैसा कि मनुवादी इतिहासकारों का दावा है, तो फिर प्रश्न उठतें हैं कि ऋग्वेद में घोड़े[124] का पालतु पशु के रूप में उल्लेख क्यों मिलता है? जबकि भारतीय उपमहाद्वीप में 1500 ई.पू. से पहले घोड़े का अस्तित्व था ही नहीं, अश्ववाहित रथों का उल्लेख क्यों मिलता है? रथ का निर्माण सर्व प्रथम दक्षिणी रूस में 2000 ई.पू. के आसपास हुआ था। डॉ. नवल वियोगी लिखते हैं कि "हड़प्पाई सीलों में जिनमें विभिन्न जानवरों के चित्र खुदे हैं, कोई भी घोड़े का चित्र नहीं मिला है। अगर सिंधु-घाटी के लोग आर्य होते, तो अवश्य ही उन्होंने उन सीलों में घोड़े को स्थान दिया होता। **हड़प्पाई सभ्यता में पाई गई हड्डियों से निश्चित रूप से प्रमाणित नहीं होता कि** 2000 ई.पू. से पहले भारतीय प्रायद्वीप में घोड़े का कहीं अस्तित्व था।" मगर उसके बाद आश्चर्यजनक ढंग से उसका विकास होता है। धर्मानंद कोसंबी[126] ने लिखा है कि आर्य आक्रमण के पहले दास (अनार्य) घोड़ों से परिचित नहीं थे, कारण मोहनजोदड़ो और हरप्पा में मिले सिक्कों पर अन्य पशुओं के चित्र तो अंकित किए गए हैं, पर घोड़े का एक भी चित्र नहीं मिला। इसलिए दास लोगों की पराजय के अनेक कारणों में उनके पास घुड़सवारों का न होना, भी एक मुख्य कारण रहा होगा। ऋग्वेदकालीन लोग जौ खाते थे, यदि ऋग्वेद की रचना सिंधु सभ्यता से पहले पंजाब में हुई होती, तो कम से कम इसमें यहां के मुख्य अनाज गेहूं[127] की चर्चा यत्र-तत्र अवश्य होनी चाहिए थी। यदि ऋग्वेद को 5000 ई.पू. की रचना माना जाय तो इसमें केवल 'पुर' का ही उल्लेख क्यों है,[128] सिंधु सभ्यता के बड़े-बड़े ईंटों वाले मानव निर्मित घरों, गावों और नगरों का उल्लेख क्यों नहीं है? ऋग्वेद में जो भी चर्चा है वह 'भग्नावशेषों'[129] की है। वैदिक साहित्य में 'ग्राम'[130] शब्द अस्थायी और चल आवास का वाचक है।

"21वीं सदी में राष्ट्रीय स्वये सेवक संघ ने बी.जे.पी. सरकार के माध्यम से सभी वैज्ञानिक एवं शैक्षणिक संस्थानों जैसे ICHR, IAAS, UGC, CSRI, NCERT इत्यादि में अपने लोगों को भर दिया, ताकि इच्छानुसार पाठ्यक्रमों को बदला जा सके तथा सभी वैज्ञानिक खोजों को वेद, रामायण, महाभारत के अस्त्र-शस्त्रों से जोड़ा जा सके।"[131] यही कारण है कि जब मिसाइल मैन ए.पी. जे. अब्दुल कलाम ने मिसाइल निर्माण किया, तो हिन्दूवादी सरकार ने कहा

"कलाम को यह प्रेरणा भगवान राम से मिली थी।" ब्राह्मणवादी विदेशी आर्य ब्राह्मणों ने स्कूली पाठ्यक्रमों में भी ज्योतिष, कर्मकांड तथा पुरोहिताई को फिर से शामिल किया। उस दौरान बी.जे.पी. सरकार के मंत्री मुरली मनोहर जोशी द्वारा ब्राह्मणवाद को खूब हवा दी गई। इतना ही नहीं, इतिहास भी बदलने का प्रयास किया गया, यह कहकर कि भारत का इतिहास विदेशियों ने लिखा है, जो गलत है। ब्राह्मणवादियों ने यह भी कहना शुरू कर दिया है कि आर्य बाहर से भारत नहीं, बल्कि भारत से ही बाहर जा कर फैल गए थे। यदि यह तथ्य मान भी लिया जाए, तो घोड़ा, रथ, दाहकर्म, यज्ञ, पशुबलि, तीन वर्ण, पितृ प्रधान समाज, अग्नि वेदी पूजा आदि जिनका प्रचलन ईसा पूर्व 1500 से पहले भारत में नहीं था, अचानक इन सबों का वर्णन वेदों में कैसे आया? वास्तव में ये सब आर्य आक्रमण के पश्चात् ही भारत में प्रचलित हुए। ऋग्वेद में वर्णित उपर्युक्त प्रचलन ईरानी समाज में प्रचलित था, जिसका वर्णन ज़ेन्द अवेस्ता में आया है। जेन्द अवेस्ता और वेद में वर्णित तथ्यों में काफी समानता है। इन प्रमाणों के उत्तर में आर्य ब्राह्मण क्या कहेंगे? जो भी कहेंगे झूठ और दलील ही होगा।

"आर्य ब्राह्मण विदेशी हैं" यह इतना अकाट्य तथ्य है कि राजाराम मोहन राय और बालगंगाधर तिलक जैसे हिन्दूवादी ब्राह्मण विद्वान भी यह नहीं कह पाए कि आर्य भारत के मूलनिवासी थे। "रमेश चन्द्र मजूमदार, के.ए. नीलकंठ शास्त्री, देवदत, रामकृष्ण भंडारकर, प्रो. रामशरण शर्मा, हेमचन्द्र राय चौधरी, डी.डी. कोसंबी और महापंडित राहुल सांकृत्यायन जैसे इतिहास और संस्कृति के विद्वानों ने आर्य ब्राह्मणों के विदेशी होने के अकाट्य तर्क दिए हैं। फिर भी **"हिन्दू सम्प्रदायवादी प्रचार करते हैं कि आर्य भारत के मूलनिवासी थे और यहां से वे विश्व के दूसरे भाग में फैले। ये ऐसा प्रचार किसी ठोस शोध या अध्ययन के आधार पर नहीं करते हैं, बल्कि राजनीतिक और आक्रामक भावनाओं से अभिभूत होकर ऐतिहासिक तथ्यों की तोड़-मरोड़ करते हैं। प्रचारक सोचते है कि यदि आर्यों का मूल वासस्थान भारत से बाहर माना जाएगा, तो वे स्वयं विदेशी समझे जाएंगे और आर्य उसी कोटि में रखे जाएंगे, जिस कोटि में वे स्वयं मुसलमानों और ईसाइयों को रखते हैं।"**[132]

विट्ज़ेल लिखते हैं कि "भारत पर विदेशी आक्रमणकारियों की एक लंबी सूची है, फारसी लोग (530 ई.पू.), सिकंदरनीत यूनानी (327 ई.पू.), बैक्ट्रियाई

यूनानी (150 ई.पू. के आसपास), उत्तर ईरानी शक (150 ई.पू.), इसी क्रम में गुर्जरों, अरबों सिंध में, मध्य एशिया के गजनी, तुर्कों और गुलाम वंश के आक्रमणकारी, मुगल और अफगान, यूरोपवासी पुर्तगाली और अंत में ब्रितानी साम्राज्यवादी लोग। फिर भी भारतीय इतिहास के वर्तमान पुनर्रचयिताओं ने क्यों इन आर्यों को ही ये लेखक विदेशी मानना स्वीकार नहीं करते? उत्तर साफ और सीधा है। उत्तर है—ये लेखक आर्य भाषा और प्राचीन भारतीय साहित्य तथा उससे संबद्ध धार्मिक परंपराओं को तो सर्वोपरि तथा वेदों को इस उपमहाद्वीप के बाहर के भूभाग में उपजा, या कहें रचा हुआ मानने को कदापि तैयार ही नहीं हैं। **इसके साथ विदेशी विशेषण जोड़ते ही जैसे इन्होंने बिजली का नंगा तार छू लिया हो, वैसे उछल पड़ते हैं। वेदों को विदेशी भूमि की रचना स्वीकार करने की बात कहते ही जैसे भूचाल आ गया हो; इनके हिंदुत्व की विचारधारा वाली आधारभूमि हिलने लगती है। इनके टिके पांव लड़खड़ाने लगते हैं। इतिहास के पुनर्रचनाप्रिये इन लेखकों के स्वप्नमहल की नींव खोखली जो है। डर है तो बस इतना भर कि वह कब भरभरा कर भूमिसात हो जाए।"**[133] आगे विट्जेल महोदय लिखते हैं[134]—स्वदेशी मूल वाली स्थापना के समर्थकों ने अपनी मतवाद की पुष्टि में जितने भी साक्ष्य प्रस्तुत किए हैं, यदि उन सबको एकत्र किया जाए और उनकी गहराई से छानबीन करने की डगर पर चल पड़ें, तो हमारे पांव लहूलुहान हो जाएंगे। ऐसा न करने में ही हमारी भलाई है।

विदेशी आर्य ब्राह्मणों की चालबाजी और विरोधाभासी तर्क अब नहीं चलने वाले हैं। आनुवांशिक शोध से ब्राह्मणवादी शक्तियों के मुख से मुखौटा हट गया है। इस तथ्य को सभी मूलनिवासियों में प्रचारित करना है तथा यह बताना है कि भारत में विदेशी आर्य ब्राह्मणों ने क्या-क्या गलतियां की हैं। उन्होंने अपनी कूटनीतिक चाल से एक क्रूर प्रवृति से भारतीय साम्राज्य को, जो शांति समभाव, समृद्धि एवं एक आदर्श सामाजिक व्यवस्था पर आधारित था, उसे कट्टरवाद, कर्मकाण्ड, घृणा, असमानता तथा हिंसा के साम्राज्य में परिवर्तित कर दिया, जिसे अब उछालने की आवश्यकता है। आर्यों ने जिस ढिठाई से इस देश के मूलनिवासियों पर गुलामी को थोपा है, उन तथ्यों का पर्दाफाश करना है (डॉ. पी.डी. सत्यपाल)।"

इतिहास से सबक

जिस समाज का अपना इतिहास मालूम नहीं होता है उसका भविष्य अंधकार में होता है और जिसका भविष्य अंधकार में होता है, वह समाज वैचारिक गुलामी से कभी मुक्त नहीं होता। उसकी उन्नति और उद्धार का मार्ग सदा के लिए अवरुद्ध हो जाता है। **"इतिहास प्रेरणा देता है, प्रेरणा से स्वाभिमान जगता है, मनोबल बढ़ता है, स्वाभिमान और मनोबल से हक के लिए संघर्ष की शक्ति प्राप्त होती है और संघर्ष से सत्ता मिलती है।"** आज सभी मूलनिवासी दलित-बहुजन समाज का कर्तव्य है कि जिस घृणापरक प्रवृतियों के साथ विदेशी आर्य ब्राह्मणों ने देश के मूलनिवासियों को पराजित और विभाजित करके गुलाम बना रखा है, मूलनिवासी इतिहास को मिटा डाला है, उन प्रवृतियों को समूल नाश करना है तथा नया इतिहास गढ़ना है। इतिहास और इस आनुवांशिक शोध से सीख लेते हुए हमें चट्टानी एकता कायम करनी है, समान विचार और समान कार्यक्रम बनाना है तथा बहुजन समाज, बहुजन सत्ता, बहुजन संस्कृति और बहुजन धर्म की स्थापना करनी है। इसके लिए प्रत्येक को निजी क्षुद्र स्वार्थों और महत्त्वकाक्षाओं की तिलांजली देनी होगी तथा त्याग और संघर्ष के लिए सदैव तत्पर रहना होगा; तभी बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर के सपनों के आदर्श समाज अर्थात् समता, स्वतंत्रता, भाईचारा तथा न्याय पर आधारित समाज की स्थापना की जा सकती है, मूलनिवासी गौरव को हासिल किया जा सकता है।

समृद्ध और विकसित भारत के लिए आर्य ब्राह्मणों द्वारा भी वर्तमान ब्राह्मणी-व्यवस्था का पुनर्मुल्यांकन समय की मांग है। आस्ट्रेलियाई और अमेरिकी श्वेतों से भारतीय आर्य ब्राह्मण प्रेरणा लेकर एक नया इतिहास गढ़ सकते हैं। जिस प्रकार ब्राह्मणों द्वारा भारत का शूद्रातिशूद्र वर्ग हजारों साल से शास्त्रीय निर्योग्यताओं के बोझ तले दबकर चरम शोषण के दौर से गुजरा है, उसी प्रकार आस्ट्रेलिया और अमेरिका के अश्वेत भी वहां के श्वेत समाज द्वारा लगातार अवसरों से वंचित किए गए थे। परन्तु इन देशों की श्वेत-सोच में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है। "सन् 2008 में आस्ट्रेलिया के श्वेत समाज

और सरकार ने वहां के मूलनिवासियों से उनके साथ अतीत में की गई दमन और शोषण के लिए माफी मांगी। नस्ल भेद के आधार पर आस्ट्रेलिया में गोरे लोगों ने वहां के मूलनिवासियों के साथ नाना प्रकार से अपमान और उत्पीड़न किया था। यह आस्ट्रेलिया के ही जागरुक सरकार और समाज की उदारता और महानता की अद्भुत मिसाल है कि उसने अपनी गलती का प्रायश्चित वहां के अश्वेतों को अधिकार और सम्मान दे कर किया। इसी प्रकार अमेरिका की सरकार ने भी अगस्त 2008 में दास-प्रथा के लिए वहां के मूलनिवासियों (अफ्रीकन-अमेरिकन) से क्षमा मांगी है। अमेरिकी सिनेट ने 1988 में अमेरिका के मूलनिवासी रेड इन्डियन्स पर किए गए अत्याचार के लिए क्षमा मांगते हुए 1877 में उनकी जमीन गैर कानूनी रूप से छीनने के एवज में 12.2 करोड़ डालर का मुआवजा दिया था।"[135] ऐसी मिसाल भारत में भी पेश की जा सकती है, यदि सत्य को स्वीकार कर बुराई के महिमामंडन से परहेज किया जाए। कितना अच्छा होता! यदि कोई ब्राह्मण-वंशज आगे आ कर आर्य-पूर्वजों द्वारा निर्मित असमानता पर आधारित ब्राह्मणी व्यवस्था के खिलाफ बगावत की बागडोर थाम लेता तथा बहुजन-ब्राह्मण बंधुत्व स्थापित करने के लिए तूफानी संघर्ष करता।

॥ भवतु सब्ब मंगलम् ॥

संदर्भ

1. भारत के मूलनिवासी और आर्य आक्रमण—एस.के. विश्वास
2. "उच्चवर्णीय जातियां आर्य यूरेशियन हैं" आनुवांशिक शोध से प्रमाणित—डॉ. पी.डी. सत्यपाल, प्रस्तावना से
3. मूल भारतवासी और आर्य—भिक्खु बोधानंद महाथेरा, पृ. 122
4. बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर राइटिंग एड स्पीचेज वॉल्यूम-7, पृ. 129
5. भगवान बुद्ध : जीवन दर्शन—डी.डी. कोसाम्बी, पृ. 29
6. बौद्ध धर्म मोहनजोदड़ो हड़प्पा नगरों का धर्म, एस.के. विश्वास, पृ.12
7. हिन्दू जाति का उत्थान और पतन—पं. रजनीकांत शास्त्री
8. बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर के सम्पर्क में 25 वर्ष—विद्यावाचस्पति सोहनलाल शास्त्री, पृ. 82
9. भारत की गुलामी के सात कारण—भद्रशील रावत, पृ.13
10. बौद्धधर्म : मोहनजोदड़ो हड़प्पा नगरों का धर्म, पृ.10
11. वही, पृ. 11
12. वही, पृ. 11
13. वही, पृ. 10
14. वही, पृ.10
15. वही, पृ. 21
16. चमार जाति का गौरवशाली इतिहास—सतनाम सिंह, पृ. 45
17. एंशिएन्ट इंडिया, पृ. 30-31
18. सिन्धु घाटी सभ्यता के सृजनकर्ता शूद्र और वणिक, पृ. 121
19. आर्यों के भारतीय मूल की कल्पना, पृ. 68
20. वही, पृ. 44
21. सिन्धु घाटी सभ्यता के सृजनकर्ता शूद्र और वणिक—डॉ. नवल वियोगी, पृ. 60
22. वही,
23. सिंधु सभ्यता—डॉ. किरण कुमार थपल्याल, पृ. 185
24. ऋग्वेद-10/116/4, 1/103/6, 1/51-8, 1/129/4,
25. ऋग्वेद-5/42/9
26. ऋग्वेद-10/5/8
27. ऋग्वेद-10/22/8, 10/70/11
28. ऋग्वेद-3/34/10
29. ऋग्वेद-8/3/9
30. ऋग्वेद-10/22/8
31. ऋग्वेद-1/33/4-5
32. बौद्ध धर्म मोहनजोदड़ो हडप्पा नगरों का धर्म—एस.के. विश्वास, पृ. 132
33. वही, पृ. 133

34. वह, पृ. 135
35. वही, पृ. 138
36. वही, पृ. 39
37. वही, पृ. 143
38. बौद्ध धर्म मोहनजोदड़ो हडप्पा नगरों का धर्म—एस.के. विश्वास, भूमिका से
39. बौद्धधर्म : मोहनजोदड़ों हडप्पा नगरों का धर्म—एस.के. विश्वास, भारत के मूलनिवासी और आर्य आक्रमण—एस.के. विश्वास
40. वही, पृ. 34-35
41. अशोका द बुद्धिष्ट इमपेरर ऑफ इंडिया—विंसेंट स्मिथ, पृ. 39
42. वही, पृ. 40
43. नाग सभ्यता का इतिहास—डॉ. नवल वियोगी,
44. बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर राइटिंग एण्ड स्पीचेज वॉल्यूम-7, पृ. 298
45. बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर राइटिंग एण्ड स्पीचेज वॉल्यूम-7, पृ. 300
46. दलित फोबिया—चंद्रभान प्रसाद, पृ. 36, संदर्भ लेक्चरर्स ऑन द इंडियन हिस्ट्री—डॉ. बी.आर. भण्डारकर
47. बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर राइटिंग एण्ड स्पीचेज वॉल्यूम-7, पृ. 300
48. एंशिएन्ट हिस्ट्री—आर.सी. मजुमदार, पृ. 22
49. सिन्धुघाटी सभ्यता के सृजनकर्ता शूद्र और वणिक—डॉ. नवल वियोगी, पृ. 113
50. ऋग्वेद-1/21/5
51. ऋग्वेद-7/18/13, 7104/8
52. ऋग्वेद-3/62/14, 10/85/44, 10/165/1, 10/97/20
53. बौद्ध धर्म मोहनजादड़ो हड़प्पा नगरों का धर्म—एस.के. विश्वास, पृ. 26
54. भारत के मूलनिवासी और आर्य आक्रमण—एस.के. विश्वास, पृ.
55. सिन्धुघाटी सभ्यता के सृजनकर्ता शूद्र और वणिक, पृ. 120, 121
56. द फाउन्डर ऑफ इंडुस वैली सिविलिजेशन एण्ड देयर लेटर हिस्ट्री—डॉ. नवल वियोगी, पृ. 136
57. वोल्गा से गंगा, राहुल सांकृत्यायन, पृ. 43
58. सिन्धुघाटी सभ्यता के सृजनकर्ता शूद्र और वणिक, पृ. 121
59. सिन्धुघाटी सभ्यता के सृजनकर्ता शूद्र और वणिक, पृ. 122, संदर्भ इजाक टेलर
60. ऋग्वैदिक आर्य-राहुल सांकृत्यायन
61. ऋग्वेद-4/26/3, 1/130/7, 1/112/14
62. वौद्ध धर्म मोहनजादड़ो हड़प्पा नगरों का धर्म, पृ. 164, संदर्भ—ऋग्वेद-7/18/17, 7/83/16
63. ऋग्वेद-8/14/15
64. ऋग्वेद-2/15/9

65. ऋग्वेद-1/130/8
66. ऋग्वेद-2/15/5, 2/14/6
67. सिन्धु घाटी सभ्यता के सृजनकर्ता शूद्र और वणिक—डॉ नवल वियोगी, पृ. 58
68. भारतीय संस्कृति और अहिंसा—धर्मानंद कोसंबी, पृ. 35
69. वयं रक्षामः—आचार्य चतुरसेन, पृ. 35
70. भारतीय संस्कृति और अहिंसा
71. डॉ. नवल वियोगी द्वारा मेरे नाम लिखे एक पत्र के अनुसार
72. इंडियन हिस्ट्री—डी.डी. कोसंबी, पृ. 79
73. भारतीय संस्कृति और अहिंसा—धर्मानंद कोसंबी
74. धर्मग्रंथों का पुनर्पाठ—मुद्राराक्षस, पृ. 92
75. वही, पृ. 93
76. वही, पृ. 85
77. आर्य संस्कृति की खोज—रामशरण शर्मा, पृ. 49
78. वही
79. आर्यों के भारतीय मूल की कल्पना, पृ. 128
80. पवित्र गाय का मिथक—द्विजेन्द्र नारायण झा, पृ. 22
81. वही, पृ. 22
82. भारतीय दर्शन—भाग-एक
83. मूल भारतवासी और आर्य—भिक्खु बोधानंद महाथेरा, पृ. 40
84. द फाउन्डर ऑफ इंडुस वैली सिविलिजेशन एण्ड देयर लेटर हिस्ट्री—डॉ. नवल वियोगी, पृ. 126
85. मूल भारतवासी और आर्य, पृ. 45, 46, 94
86. सत्यार्थ प्रकाश, अष्टम समुल्लास—दयानंद सरस्वती
87. डिस्कवरी ऑफ इंडिया—जवाहर लाल नेहरू, पृ. 73,85,86, प्रकाशक—जवाहर लाल मेमोरियल फंड, दसवीं अनुवृत्ति
88. "उच्चवर्णीय जातियां आर्य यूरेशियन हैं" आनुवांशिक शोध से प्रमाणित, पृ. 4
89. वही, पृ. 4
90. मूल भारतवासी और आर्य, पृ. 92
91. बौद्ध धर्म मोहनजोदड़ो हड़प्पा नगरों का धर्म—एस.के. विश्वास, पृ. 4, संदर्भ—स्वामी विवेकानंद कंपलीट वर्कस्, वॉल्यूम 2, पृ. 482
92. मूल भारतवासी और आर्य, पृ.-98
93. बौद्ध धर्म मोहनजोदड़ो हड़प्पा नगरों का धर्म, पृ. 5, संदर्भ—एम.ओ. मथाई, रेमीनेन्सेज ऑफ नेहरु एज, पृ. 94
94. 'उच्चवर्णीय जातियां, आर्ययूरेशियन हैं' आनुवांशिक शोध से प्रमाणित—डॉ. पी.डी. सत्यपाल, आन्ध्र विश्वविद्यालय, विशाखापट्टनम (आ.प्र.)

95. वही, पृ. 14
96. 'उच्चवर्णीय जातियां, आर्य यूरेशियन हैं' आनुवांशिक शोध से प्रमाणित, पृ. 15
97. ऋग्वेदिक आर्य—राहुल सांकृत्यायन, पृ.
98. सिंधु सभ्यता—डॉ. किरण कुमार थपल्याल, पृ. 330, 311
99. इंद्र का अर्थ होता है आर्यों के अधिपति, सेनानायक। इंद्र को पुरंदर भी कहते हैं, जिसका अर्थ है नगरों का विध्वंश करने वाला। ऋग्वेद के अनुसार इंद्र सोमपान (एक प्रकार का भांग जैसा नशीला पेय पदार्थ) कर मस्त रहने वाला तथा बैल और भैंसा का मांस खाने वाला है। इंद्र कोई व्यक्ति का नाम नहीं, बल्कि एक पदवी है। आर्यों का प्रथम इंद्र पुरहुत था।
100. मूल भारतवासी और आर्य—भिक्खु बोधानंद महाथेरा, पृ. 44 (मूलनिवासी अस्मिता पर हिंदी भाषा में प्रकाशित प्रथम पुस्तक, 1930)
101. सिन्धु घाटी सभ्यता के सृजनकर्ता शूद्र और वणिक—डॉ. नवल वियोगी, पृ. 167
102. इंडियन हिस्टरी, पृ. 86
103. भारत के मूलनिवासी और आर्य आक्रमण—एस.के. विश्वास)
104. वोल्गा से गंगा, पृ.
105. गुलामगिरी—महामना ज्योतिबा फूले
106. ऋग्वेदिक असुर और आर्य—डॉ. एस.एल.एम. सिंह देव 'निर्मोही'
107. ऋग्वेद 1/103/06।
108. भारत के मूल निवासी और आर्य आक्रमण—डॉ. एस.के. विश्वास, पृ.
109. "उच्चवर्णीय जातियां आर्य यूरेशियन हैं" आनुवांशिक शोध से प्रमाणित—डॉ. पी.डी. सत्यपाल
110. धर्मग्रंथों का पुनर्पाठ—मुद्राक्षस, पृ. 127
111. हिन्द के आदिनिवासी—पं. छेदीलाल जी पाण्ड्या उपदेशक, पृ.128
112. दर्शन दिग्दर्शन—राहुल सांकृत्यायन
113. रामचरितमानस—तुलसीदास
114. एनिहिलेशन ऑफ कास्ट—डॉ.बी.आर. आंबेडकर
115. 'उच्चवर्णीय जातियां, आर्य यूरेशियन हैं' आनुवांशिक शोध से प्रमाणित—डॉ. पी.डी. सत्यपाल, आन्ध्र विश्वविद्यालय, विशाखापट्टनम (आ.प्र.),
116. इंडियन हिस्ट्री—डी.डी. कोसंबी
117. ऋग्वेदिक आर्य—महापंडित राहुल सांकृत्यायन
118. आर्यों के भारतीय मूल की कल्पना—माइकेल विट्जेल, पृ.162
119. आर्यों के भारतीय मूल की कल्पना—माइकेल विट्जेल, पृ.138
120. 'उच्चवर्णीय जातियां, आर्ययूरेशियन हैं' आनुवांशिक शोध से प्रमाणित—डॉ. पी.डी. सत्यपाल, पृ. 5
121. आर्यों के भारतीय मूल की कल्पना, पृ. 165

122. आर्यों के भारतीय मूल की कल्पना, पृ. 76
123. वही, पृ. 76
124. वही, पृ. 62, 63
125. सिन्धुघाटी सभ्यता के सृजनकर्ता शूद्र और वणिक, पृ.57
126. भारतीय संस्कृति और अहिंसा पृ. 28
127. आर्यों के भारतीय मूल की कल्पना, पृ.135
128. वही, पृ. 132
129. वही, पृ. 133
130. वही, पृ. 133
131. 'उच्चवर्णीय जातियां, आर्ययूरेशियन हैं' आनुवांशिक शोध से प्रमाणित
132. प्रो. रामशरण शर्मा—आर्य संस्कृति की खोज; पृ. 80
133. आर्यों के भारतीय मूल की कल्पना, पृ.10, 12
134. वही, पृ. 160
135. **आंबेडकर मिशन पत्रिका अक्टूबर 2009, संपादक—बुद्ध शरण हंस, पटना**

संदर्भ ग्रंथ–सूची

1. आदि मुक्ति भारत — एच.एल. दुसाध
2. आर्य आक्रमण और भारत के मूलनिवासी — एस.के. विश्वास
3. ऋग्वैदिक आर्य — महापंडित राहुल सांकृत्यायन
4. वोल्गा से गंगा — महापंडित राहुल सांकृत्यायन
5. भारतीय दर्शन भाग–I — डॉ. सर्वेपल्ली राधाकृष्णन
6. भारत का इतिहास — रोमिला थापर
7. इंडियन हिस्ट्री — डी.डी. कोसंबी
8. आर्य संस्कृति की खोज — प्रो. रामशरण शर्मा
9. प्रारम्भिक भारत का आर्थिक और सामाजिक इतिहास — प्रो. रामशरण शर्मा
10. ऋग्वेद — अनुवाद, गंगा सहाय शर्मा
11. "उच्च वर्गीय जातियां आर्य युरेशियन हैं" आनुवांशिक शोध से प्रमाणित — डॉ. पी.डी. सत्यपाल आन्ध्र वि.वि. विशाखापट्टनम (आन्ध्र प्रदेश)
12. बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर राइटिंग एण्ड स्पीचेज वॉल्यूम–7
13. बहुजनों का बहुजन भारत, साप्ताहिक पत्रिका, अपैल 2008 सम्पादक–वामन मेश्राम
14. हिन्दू जाति का उत्थान और पतन — पं. रजनीकांत शास्त्री
15. सिन्धु घाटी सभ्यता के सृजनकर्ता शूद्र और वणिक — डॉ. नवल वियोगी
16. पवित्र गाय का मिथक — द्विजेन्द्र नारायण झा
17. मनुस्मृति — अनुवादक, पं. जनार्दन झा
18. श्रीमद् भागवत गीता — गीता प्रेस गोरखपुर
19. भगवान बुद्ध : जीवन और दर्शन — डी.डी. कोसंबी
20. भारतीय संस्कृति और अहिंसा — धर्मानंद कोसंबी
21. चमार जाति का गौरवशाली इतिहास —सतनाम सिंह
22. एंशिएन्ट इंडिया — आर.सी. मजुमदार
23. ऋग्वेदिक असुर और आर्य — डॉ. एस.एल.एम. सिंह देव "निर्मोही"
24. क्या है ओ.बी.सी.? — डॉ. जे.एन. वर्मा, सिद्धार्थ बुक्स
25. त्रिइब्लिसी शोषण-चक्रव्यूह विध्वंश, भाग–2 — सुजाता वासनिक
26. मूल भारतवासी और आर्य — भिक्खु बोधानंद महाथेरा
27. आर्यो के भारतीय मूल की कल्पना — माइकेल विट्जेल
28. डिस्कवरी ऑफ इंडिया — पं. जवाहर लाल नेहरू
29. द फाउन्डर ऑफ इंडुस वैली सिविलिजेशन एण्ड देयर लैटर हिस्ट्री — डॉ. नवल वियोगी
30. अशोका द बुद्धिष्ट इम्पेरर ऑफ इंडिया — विंसेन्ट स्मीथ
31. सिंधु सभ्यता : मोहनजोदड़ो हड़प्पा नगरों का धर्म — डॉ. एस.के. विश्वास

परिशिष्ट-1

(1)

भारत में आर्यों के प्रवेश का मुद्दा विवादास्पद क्यों?

आर्यों के प्रवेश को इतना महत्व क्यों?

प्राचीन भारत के इतिहास में राजनीतिक एवं सैद्धांतिक अशुद्धियों की भरमार है। स्पष्ट प्रमाणों को मौजूद होने के बावजूद भी कुछ विशेष मुद्दों को जानबूझकर यहाँ विवादास्पद बनाया गया है। ऐसे ही मुद्दों में "भारत में आर्यों का प्रवेश का मुद्दा" भी एक विशेष मुद्दा है। कोई भी घुसपैठ या विस्थापन के बाद यह समझा जा सकता है कि इससे क्या हुआ, इससे क्या परिलक्षित होता है तथा उस समाज या देश में इसके कारण राजनीतिक, समाजिक एवं आर्थिक धरातल परिवर्तन हुआ और वे लोग कौन है जिन्होंने इसे अंजाम दिया। यह घुसपैठ भारत में आर्यों का प्रवेश का प्रवाह क्रूरतम, असमानता एवं दमन का संचालन करने वाला था। इसके तहत भारत में अतिदुष्टता पूर्वक, एक के बाद एक क्रूर एवं दमनकारी नीतियों को लाकर किया गया एवं उन्हें चिरस्थायी बनाने के इन्तजाम भी किए गये।

इसे विवादस्पद क्यों बनाया गया?

कुछ लोग नहीं चाहते हैं कि सत्य पर से पर्दा हटे। भारत वह देश है कि जहाँ अधिसंख्य लोग जो भारत के मूलनिवासी हैं, उन्हें हजारों जातियों में बाटा गया, अपने अस्तित्व के लिए उन्हें परस्पर निरन्तर लड़ते रहने के लिए बनाया गया। उन्हें प्राथमिक मानवीय सम्मान एवं आवश्यक मानवीय जरुरतों से वंचित रखा गया। जब ये पीड़ित लोग समझने लगे कि ये आर्य ब्राह्मण विदेशी है, और हमारी मेहनत और अज्ञानता के वजह से सभी आर्थिक सामाजिक एवं राजनैतिक सुखों को भोग रहे हैं तब इन आर्य ब्राह्मणों को शिखर से उठकर धरातल पर पटक देंगे। इसी भय के कारण आर्य लोग सदैव मूलनिवासियों को आपस में लड़ाते रहते हैं उन्हें दिग्भ्रमित करते हैं तथा इनमें हमेशा विरोधाभास पैदा करते रहते हैं। ताकि इन दबे-कुचले लोगों मे एकता न बन सके। अपनी जाति को आर्यों ने अपनी पहचान को आसान बनाने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर एक ही नाम दे रखा है। जबकि भाषायी एवं स्वयं तथा अपने बांधवों के संबंधों से अज्ञानता कारण, इस देश के मूलनिवासी हजारों

क्षेत्रीय जातियों में बाँटे हुए हैं। इस प्रकार इस देश के मूलनिवासी लोग, आर्यों द्वारा ऐतिहासिक तथ्यों के साथ किए गये छेड़-छाड़ परिवर्तनों एवं विध्वंसों तथा समय-समये पर उनकी दुष्टतापूर्ण तैयार किये गए कृतियों से अनभिज्ञ रहे। मूलनिवासियों को आर्य ब्राह्मणों ने सचेत एवं संगठित होने का कभी मोका नहीं दिया। वे सदैव सत्य को छुपाने के लिए मूलनिवासियों को नई-नई पहचान देते रहे। ''हिंदू'' शब्द भी एक ऐसी ही पहचान है जो मूलनिवासियों का ध्यान हटाने के लिए उन पर थोप दिया गया है। हिन्दू-मुस्लिम तनाव भी, आर्य ब्राह्मणों द्वारा की गयी एक व्यूह रचना है ताकि उनका विशेषाधिकार बरकरार रहे और मूलनिवासी लोग उनके गुलाम बने रहे। (Refer to BAMCEF on this topic) अपनी प्रधानता की रक्षा के लिए आर्य ब्राह्मणों ने अपने ''आर्य'' पहचान को समयानुसार प्रयोग तथा छुपाते भी हैं। इसी छुपाने और बताने के क्रम में आर्य ब्राह्मणों ने मूलनिवासियों से अपने विदेशी होने की बात को छिपाया और इसी उद्देश्य से ''भारत में आर्यों के प्रवेश के मुद्दे को विवादास्पद बनाया है।

(2)

इस मुद्दे पर आर्य-ब्राह्मणों के परस्पर बदलते बयान

इस देश के मूलनिवासियों पर अपना वर्चस्व बनाये रखने के उद्देश्य से आर्य ब्राह्मण अपनी नीतियों एवं तर्कों को सदैव बदलते रहे हैं। विभिन्न परिस्थितियों में उनके द्वारा दिये गये तर्कों की समीक्षा से पता चलता है कि वे लोग अपना वर्चस्व को कायम रखने के लिए ही अपने तर्कों में बदलाव करते हैं। इसी का परिणाम है कि ''आर्यों का भारत में प्रवेश'' का मुद्दा विवादास्पद बना हुआ है।

तर्क 1 – 19वीं सदी से 20वीं सदी के तर्क परिवर्तन, आक्रमण

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में भाषाविज्ञान (Philology) और उच्चारण शास्त्र (Glotto Chronology) आधार पर खोज किये गये और पाया गया कि इण्डो-यूरेशियन भाषाओं के साथ संस्कृत भाषा का संबंध बहुत ही नजदीक का है और आर्यों तथा द्राविड़ के भाषा-वंश परम्परा को पहली बार वर्गीकृत किया गया। Francis ELLis:1816, Cald Well: 1849, WILLLIAMJONES: 1840, MAX MULLER: 1850 पुरातात्विक साक्ष्यों भाषा-विज्ञान से प्राप्त तथ्यों एवं सिंधु घाटी सभ्यता की खुदाई से प्राप्त अवशेषों से यह प्रमाणित होता है कि आर्यो के पास घोड़े, रथ तथा वे लोग व्यवस्थित कृषि व्यवसाय करने वाले लोगें पर आक्रमण किये। (Wheelr, REM, 1946)। मानव शरीर रचना विज्ञान (Anthropometric) के अध्ययन के अनुसार भारत में निवास करने वाली जनसंख्या में, नासिका-विन्यास (Cephalic Indices) (नाकों के लम्बाई और चौड़ाई) और मुखाकृति के आधार पर आर्यों से समानता पायी गई (Resley -1901) स्वामी विवेकानंद के भाई मा० बी० एन० दत्ता ने भी, इस तरह के अध्ययन मानव शरीर रचना विज्ञान के माध्यम से किये। बहुत से ऐतिहासिक एवं एन्थ्रोपोलजिकल अध्ययन ने प्रमाणित किया है कि आर्यों का प्रवेश भारत में हुआ था।

आर्य ब्राह्मणों ने उस समय उन सभी संदर्भो जिसमें कहा गया था, कि ''भारत पर आर्यों ने आक्रमण किया था'' का स्वागत किया था तथा गौरवान्वित होकर अपनी पहचान को श्रेष्ठ और विशेषता के रुप में और से अलग बताना शुरु कर दिया

था। भारत के आर्य-ब्राह्मणों ने "मैक्स-मूलर" की प्रशंसा एवं अपनी सामान्य प्रवृति के आधार पर ब्रिटिश शासकों से अपने लिए समानता का अधिकार मांगने लगे। इन्हीं बातों से उत्साहित होकर दयानंन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की तथा बाल गंगाधर तिलक ने (Arctic Home of The Vedas) "आर्कटिक होम ऑफ दी वेदास" नामक पुस्तक की रचना की।

राजा राम मोहन राय ने 1884 में, लंदन की अपनी यात्रा दौरान कहा था "मैं पूर्व से पश्चिम की ओर आया हूँ..... और मुझे यह महसूस हो रहा है, कि एक बार फिर हम अपने पुराने आर्य-भाई एक हो जाये....... विभाजन से पहले के इतिहास मे हमारी विजय प्रदान करने वाली शक्ति और श्रेष्ठता का प्रेरणादायी प्रसंग है।"

सन् 1894 में मोहन दास करनचंद गांधी ने मेम्बरस ऑफ लेजिस्ले ऑफ नेटल, साउथ अफ्रीका (Members of Legislature of Natal, South Africa) को एक खुला पत्र लिखा और अपने भाव को कुछ इस प्रकार रखा "अंग्रेज लोग ऐसा नहीं मान रहे हैं कि भारतीय (आर्य भारतीय) भी यूरेशियन हैं, और इनसे बेहतर व्यवहार की अपेक्षा रखते हैं।"

उन्होंने ने आर्य-भारतीयों की विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त उपलब्धियों का ब्यान करते हुए कहा, "अंग्रेज और आर्य भारतीय, एक ही डाली के दो फूल हैं"। भारतीय आर्य-ब्राह्मण लोग अपने आर्य-वंशी होने की बात से अत्यन्त गौरवान्वित होते थे, उसकी खूब बखान करते थे एवं अपने संस्कृति एवं धर्म को अन्य मूल भारतीय संस्कृतियों से श्रेष्ठ मानते थे, ताकि अंग्रेजों का विश्वास उन पर बढ़े और भारत उनके प्रशासन लिए उपनिवेश बना रहे।

तर्क 2 – 1920 से 1950 तक–आक्रमण नहीं अपितु विस्थापनः

उन्नीसवीं सदी के पश्चात 20वीं शताब्दी का आगमन हुआ और आर्य-ब्राह्मणां ने आर्य-वंश परम्परा की बात छोड़ दिया, क्योंकि अब वे जान चुके थे कि भारतीय राजनीति में उनके "आर्य" होने का मुद्दा कितना दूरगामी प्रभाव डालेगा अर्थात वे अलग-थलग पड़ सकते थे। इसलिए "भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन " के बैनर तले उनके नेताओं ने, लोकतांत्रिक राजनीति, व्यस्क मताधिकार एवं समाजिक समानता आदि के उठते सवालों को ध्यान रखते हुए अपने दलीलों को बदला और अपनी "आर्य" की पहचान को छुपाने के लिए "हिन्दू " शब्द का जामा पहन लिया।

उन्होंने अपनी व्याख्या को बदलते हुए ऐसा प्रचार करना शुरु कर दिया कि "आर्यों की चरवाहा समुदाय" भारत में सिंधु घाटी सभ्यता के ध्वस्त होने के पश्चात धार्मिक संस्कृति की व्याख्या में तथाकथित आर्यों के सांस्कृतिक गौरव एवं

श्रेष्ठ सभ्यता को ही आधार बनाया। स्वामी विवेकानंद, रानाडे, एनी बेसेन्ट आर्य-वंशी धारणा (वर्तमान में हिंदू) ने भारत को उत्तर-से-दक्षिण तक एक किया था और पुनः एकीकरण के लिए इसका प्रयोग किया जाना चाहिए।'' इस प्रकार से हमें पता चलता कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन किसके लाभ के लिए चलाया गया था।

तर्क 3 – 1980: इण्डस–सरस्वती सभ्यताः (Indus-Sarawati Civilization)

सन् 1980 के आस-पास, भारतीय राजनीति में अपनी मजबूत बनाये रखने वाले ब्राह्मणवादी आर्य लोग (तथा उनकी राजनैतिक पार्टियां) एक कपटपूर्ण तरीके से तैयार किये गये इतिहास को लेकर सामने आये और अपनी ''आर्य वंश'' का सवाल न उठा सकें। तथा इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एक सर्वथा असत्य, भद्दा एवं कचड़े से निकाले गये तथ्य को सामने लाकर, दलीलें देने लगे, कि सिंधु घाटी सभ्यता के समानान्तर ऋग्वैदिक काल में, सरस्वती नदी के किनारे, एक सभ्यता विकसित हुई थी, जिसका नाम वे सरस्वती सभ्यता दिये तथा वे प्रमाणित करने का प्रयास करने लगे कि वर्तमान ''घाघरा नदी'' ही ऋग्वेद में उल्लेखित सरस्वती नदी है तथा वह सभ्यता वर्तमान हिन्दू सभ्यता (ब्राह्मण सभ्यता) है।

इस प्रकार उनहोंने जोर देकर कहना आरम्भ किया कि सरस्वती नदी के किनारे जन्मी सरस्वती सभ्यता अपने उत्तर-पूर्व में फैलती गई और इसी विस्तार का परिणाम हड़प्पा सभ्यता भी है, इस प्रकार आर्यों द्वारा भारत पर कोई आक्रमण नहीं हुआ और न ही आर्य लोग कहीं बाहर से आये हैं, वे भी इसी देश के मूलनिवासी है, जैसा कि हड़प्पा सभ्यता के लोग थे।

उपरोक्त बात को और प्रभावशाली बनाने हेतु उन्होंने ''राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ'' से ताल्लुक रखने वाले बुद्धिजिवियों, स्वयंभू वैदिक इतिहासकारों, साहित्यकारों एवं शिल्पकारों को काम पर लगाया, जिनमें से, एस॰ एस॰ मिश्रा, एस॰ तालेगारी, के॰ डी॰ सठना, एस॰ पी॰ गुप्ते, बी॰ एच॰ गिडवानी आदि ने अपनी धोखा भरी बातों से यह प्रमाणित कने की कोशिश की, कि ''आर्य लोग विदेशी नहीं है'', तथा इस बात को और भी घनीभूत एवं विवादास्पद करने के लिए कुछ विदेशी विद्वानों से भी सहायता ली गई जिनमें कोयनराड इल्स्ट (Koenraad Elst) एवं पैट्रिशिया (Patricia) प्रमुख हैं। ''कोयनराड इल्स्ट'' ने अपनी पुस्तक में डॉ॰ अम्बेडकर का नाम का भी उपयोग में लाया है, ताकि भारत के मूलनिवासियों में इस पुस्तक को स्वीकृति मिल सके। उसकी पुस्तक ''स्थानीय भारतीयः अगस्त्य से अम्बेडकर तक'' "Indigenious Indians: from Agasthya to Ambedkar" तथा ''डा॰ अम्बेडकरः

एक सच्चे आर्य'' (Dr. Ambedkar: A true Aryan) को पढ़ने से आर्य-ब्राह्मणों का उद्देश्य साफ-साफ परिलक्षीत होता है। अपने छदम तर्क को सर्वमान्य बनाने के उद्देश्य से आर्य ब्राह्मणों ने तरह-तरह के छद्म प्रयास किये, नकली खुदाईयां कराकर स्वयं ही प्रत्यारोपित फिर खुदाई के माध्यम से उन्हें निकाल कर, कम्प्यूटर के माध्यम से उसे प्रमाणित करने का प्रयास भी किया। एन॰ एस॰ राजाराम एक नामी साफ्टवेयर व्यवसायी एवं स्वयंभू इतिहासकार ने ''हड़प्पा लिपि एवं मुहरों को पढ़ने का दावा किया, और उसने उसमें ओइम, मदमा, अग्नि, स्वास्तिक आदि के रूप में पढ़ा, किन्तु उसका छल उस माध्यम से एक ''सांड़'' को ''घोड़ा'' दर्शाने की कोशिश करते हुए पकड़ा गया। इतना सब होने के बावजूद भी ये कपट बुद्धि ब्राह्मणवादी लोग नरम नहीं पड़े और अपनी दलीलों को नया रूप एवं मध्ययुगिन वक्रोक्तियों का हवाला देते हुए कहना शुरु किया कि ''सिंधु घाटी सभ्यता आर्यों की सभ्यता थी और ''हड़प्पा लिपि'' प्राचीन संस्कृत है।''

तर्क 4 – 21वीं सदी में बदलावः आर्यों द्वारा आक्रमण नही, आर्यों का विस्थापन नही, आर्य विदेशी नही।

जब NDA [National Democratic (Opportunistic) Alliance] का शासन आया, तो आर्य-ब्राह्मणों की लॉटरी खुल गई, ओर ये लोग अपने तर्क को पुख्ता बनाने के उद्देश्य से हर सम्भव प्रयास करने लगे। सभी वैज्ञानिक एवं शैक्षिक संस्थानों जैसे-ICHR, IAAS, UGC, CSRI, NCERT इत्यादि में पुर्नसंगठित करने के बहाने, 'RSS' के लोगों को भर दिया गया, ताकि जितने भी तर्क उनके विरुद्ध है उन्हें आसानी से हटाया जा सके। अब उनका तर्क है कि ''आर्यों द्वारा भारत पर आक्रमण'' वाली बात स्वयं विदेशी इतिहासकारों द्वारा कही गयी है, ताकि भारतीय लोगों में विभाजन करके उन पर शासन बरकरार रखा जा सके। कोई भी साहित्यिक या ऐतिहासिक घटनाओं में उल्लेख नहीं है कि आर्यो ने भारत पर आक्रमण किया। उनका मानना है कि सरस्वती सभ्मता सिंधु घाटी सभ्यता के बाद में विस्तार पाकर कालान्तर से चरवाहा प्रवृत्ति न होकर, कृषि-व्यवसाय करने जीवन यापन करने वाली सभ्यता बन गई। इसी क्रम में डेविड फ्राले की पुस्तक ''The myth of Aryan invation of India'' (भारत पर आर्यों का आक्रमण) को आधार बनाकर ब्राह्मणवादियों ने, उच्चतम न्यायालय को भी धता बताते हुए किताबों की पाठ्य-सामग्री को बदल डाला, उनके विषय वस्तु में परिवर्तन कर डाले, और यह कोई आक्रमण नहीं हुआ या कोई विस्थापन नहीं हुआ था; आर्य लोग विदेशी भी नहीं हैं। अब तो तर्क यह भी देने लगे हैं कि द्रविड़ समुदाय इस देश का मूलनिवासी होने

का दावा नहीं कर सकता, क्योंकि आर्य भी उन्हीं तरह इस देश के मूलनिवासी हैं, और यदि आर्य विदेशी हैं तो द्रविड़ लोग भी विदेशी हैं।

ऐसे मुकाम पर 'डी०एन०ए० शोध' ने इन बहुरुपिये ब्राह्मणवादियों के ऊपर लगाम कसने का काम किया है।

(3)

भारत में जातियों का उदय और डी. एन. ए. अनुसंधान (Research)

भारत में जातियों की उत्पत्ति के संबंध में अनुवांशिक प्रमाण

मानव जनसंख्या का इतिहास और उनमें मिलावट, उनमें परस्पर समानता, का अध्ययन, विश्व में मानव शरीर रचना विज्ञान द्वारा किया जाता है। मुख्य रूप से भारतीयों पर इस तरह के कई अध्ययन किये गये हैं। यहाँ पर अरबों की संख्या में बसने वाले भिन्न-भिन्न जातियों में बंटे, अलग-अलग भाषा बोलने वाले, भिन्न संस्कृतियों वाले, असमान समाजिक व आर्थिक परिस्थितियों में रहने वाले लोग दुनिया के मानव शरीर रचना वैज्ञानिकों के कौतूहल का कारण बने हुए हैं। शरीर रचना शास्त्र के माध्यम से पूर्व में अनेकों अध्ययन किये गये। जो लोगों के नासिका विन्यास (Cephalic Indic) त्वचा विज्ञान (Dermatoglyphics) हथेली एवं उँगुलियों के निशान पर आधारित रक्त समूहो (Blood Group) प्रोटीन व एंजाइम, तथा पोलीमारफिस्म (Polymorphism) के आधार पर अप्रत्यक्ष रूप से अनुवांशिक भिन्नता को जांचने के लिए किये गये थे तथा उन्हें जनसंख्या अनुवांशीकी अध्ययन (Poulalian genetics) का नाम दिया गया।

हाल के वर्षों में, अत्याधिक शक्तिशाली एवं संवेदनशील परमाणिक चिन्ह (Molecular Markes) जैसे कि Mitochondrial DNA और Nuclear DNA Polymorphism ने वैज्ञानिक खोज की दुनिया में आन्दोलन ला दिया हैं और इसी प्रक्रिया के माध्यम से भारत में भी निवास करने वाली जातीय जनसंख्या का अध्ययन किया गया।

भारतीय जातीय जनसंख्या की उत्पत्ति के संबंध में जो साक्ष्य मिले हैं, वे भारत एवं अमेरिका के संयुक्त शोध परियोजना के परिणाम हैं। आन्ध्र-विश्वविद्यालय, विशाखापट्नम का मानव शरीर रचना शास्त्र, विभाग और एक्लेश इस्टिट्यूट ऑफ हयूमन जिनेटिक्स, यूनिवर्सिटी उताह, साल्ट लेक सिटी के संयुक्त राज्य अमेरिका ने, संयुक्त रूप से दक्षिण भारत के जातियों पर अनुवंशिकी शोध सर्व प्रथम 1996 में प्रारम्भ किया तथा सन् 2001 में समूचे नमूने इक्कठे किये गये तथा पूरे भारतीय-उपमहाद्वीप को आधार मानकर उनका तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन

किया गया। ये अध्ययन समय-समय पर पूरे विश्व में प्रमुख अखबारों-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे।

अनुवांशिक शोध से, विश्व की जनसंख्या के परस्पर सम्बन्धों का पता लगाने एवं पुरातात्विक सहायता मिलती है। अनुवांशिक शोध अत्यन्त सटीक एवं विश्वसनीय होता है, जबकि पुरातात्विक एवं साहित्यिक प्रमाण अपेक्षाकृत कम होते हैं, क्योंकि समय के साथ इसमें मिलावट की सम्भावना होती है, तथा भौतिक कारणों से साक्ष्यों के मिटने की आशंका रहती है।

हालांकि कभी-कभी अनुवांशिक शोध के परिणामों एवं निर्णयों में अन्तर हो सकता है, और भारत में ऐसा पूर्व के कुछ अनुवांशिक अध्ययन, भारत की उत्पत्ति एवं जन समुदाय के इतिहास के सम्बन्ध में समर्थन नहीं जुटा पाये। कुछ अध्ययनों ने, भारतीय लोंगो के सम्मिश्रण को, भारतीय जातियों में प्रमाणित किया। अतः इस अध्ययन ने पूर्व में किये गये, सभी अनुवांशिक अध्ययनों की सीमाओं, एवं उनके विश्लेषकों तरीकों को ध्यान में रखा जो निम्नांकित है:-

01. सीमित एवं त्रुटिपूर्ण नमूनें (मल्होत्रा एवं वासुलु, 1993)
02. अनुवांशिक भिन्नताओं का अप्रत्यक्ष माप (ABO Blood Types) नमूने कुछ ही लोगों के लिए गये, वह भी निष्पक्ष नहीं थे।
03. ऐसी धारणा रही कि विभिन्न जातियाँ अलग-अलग जगहों से आकर सम्मिलित हो गई हों। (मजुमदार और मुखर्जी,1993)
04. छोटी एवं भौगोलिक रूप से दूरस्थ जातियाँ ही भिन्नताओं के लिए स्वीकार की गई।
05. प्रायद्वीप की जनसंख्या से एक ही प्रकार के अत्याधिक DNA Polymorphism लिये गये, किन्तु कुछ की ही विधिवत तुलना की गयी। (मजुमदार-1999)

पूर्व की गलतियों को न दोहराते हुए वर्तमान अध्ययन में विभिन्न वर्गों, वंशावलियों का ध्यान रखते हुए नमूनों का चुनाव करके उनका जातीय समुदाय से, अनुवांशिक संबंधो का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। जातियों को उनके श्रेणी जैसे उच्च वर्ग, मध्य वर्ग एवं निम्न वर्ग के अनुसार बाँटा गया। आन्ध्र-प्रदेश से आठ भिन्न वर्ग बनाकर 265 पुरुषों से नमूने एकत्र किये गये। पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में 400 अलग-अलग जातियों के नमूनों के साथ उनका

तुलनात्मक अध्ययन किया गया। महाद्वीपिय जन समुदाय से तुलना करने के उद्देश्य से अफ्रीका, एशिया और यूरोप महाद्वीप के लोगों से 350 (तीन सौ पचास) नमूने, इस अध्ययन के लिए एकत्र किये गये। इस प्रकार "विश्लेषक

प्रतिनिधि'' नमूनों, के माध्यम से, भारत में समानांतर जातियों की उत्पत्ति खोजने के लिए बनाया गया, जो पहले के अनुसंधानों से अलग हटकर जीन स्तर (Gene level) पर किया गया, पहली बार तीन मार्कर (Marker) विश्लेषक के उद्देश्य से बनाये गये। Mitochondrial DNA जो केवल माँ की वंशावली से आता हं, उसे एक मार्कर (Marker) Cytoplasm में अवस्थित होता है, और DNA Molecule वंशक्रम में एक ही बिन्दु पथ पर चलता है। जबकि यह अत्यंत ही, कई आकृतियों सम्बन्धी अध्ययन है, अतः लोगों की भिन्नताओं को तथ्यपूर्ण ढंग से उद्घाटित करता है। Non coding sites के परिवर्तनशीलता से, मानव Mitochondrial DNA की परिवर्तनशीलता दस गुना अधिक है। इसलिए DNA की विलक्षण क्षमता, सामान्तर-मानव जनसंख्या के उत्पत्ति एवं बिखराव के संबंध में अध्ययन की प्रेरणा स्रोत बना।

1122-bp नियंत्रण क्षेत्र (Control Region) में मनुष्य का माइटोकांड्रियल जिनोम, (Mitochondrial Gonome) दो अतिपरिवर्तनशील (Hyper variable) क्षेत्र HVS1 तथा HVS2 (More than 90% the Polymorphism of HVS1 region reports per60% of polymorphism.)

तीव्र परिवर्तनशील क्षेत्र 1 (Hyper Variable region-1 HVR1) श्रेणी और 14 (Restricted Site polymasphism) (RSPS) का इस अध्ययन में विशेलषण किया गया।

''Y'' क्रोमोजोम, परिवर्तन जो पिता के अनुवांशिक गुण को प्रदर्शित करता है, उसे दूसरे मार्कर (Marker) के रूप में लिया गया। (20 biallelic Polymorphism और Nuclear DNA dk 05 शार्ट टेन्डम रिपीट्स (Short Tandem Repeats) का अध्ययन में विश्लेषण किया गया है।,

इस विश्लेषण को और अधिक सशक्त करने के लिए, 40 [Biparently inherited autosomal loci, line-1] और 39 Alu तत्वों को तीसरे मार्कर [Third Marker] के रूप में उपयोग किया गया। क्योंकि मिटोकांड्रियल Mitochondrial DNA और "Y" क्रोमोजोम [Nuclear DNA] दोनों ही एकल ''हाप्लायड लोकस'' [Haplaid Locus] में स्टोहास्टिक वैरियेशन [Haplaid Locus] को स्वीकार करने की सम्भावना हो सकती है।

अलग-अलग जातियों के, अनुवांशिक दूरी को नापने के लिए, समतुल्य DNA श्रेणी की दूरी से गणना की गई। आँकड़ों को आधार देने के लिए, पांच मानक सांख्यकीय नियंत्रण [Standard Statistical Control] अपनाये गये। आनुवांशिक दूरी की गणना में, नजदीक दूरी समानता को प्रकट करता है, अधिक दूरी से असमानता व्यक्त करता है।

परिणाम

Mitochondrical DNA का विश्लेषण :

जातीय जनसंख्या एवं उपमहाद्वीपीय जनसंख्या के बीच mitochondrial आनुवांशिक दूरी निम्नांकित है।

- सामूहिक रूप से, विश्लेषित करने पर, Mitochondrial DNA हाप्लोटाइप (Haplotype) यह प्रमाणित करता है, कि भारतीय लोगों के पुरखें प्राचीन एशियन लोग थे, तथा इसके साथ-साथ लगभग 20 से 30 प्रतिशत का सम्मिश्रण भी पाया गया, जो पश्चिमी यूरोशीयनों [Western Eurasian] के, "Mitochondrial DNA" हाप्लोटाइप [Mitochaondrial DNA Hoplotype] से मेल खाता है।
- अधिकांशतः भारतीय जातियों के जनसंख्या में जो ''हाप्लोटाइप (Hoplotype) पाया गया है वह हाप्लोग्रुप M [Hoplogroup M] से सम्बंधित है। अर्थात वह प्राचीन एशियन लोगों से मेल रखता है।
- स्त्रियों का अनुवंशिक निर्मित यह प्रमाणित करता है कि वे लोग पूर्व एशियन मूल के हैं। जो कि निम्न जाति से उच्च जाति की ओर बढ़ने से उनकी अनुवंशिक दूरी एशियन लोगों से बढ़ती जाती हैं।
- भारतीय जातियों के जनसंख्या में, जो गैर एशियन ''Mitochondrial DNA हाप्लोटाइप'' (Mitochondrial DNA Hoplotype)जो पाये गयें हैं, अनकी प्रकृति (U,UL) है। अर्थात वे प्राचीन यूरोप के दूसरे मुख्य ''मिटोकांड्रियल DNA हाप्लोटाइप'' [Mitochondrial DNA Hoplotype] से मिलता-जूलताहै।
- निम्न जातियों की अपेक्षा उच्च जातियों को ''Mitochondrial DNA Hoplotype'' की आवृति विशिष्टतः अधिक है। जो निम्न जातियों से अपेक्षाकृत पाँच गुणा अधिक है।
- उच्च जातियों में आनुवंशिक दूरीः ब्राह्मणों और यूरोपियन लोगों के बीच बहुत कम है (0.10), क्षत्रियों और यूरोपियन के बीच की दूरी (0.12) है और वैश्य तथा यूरोपियन की दूरी (0.16) है।
  ''Y'' क्रोमोसोम परिवर्तन, इंडो-यूरोपियन सम्मिश्रण को प्रमाणित करता है।
- ''Y'' क्रोमोजोम शार्ट टेंडम रिपिट्स के आधार पर गणना की गई

अनुवांशिक दूरी, जातीय जनसंख्या संबंधों में भिन्नता को प्रदर्शित करती है।

- "Y" क्रोमोजोम शार्ट टेंडम रिपीट्स [STRs] से यह प्रमाणित होता है कि उच्च जातियाँ, यूरोपीय लोगों के बहुत ही समतुल्य हैं, मध्य जातियाँ एशियाई के बहुत ही करीब हैं।
- "Y" Bialletic palymarphism data प्रत्येक जाति वर्ग यूरेपियों से बहुत ही समान है।
- तथ्य और भी स्पष्ट हो गया, जब यूरोपियन जनसंख्या को उत्तर, दक्षिण और पूर्व में बाटंकर देखा गया। पूर्व की जाति वर्ग, पूर्वी यूरोपियन लोगों से बहुत ही समान पाई गई।
- उच्च जातियों और पूर्वी यूरेपियनों की अनुवांशिक दूरी, मध्य या निम्न जातियों और पूर्वी यूरोपियनों अनुवांशिक दूरी से लगभग आधी पायी गई।
- इस शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि उच्च वर्गीय लोगों के "Y" क्रोमोजोम, एशियन लोगों के "Y" क्रोमोजोम के बजाय यूरोपियन लोगों के "Y" क्रोमोजोम से अधिक मेल खाते हैं।

'आटोसोमल अलू' तत्वों का विश्लेषण
(Analysis of Autosomal Alu elements)

विश्लेषण से पता चलता है कि भारतीय उच्च जाति युरोपियनों के दृश्य है, जब उनके तहों को अलगाते है तो पाते हैं, कि निम्न जातियाँ एशियनों के करीब हैं।

उच्च जातियों से मध्य जातिंयों के बीच, और मध्य जातियों एवं निम्न जातियों की अनुवांशिक दूरी के अपेक्षाकृत उच्च जातियों एवं निम्न जातियों के बीच की अनुवांशिक दूरी लगभग 20.5 गुणा अधिक है।

Mitochondrial DNA तथा "Y" क्रोमोजोम विश्लेषण की तरह ही, उच्च जातियों एवं यूरोपियनों के बीच की अनुवांशिक दूरी बहुत ही कम है तथा निम्न जातियों एवं यूरोपियनों के बीच की दूरी अधिक है।

यदि क्षत्रियों एवं वैश्यों को विश्लेषण से निकाल दिया जाये या मध्य वर्गीय जाति में मिला लिया जाये तो भी, उच्च जातियों अर्थात ब्राह्मणों एवं यूरोपियनों के अनुवंशिक दूरी, निम्न जातियों एवं यूरोपियनों तथा उच्च जातियों एवं एशियनों की अपेक्षाकृत बहुत ही कम है।

अनुवांशिक दूरी ज्ञात करने के लिए प्रत्येक जातियों को अलग-अलग विश्लेषित करने पर पता चलता है कि ब्राह्मणों और यूरोपियनों की बीच की अनुवांशिक दूरी

(0.013) क्षत्रियों एवं यूरोपियनों से कम है। यूरोपियन और क्षत्रियों के बीच अनुवांशिक दूरी (0.030) है तथा वैश्यों एवं यूरोपियनों की अनुवांशिक दूरी (0.02) है। उपरोक्त तीन मार्कर (marker) और पाँच आँकड़ा दल विश्लेषण (Data set analysis) के आधार पर हम सप्रमाण कह सकते हैं कि भारत की जातियाँ पूर्व एशियन मूल की हैं जिनमें यूरेशियन सम्मिश्रण भी है। पश्चिमी यूरोशीयन महिलाओं से अधिक है। जातीय वर्ग से भी यूरोपियन लोगों से सादृश्यता है। उच्च जातियों में अनुवांशिक दूरी ब्राह्मणों व यूरोपियनों में बहुत ही कम है, जो उनके यूरोपियनों से पूर्व संबंधो को प्रमाणित करता है।

इस शोध का निष्कर्ष क्या है?

यह अनुवंशिक प्रमाण विभिन्न घटनाओं का जवाब है। पुरातात्विक एवं साहित्यिक साक्ष्यों को प्रमाणित करने के अतिरिक्त यह शोध, आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधानों के आधार पर कई मुख्य मुद्दों की व्याख्या करता है। इस शोध से निम्नलिखित अनुमान लगाये जा सकते हैं।

आर्यों का भारत में प्रवेश : अनुवांशिकी द्वारा प्रमाणित

(1) इस अनुसंधान से उन सभी कल्पनाओं पर विराम लग गया, जो ''भारत में आर्यों के प्रवेश के संदर्भ में की जा रही थी।

(2) आधुनिक ''जेनेटिक मार्कर'' (Genetic marker) के माध्यम से, इस अध्ययन ने वैज्ञानिक तरीके से भारत के मूलनिवासियों और विदेशियों के भेद को प्रकाश में लाया।

(3) यह अनुसंधान से यह स्पष्ट होता है कि कैसे मानवीय विस्थान को अनुवांशिकी के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है।

जाति प्रथा : आर्यों की देन –

इस अध्ययन से यह भी पता चलता है कि जाति प्रथा की उत्पत्ति कैसे हुई। इस शोध से इस बात की व्याख्या होती है कि पश्चिमी यूरेशिया के लोग, भारत के उत्तर-पश्चिम भाग में प्रवेश किया एवं पूरे भारत में फैलाकर, यहाँ की मूलनिवासियों को विस्थापित करते हुए, उनमें घुल-मिल गये। जिनेटिक अनुसंधान यह भी प्रमाणित करता है कि विदेशी जिनेटिक के लोग जातिवादी व्यवस्था में अपने आप को उच्च श्रेणी में रखे। यह तर्क-पूर्ण बात या अपने आप का सामाजिक रूप से अलग रखने के उद्देश्य से अपने को जाति प्रथा की श्रेणी में सबसे ऊपर रखा। कई परातात्विक प्रजाति का विस्थापन अर्थात आर्यों ने भारत के मूलनिवासियों में मिश्रित होकर, अपने शक्ति को बढ़ाकर पूर्व के एशियाटिक आर्य लोग, जिनका भूमि, श्रम एवं संसाधनों पर नियंत्रण बन गया, वे अपने जातीय आधार पर अपने आप को उच्चस्थ पद पर रख कर, अपनी शक्ति को बरकरार रखा। हालांकि ऐसे भी सुझाव आये थे कि हो सकता है पश्चिम यूरोशियन लोगों ने आक्रमण किया हो और जाति प्रथा यहाँ पहले से प्रचलित हो, क्योंकि एक सामाजिक व्यवस्था में कोई बाहरी

आकर, अपने आप को उच्चस्त स्तर पर पहुँचा दे सम्भव नहीं दिखता। इस तरह से इस अध्ययन से यह भी प्रमाणित हो जाता है कि जाति प्रथा में उच्च स्थान पर स्थापित किया तथा उसे वैधानिक मान्यता देकर, स्थायित्व प्रदान कर दिया। इस प्रकार से जाति प्रथा की उत्पत्ति आर्यो के आगमन से संबंधित है।

आर्यो का आक्रमण हुआ था, विस्थापन नहीं

आर्यो का भारत में प्रवेश, आक्रमण के साथ हुआ या फिर परत दर परत विस्थापन के माध्यम से। इस मुद्दे पर कपट पूर्ण दिये गये और दोनों तरफ से कई तर्क इस संदर्भ में सामने आये। (व्हीलर, डी॰ डी॰ कौसाम्बी तथा अन्य ने आक्रमण सिद्धांत का पक्ष लिया तो रोमिला थापर एवं अन्यों ने परत-दर-परत विस्थापन का) इस जेनिटिक अनुसंधान ने आर्यो के भारत में प्रवेश को समझने के लिए पुखता प्रमाण दिया। "Y" Chromosome विश्लेषण से यह पता चलता है कि भारत में सवर्ण जाति के लोगों का संबंध युरोपियन लोगों से अधिक है, और एशियन लोगों से क़म। पश्चिम यूरोपियन स्त्रियों के मिश्रण से, यूरोपियन "Y" क्रोमोजोम का संबंध अत्याधिक नजदीक का है। इस तरह यह पूर्णतः प्रमाणित होता है कि इन जातियों के "Y" क्रोमोजोम की नजदीकियों का मतलब निकलता है कि पश्चिमी यूरोपियन आक्रमणकारी/विस्थापित लोग अधिकतम पूरूष ही थे।

इससे यह सिद्ध होता है कि यदि केवल मर्दो का विस्थापन दूसरे क्षेत्रों में होता है तो इसका मतलब साफ है कि वह आक्रमण है। साहित्यिक और पुरातात्विक प्रमाणों से यह सिद्ध हुआ है कि आर्यो के पास घोडें, रथ और लोहे के नुकीले हथियार थे, जिन की पुष्टि वर्तमान अनुवांशिक शोध भी करता है। क्रमवार विस्थापन में इस तरह से लैंगिक असामानता नहीं होता है।

अतः इस अनुसंधान ने स्पष्टतः यह प्रमाणित कर दिया है कि घुड़सवार रथी और लोहे के नुकीले हथियार चलाने वाले लोगों ने भारत के मूलनिवासी, कृषि व्यवसाय करने वाली, शांतिप्रिय जनता पर आक्रमण किया, और अपने वर्चस्व को मजबूती प्रदान करने के उद्देश्य से उन पर जाति प्रथा का शिकंजा कस दिया।

सभी स्त्रियाँ शूद्र क्यों है?

ब्राह्मणवादियों के सभी धर्म वहाँ तक की उनका "आचार-संहिता" मनुस्मृति भ कहता है कि "अपने जाति के अनपेक्षित सभी स्त्रियाँ शूद्र हैं। इस से अब समझ मे आता है कि क्यो? समूचे स्त्री-जाति के ऊपर, हीनता की चादर ओढ़कर रखा गया था। हम सभी यह भी जानते हैं कि विवाह, विवाह-संबंध बराबरी के लोगों के बीच हों, इसे वरीयता दी जाती है। कुछ निश्चित परिस्थितियों में उच्च वर्ण के पुरूष

को निम्न वर्ण की स्त्री से संभोग की अनुमति दी गई है और यदि संतान की उत्पत्ति होती है तो वह अपने पिता के जाति को वरण करता है। ऐसे विवाह को अनुलोम (Hyporgamy) विवाह कहा गया है। ठीक इसके विपरीत, उच्च वर्ण स्त्री से निम्न वर्ण के पुरूष को संभोग करने की अनुमति नहीं है। अर्थात् प्रतिलोम विवाह (Hyporgamy) को निषिद्ध किया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि उच्च वर्ण में शादी करने के लिए महिलाओं को कुछ सीमा तक छूट है, किन्तु निम्न वर्ग के पूरूष को उच्च वर्ण के स्त्री से विवाह करना निषेध है। यद्यपि कि इस संबंध में कुछ न्याय दी गई हैं किन्तु वे तर्क संगत नहीं है।

अब अनुवांशिक शोध ने इस प्रश्न का समाधान भी ढूढ़ लिया है। (Y क्रोमोजोम विश्लेषण के माध्यम से) जैसा कि बताया गया है कि आर्य आक्रमणकारी पुरूष थे। उन्होंने भारत के मूलनिवासी स्त्रियों को अपनी पत्नि के रूप में रखा और संतोनोत्पति करके यहाँ के मूलनिवासियों में सम्मिश्रित होने लगे। यह बात स्पष्ट है कि जब पश्चिमी यूरोपियन आर्यों ने भारत पर आक्रमण किया तब बहुत ही लूट-पाट, नरसंहार, औरतों के साथ दूर्व्यव्यहार एवं बलात्कार आदि हुए, तत्पश्चात समय की आवश्यकता समझकर, ये आक्रमणकारी यहाँ की मूलनिवासी जनता के साथ मिल तो गये, किन्तु जाति-प्रथा का निर्माण कर अपने वर्चस्व को उच्चस्थ बनायें रखा। यहाँ के मूलनिवासियों को निम्नस्थ सामाजिक स्तर ढकेलते वक्त, अन्होंने सभी स्त्रियों को, यहाँ तक ही अपनी पत्नियों को भी, शुद्रों की श्रेणी में रखा। क्योंकि वे जानते थे कि ये औरतें मूलनिवासी हैं। यही कारण है कि सभी ब्राह्मणवादी धर्मग्रंथ औरतों को शूद्र मानते है तथा कालान्तर में अनुलोम विवाह को कुछेक परिस्थितियों में अनुमति दिये एवं प्रतिलोम विवाह को निषिद्ध किये। यहीं कारण है कि औरतों के मिटोकांड्रियल DNA (Mitocondrial DNA) और "Y" क्रोमोसोम विश्लेषण विभिन्न स्तर के औरतों में परिवर्तनशील है। आर्य-आक्रमणकारियों ने अपनी सुविधा के लिए, जाति-प्रथा के बावजूद, औरतों को कुछ शिथिलता प्रदान की। इसे भी जिनेटिक शोध प्रमाणित करता है।

अनुवांशिक अनुसंधान के साक्ष्यों के आधार पर भारत के इतिहास को पुनः विश्लेषित करने का समय आ गया है। हालांकि प्राचीन इतिहास के तात्विक प्रमाण, इन मुद्दों का समाधान करने में सक्षम नहीं है। ऐसे में आधुनिक जिनेटिक प्रमाण, इन मुद्दों का समाधान करने में सक्षम नहीं है। ऐसे में आधुनिक जिनेटिक अनुसंधान, अत्याधिक विश्वसनीय परिणाम प्रदान करने के लिए, वैज्ञानिक औजार बन सकता है।

(5)

इस शोध पर प्रतिक्रिया

इस निर्णायक व रास्ते से हटकर अनुसंधान पर प्रतिक्रिया

शुरूआत में, सन् 1996 से शोधकर्त्ताओं के दल ने, दक्षिण भारत के भिन्न-भिन्न लोगों की जनसंख्या पर अध्ययन किये तथा शोध के परिणामें को, समय-समय पर प्रकाशित कराते रहे। उनके इस कार्य को बहुत ही प्रोत्साहन व मान्यता मिलता रहा, क्योंकि इस अनुसंधान में, नये वैज्ञानिक व आधुनिक तरकीबों का प्रयोग बड़े ही क्रमवार ढंग से किया है। किन्तु सन् 1998 में व्यापक शोध परिणाम, विश्व प्रसिद्ध "नेचर" (Nature) में जब "Eemale Gene Flow Straitifies Hindu Caste" नाम के शीर्षक से प्रकाशित हुआ, तब कई भौहें तन गई, कुछ अरूचिकर टिप्पणियाँ शुरू हो गई, और कुछ लोगों ने तो इसे कुटिल अनुसंधान, अनसुलझे एवे विवादित मुद्दों पर से पर्दे उठाना शुरू किया, तो कुछ लोगों को अच्छा नहीं लगा। सन् 2001 में जनेटिक्स की प्रसिद्ध पत्रिका "जिनोम रिसर्च" ने "Genetic evidences on the origin of Indian population" शीर्षक से एक लेख छापा। इस अनुसंधान को, इसके द्वारा अपनाये गये तरीकों एवं प्रयोगों के लिए बहुत प्रशंसा मिली, किन्तु भारत की ब्राह्मण-बनिया मीडिया एवं उसका तथाकथित विद्वानों को यह बात हजम नहीं हुई और उन्होंने इस विषय पर अपने शीर्षकों, लोगों, विशेष टिप्पणियों एवं सम्पादकियों में बीमार मानसिकता को उजागर कर ही दिया।

इस अध्ययन की महत्ता को समझते हुए केवल कुछ अंग्रेजी पत्रिकाओं ने इसका प्रकाशन किया, परन्तु देशीय-क्षेत्रिय पत्र-पत्रिकाओं ने इसे नजर अंदाज कर दिया या फिर तोड़-मरोड़ कर पेश किया। इसे प्रकाशित करते समय, कुछ पत्र-पत्रिकाओं ने इसे विवादस्पद बनाकर अपना हित साधने की कोशिश की।

आगे हम कुछ लोगों की समीक्षा देखेंगे, जिसमें ब्राह्मणवादी मीडिया का उद्देश्य साफ झलकता है।

14 दिसम्बर 1998 के अंक में "इंडिया टुडे" ने एक लेख "Is caste showings up in your Genes? A study indicates so, But cites warn against reading too much into it". उपरोक्त शीर्षक के अंतर्गत छापा और उसी लेख में डॉ॰ विश्वनाथ ने, व्यथित होने वाले लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त

करते हुए लिखा कि "यह महत्वपूर्ण है कि इस अध्ययन से अधिक उत्साहित न बना जाये, तथा इसे एक मामूली अध्ययन के रूप में मान लिया जाय"। अन्य विद्वान जैसे श्रीवास्वत और बी॰ एन॰ चट्टोपाध्याय इस "रिप्रसेंटेटिव सैपंलिंग" के संबंध में कोई प्रतिक्रिया नहीं दिया और कहा कि "कुछ ब्राह्मणों के पूर्वज बाहरी हो सकते हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि सभी बाहरी हो सकते हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि सभी बाहर से ही आये है।" मि॰ गुप्ता ने सवाल उठाते हुए जानना चाहा" अनुवांशिक आँकड़े, आर्यो के भारत में प्रवेश को, वैदिक काल में कहाँ दर्शाते हैं?" मा॰ विश्वनाथन ने तर्क करना चाहा और कहा कि "शोध कोई खोजी कहानी नहीं है, जिसमें पता लगाया जाय कि किसने क्या किया?"

इन सब बातों से साफ-साफ अंदाजा लगाया जा सकता है कि मीडिया और कुछ विद्वान इस शोध को जानबूझ कर महत्व नहीं दे रहे हैं ताकि पाठक इसको गंभीरता से न लें।

शोधकर्ताओ पर आरोप

कुछ अखबारों के उद्देश्य को भी देखें, 22 अक्टूबर 1998 को शोधकर्त्ताओं को संदेह के घेरे में लेते हुए इंण्डियन एक्सप्रेस ने "Questionable Enterprise" शीर्षक से सम्पादकीय छापा और उसमें कहा कि "DNA and caste can make a deadly combination." सम्पादकीय से ऐसा प्रतीत हुआ कि वह शोधकर्ताओं को सामाजिक उपयोग एवं नीतिशास्त्र का उपदेश दे रहा है। आगे उसमें यह भी कहा गया था कि "उच्च वर्गीय ब्राह्मणों से अन्य लोगों के बीच अनुवांशिक जांच एक धोखा है।... कुछ लोगों ने सवाल उठाया कि भारतीय सामाजिक विज्ञान से अनभिज्ञ लोगों ने जाति-आधारित नमूनों का वर्गीकरण क्यों किया?" इसका मतलब यह निकलता है कि कोई उनके उत्पत्ति का सवाल न उठाये। इन भ्रष्टबुद्धि लोगों ने, उन वैज्ञानिक शोधों/अध्ययनों पर भी नियंत्रण बनाने की कोशिश किये, जिनसे इनके विचारों एवं लाभ पर प्रश्न उठता है।

परिणामों का दुरूपयोग हो सकता है

यद्यपि कि वे लोग अपनी धारणा को व्यक्त कर दिये हैं कि इस शोध का दुरूपयोग उनके खिलाफ हो सकता है, उनकी आशंका है कि लोग उनके जनसंख्या का इतिहास जानकर, उसका सामान्य रूप से उपयोग करेंगे जो खतरनाक हो सकता है। 14 दिसम्बर 1998 के अंक में, "इण्डिया टुडे" ने चेतावनी देते हुए लिखा "यह शोध कपट पूर्ण है तथा इससे अनुवांशिक वर्चस्वता का खतरा बढ़ सकता है।" 22 अक्टूबर 1998 को "इण्डियन एक्सप्रेस" ने अपना दुःख व्यक्त करते

हुए लिखा कि "यह शोध इसलिए महत्वपूर्ण नहीं है कि यह क्या उद्घाटित करता है, बल्कि इसलिए महत्वपूर्ण है कि इसकी आड़ में फायदा उठाने के उद्देश्य के कारण संभावित अनिष्ट हो सकता है।"

जब सामना नही कर सकते तो दिग्भ्रमित करो

यह आर्यो की नीति है कि जब किसी सत्य को धुंधला बनाना हो तो, उसे विवादास्पद बना दीजिए। प्रायः ऐसा ही देखा गया है कि जब किसी का वास्तविक रूप को दर्शाया जाता है, तो वह उसको विवादस्पद बनाकर विरोध करता है, तो वह उसको विवादस्पद बनाकर विरोध करता है और यहीं सर्वश्रेष्ठ एवं सफलतम युक्ति है, जो सत्य पर से पर्दा नहीं उठने देता है। 20 जुलाई 2001 के अंक में "इण्डिया टुडे" एक लेख 86 अध्ययन जो कहता है कि उच्च वर्णीय भारतीय, यूरोपियन मूल के हैं, पर विवाद खड़ा हुआ।" शीर्षक से प्रकाशित किया। 20 मई 2001 को "टाइम्स ऑफ इण्डिया" ने घोषणा करते हुए लिखा कि "ये संभवतः विवादस्पद परिणाम हैं।"

एक वैज्ञानिक अध्ययन को विवादस्पद बताकर प्रचार करना, उसके यथार्थ तत्व को निरस बनाने की कुचेष्टा है। ऐसे गंदे कार्य को अंजाम देते हुए, शर्महीन ब्राह्मणवादी मीडिया को थोड़ा भी पश्चताप नहीं है।

यदि हम विदेशी, तो कौन नहीं?

पर्दाफाश होने के पश्चात लोग रक्षात्मक हो जाते हैं। यदि वह व्यक्ति कलहकारी हो और उसके रूप को उजागर करते हों तो वह और भी रक्षात्मक हो जाता है। इसीलिए जब यह शोध प्रकाशित हुआ, तब ये उपद्रवी लोगों ने तर्क देना रूप किया कि द्रविड़ लोग भी बाहरी हैं। 26 अक्टूबर 1998 के दिन, इस शोध की रिपोर्ट को प्रकाशित करते हुए "दि टेलीग्राफ" ने एक बाक्स में "खतरनाक-अवैध संबंध, द्रविड़ वास्तव में कौन हैं? शीर्षक से रिर्पोट प्रकाशित किया। "इंण्डिया टुडे" ने भी बाक्स बनाकर मोटे अक्षरों में लिखा कि "अलग-अलग समय अंतराल पर भारत में अनेकों विस्थापन हुए है, यहाँ तक कि हड़प्पा या द्रविड़ पाठकों को दिग्भ्रमित एवं प्रभावित करने के उद्देश्य से की गई कि आर्य लोग ही सिर्फ विदेशी नहीं हैं, द्रविड़ लोग भी विदेशी हैं। ऐसा नहीं हैं कि वे लोग आर्यो के भारत में प्रवेश की बात से अनभिज्ञ हैं, यह मात्र इसलिए किया गया कि सच से पर्दा नहीं उठे। इसी उद्देश्य से लोगों को दिग्भ्रमित एवं मुद्दों को विवादस्पद बना दिया गया। अब प्रश्न यह उठता है कि क्या हम मात्र दर्शक बने बैठे रहें? और फिर, कब तक?

(6)

मूलनिवासियों की भूमिका

हमारी जिम्मेदारियाँ

अब वह समय आ गया है कि हम इस मुद्दों को पूरी गंभीरता से लें, अन्यथा हमारी पहचान को खतरा हो सकता है। ब्राह्मणवादी लोग अपनी क्षमता से भी अधिक कोशिश में लगे हुए हैं कि हमारी पहचान कैसे भी बिगड़ जाय। वे लोग इसी ताक में रहते हैं कि कोई उनकी पहचान को उजागर न करें, इसलिए इस क्रम में किये गये भी प्रयास को उलट देते हैं। जैसा कि हम जानते हैं कि ''आर्य'' बाहर से भारत में आये हैं पहले इस तथ्य को पुरातात्विक खोजों एवं साहित्यिक उल्लेखों ने प्रमाणित किया है और अब इस शोध ने भी विज्ञान के आधार पर प्रमाणित कर दिया है।

अब यह तर्क संगत प्रश्न हैं कि इन प्रमाणों के बावजूद भी हम लोग क्या कर रहे हैं? क्या हम इन महत्वपूर्ण जानकारियों को अपनी भलाई या रक्षा के लिए उपयोग कर रहे हैं? हम लोगों में से बहुत से लोग, ऐसे मुद्दों को ''कोई फायदा नहीं है'' किन्तु जानकारी लेने के पश्चात् मुद्दे को दर किनारा कर देते हैं। क्योंकि हम आज तक यह नहीं समझ पाये है कि यह मुद्दा हमारे जीवन से कितना अहमियत रखता है। किन्तु यह अध्ययन स्पष्ट कर दे रहा है कि यह मुद्दा हमारे अस्तित्व से सीधा संबंध रखे हुए है। हालांकि हमारे शत्रू को यह बात स्पष्ट रूप से ज्ञात है कि ऐसे मुद्दों को भी नजरअंदाज करने की हमारी प्रवृत्ति एवं आपसी भिन्नताएं ही उनके अस्तित्व एवं वर्चस्व का कारण है, इन्हीं कमियों को मद्देनजर ब्राह्मणवादी लोग, हमें आपस में लड़ाते रहते हैं ताकि हमारी नजर उनके द्वारा किये जा रहे छद्म कामों पर न पड़े तथ अब स्थिति यह आ गई है कि ये बेशर्म, कट्टरपंथी लोग भारत का इतिहास को बदलकर, इस मुद्दे पर उठ रहे सवालों को सदा-सदा के लिए समाप्त कर देना चाहते हैं।

आज की तारीख में यह अनुवांशिक शोध का विचारणीय परिणाम समाज में ज्वलंत प्रश्न है। अब उनका खून ही सत्य को ब्यान कर सकेगा और न ही इसमें कोई घुसपैठ हो सकेगा, जैसा कि पहले पुरातात्विक साक्ष्यों के साथ हुआ है। इस शोध से ब्राह्मणवादी शक्तियों के मुख से मुखौटा हट गया है, जिन तथ्यों को सभी मूलनिवासियों में प्रचारित करना है तथा अब सब को पता चल जाना चाहिए कि भारत में आर्य-

ब्राह्मणों ने क्या-क्या गलतियाँ की हैं। उन्होंने अपनी कूटनीतिक चाल से एवं क्रूर प्रवृत्ति से भारतीय साम्राज्य को, जो शांति, समभाव, समृद्धि एवं एक आदर्श सामाजिक व्यवस्था पर आधारित था, उसे कट्टरवाद, कर्मकांड, घृणा, असमानता तथा हिंसा के साम्राज्य में परिवर्तित कर दिया, जिसे अब उछालने की आवश्यकता है। अपनी सम्प्रदायिक उन्माद पूर्ण, विचारों एवं इस देश को हिन्दू राष्ट्र बनाने की इच्छा को, कायम रखने के लिए यहाँ के मूलनिवासियों को मूर्ख बनाने की प्रक्रिया की पुनरावृत्ति करते रहते हैं। उनकी, विभाजन की नीति एवं ''Kick below, salute abobve'' की घृणास्पद सिद्धांतों को मूलनिवासियों को कम से कम अब तो अनुभव करना चाहिए। जिस ढिठाई से इस देश के मूलनिवासियों पर गुलामी को, इन लोगों ने थोपा है, तथा उन तत्वों का भी पर्दाफाश करना है, जिनके माध्यम से ये अपना कुचक्र चलाते रहते हैं, जैसे ब्राह्मणवादी शिक्षा व्यवस्था, भूमंडलीकरण के नाम पर भारतीय संविधान की अवहेलना एवं तिरस्कार को भी उजागर करके मूलनिवासियों को विदेशियों एवं अपने बांधवों को पहचानने में सहायता मिलेगी। जिस घृणता के साथ इन विदेशियों देशी लोगों को विभाजित करके गुलाम बना रखा है, उन्हें इस शोध से सीख लेते हुए आपसी मैत्रीभाव को बढ़ाना चाहिए।

ब्रह्मणवादियों के मानसिक गुलामी से मुक्ति ही सबसे अहम बात है। हालांकि यह आसान नहीं है, किन्तु असंभव भी नहीं है और इसके लिए परम विशिष्ट बात यह है कि मूलनिवासियों को अपने आत्म-सम्मान को सर्वोपरि रखना होगा।

भारत के मूलनिवासियों के गुलामी के पीछे छिपे गुढ़ कारणों की खोज एवं उसके निदान के लिए, BAMCEF (बामसेफ) ने पूरे देश में जनजागरण अभियान चलाया है तथा सभी मूलनिवासियों से आग्रह करता है कि वे लोग आयें और BAMCEF (बामसेफ) के संदेशों को देश के कोने-कोने तक फैलाकर, विदेशी ब्राह्मणवादियों के गुलामी से अपने बंधुओं को मुक्ति दिलाने में सहयोग करें।

जय भीम! जय मूलनिवासी !!

परिशिष्ट-2

अनुवंशिक शोध (DNA Research) क्या है?

- प्रकृति की सभी सजीव एवं निर्जीव वस्तुएं कुछ गुण सूत्र रखती हैं वैसे ही जैसे भौतिक एवं रसायन विज्ञान में होता है।
- जैसे निर्जीव वस्तुएं परमाणुओं से निर्मित हैं, वैसे ही सजीव प्राणी भी परमाणुओं से निर्मित होते हैं किन्तु इनकी बनावट अपेक्षाकृत जटिल होती है।
- जीवधारी प्राणियों के परमाणु उनके बड़े मोलेक्यूल्स के न्यूक्लीक एसिड, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेटस और चर्बी में व्यवस्थित होते हैं।
- जीवधारियों के बनावट के मूल ईकाई के कक्ष (Cell) कहते है।
- विशेषकर सभी जीवधारियों के "Cell" मोलेकयूल के एक ही तत्व से बने होते हैं।
- जीवित Cell के वृहद काम्पलेक्स Substance में निरंतर रसायनिक क्रियाएं होती रहती हैं। सब्सटेंसेज सेल में सदा आना-जाना करते रहते हैं।
- इस तरह मोलेक्यूलस का निर्माण एवं विनाश सेल के भीतर होता रहता है। सेल्स के सतत् क्रियाशीलता के लिए, उर्जा का संचालन सभी सेल्स के लिए होता रहता है।
- एक व्यस्क व्यक्तियों में सौ ट्रिलियन सेल्स होते हैं तथा सेल्स का आकार 8-10 MM होता है।
- ये सभी, सौ ट्रिलियन सेल्स, एक अकेले सेल्स से विकसित होते हैं, जिसे Zygote कहते हैं। जो माँ के अण्डे व बाप के वीर्य से बनता है।
- प्राणी -> सेल्स -> न्यूक्लीयस -> क्रोमोजोम, के क्रम से अनुवांशिक निरंतरता/ संबंधों का पता लगया जाता है।
- न्यूक्लीयस में प्रत्येक सेल 46 क्रोमोजोम्स धारण किये रहता है।
- दो क्रोमाटाइड्स (Chromatids) के घड़ों से क्रोमोजोम बना होता है। क्रोमोटाइड्स (Chromain) झाड़ीदार क्रोमाटिन से जुड़ास होता है।
- दो प्रकार के मालेक्यूल के सम्मिश्रण प्रोटीन और DNA (Deoxyribo Nucleic Acid) से क्रोमोसोम बना होता है। प्रोटीन से सैकड़ों एमिनों एसिड (Amino Acid molecules) का निर्माण होता है। (जो 20 अलग-अलग प्रकार के होते हैं।)

❑ DNA छः प्रकार के मोलेक्यूल से बना होता हैं, पहला Deoxyribose तथा दूसरा फास्फेट (phosphate) होता है और अन्य चार हैं एडेनाइन (A) (Adenine) थियामाइन (T) (Thiamine) गुवानाइन (G) (Guanine) तथा साइटोसाइन (C) (Cytosine) इन्हें न्यक्लीयोटाइस (Nucleotides) कहते हैं।

❑ DNA एक दोहरा घुमावदार फीता की तरह का ढांचा होता है जो क्रोमोजोम (Chromosome) में, हिस्टोन मोलेक्यूल (Histone Molecules) के होते हैं, जिनसे जीन्स (Genes) निर्मित होते हैं। एक व्यक्ति के सेल (cell) में DNA की लम्बाई दो मीटर की होती हैं।

❑ जीन्स (Genes) DNA श्रेणी के एक अंश हैं जो जैव-रासायनिक प्रतिक्रिया के चरित्र को,व्यक्त करते हैं। ये वंशावली से निर्देशित एवं विशिष्ट प्रोटीन सेल (Specific proten cell) से संबंधित होते हैं।

❑ न्यूक्लीयस (Nucleus) के क्रोमोजोम (Chromosome) जो DNA अवस्थित होता है, उसे न्यक्लीयर (Nuclear) DNA कहते हैं।

❑ प्रत्येक मानवीय सेल के साइटोपलाज्म (Cytoplasm) में अनेक मिटोकांड्रियल होते हैं। मिटोकांक्राड्रियल (mitochondrial) सेल बचाव के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

❑ मिटोकांड्रियल के अपना खुद का DNA मोलिक्यूल्स होता है, जिसे मिटोकांड्रियल DNA (mitochordrial DNA, OR MT. DNA)कहते हैं जो 16569 आधार-युग्म सर्कुलर मोलिक्यूल होते हैं।

❑ न्यूक्लीयर DNA (Neclear DNA) का प्रतिरूप, मिटोकांड्रियल DNA से दस गुणा अधिक परिवर्तनशील है।

❑ पिता के वीर्य से हॅपलायड क्रोमोजोम दल (Set of haploid chromosome) (कुल 23 क्रोमोजोम) एकत्र होकर, माँ के न्यूक्लीयस एग्स (Nucleus egg) कुल 23 क्रोमोजोम) से मिलकर (Zygote) (46 chromosomes) उत्पन्न करते हैं। न्यूक्लीयर क्रोमोजोम्स सेट के लिए, जो पिता के वीर्य से मिलकर संतान के लिंग का निर्णय करता है को छोड़कर जिगोट माँ के अंडो के सभी भाग का अपने में समाहित करता है। माँ का अंडा सदैव "X" क्रोमोजोम धारण किये रहता है, यदि स्पर्माटोजून वीर्य (spermotozoon) "X" क्रोमोजोम धारण किया हो तो जिगोट (Zyógote)"XX" होगा, अर्थात लड़की का जन्म होगा। यदि स्पर्माटोजून "Y" क्रोमोजोम धारण किया हो तो ज्योगोट "XY" होगा अर्थात लड़का जन्म होगा।

- इस प्रकार, एक व्यक्ति का "न्यूक्लीयर DNA" उसके पिता का "Y" क्रोमोजोम को दर्शायेगा तथा उसी व्यक्ति का "मिटोकांड्रियल DNA" उसके माँ का अनुवांशिक कोड (Genetic code) को व्यक्त करता है।
- DNA क्रम, पैतृक अनुवांशिक चरित्र के साथ-साथ उसमें आये परिवर्तनों को भी, उसके अतीत का जीव वैज्ञानिक दस्तावेज की भाँति प्रकट करता है।
- अनुवांशिक अनुसंसाधन DNA के ऊपर, आधार युग्मों (Arrangement of Nucleotides A, T, G, C, in diffenent pattarns which sct as Gene commonds)
- विशिष्ट क्षेत्र (Hyper Variable Region [HVR], short tender repeats [STR] स्थापित किये जाते हैं, ताकि विशिष्ट आधार युग्म उपस्थित हो, जब नियंत्रण क्रम [Control Sequence] से तुलना किया जा रहा हो।
- नमूने के DNA में, एक विशिष्ट क्रम की, निर्यंत्रित नमूने (control sample) से दूरी को, मापने के लिए, अत्यंत संवेदनशील सांख्यकीय [Hyper senasatire statistical dsta] को प्रयोग में लाया जाता है। नमूना DNA (Sample DNA) अनुक्रम और निर्यंत्रित नमूने (control sample) को ढाँचा जाता है, यदि दोनों की नमूने समान या बहुत ही सादृश्य हो। नमूना DNA अनुक्रम (Sample DNA Sequence) यदि निर्यंत्रित नमूने [control sample] से मेल नहीं खाता है तो उसे किसी और निर्यंत्रित अनुक्रम (control sequence) से तुलना करके देखा जाता है।
- DNA अनुसंधान काफी जटिल एवं पेंचीदा तो है किन्तु स्पष्ट वैज्ञानिक जानकारी प्रदान करता है।

संदर्भ सूचि
REFERENCES

1. Allchin, B. and R. Allchin, 1982. The rise of Civilisation in India and Pakistan, Cambridge university press, Cambridge.
2. Anthony, D.W., 1986, The Kungan Culature. Indo European origins and the domestication of the Horse: A reconsideration. Current Anthropology, 27:291-313.
3. Bhargava, M.L. 1964 The geography of Rgvedic India Lucknow, upper India publishing house.
4. Balakrishnan, V. 1978, A preliminary study of genetic distances among some populations of the Indian subcontinent, J. Hum. Evol 7:67-75.
5. Bamshad, Michal, Toomas Kivisild, W. Scott Watkins, Dixon M.E. Bhaskara B. Rao, J. M. Naidu et al Mt. DNA variation in caste populations of Andhra Pradesh, India, Human Biology 68 (1): 1-28, 1996, 1998, Female gene flow stratifies Hindu castes Nature 395 : 651 -652 2000, Genetic structure of south Indian caste populations: A confluence of biology and culture. Human population Dynamics (ed) H. Mac Beth al Cambrighe University press.2001, Genetic evidence of the origins of Indian caste popultion. Ann Hum Genetics, 60: 409422.
7. Cavalli-Sforza LL, Menozzi P, Piazza A, 1994 the history and Geography of human genes. Princeton University press, Princeton.
8. Desh Pande MM, 1978, Genesis of Rgvedic retroflexion: A Historical and socio hnguisite investigation in Aryan and Non-Aryan in India ed. M. Desh Pande and P. Hook 2350315, Amm Arbor, Michigan.
9. Kivisild, T et at 1999 Deepm common ancestry of Indian and westen Eurasian mt. DNA Lineages Current biology, 9:1331-4.

10. Kochhar, Rajesh, 2000, the Vedic People, Orient Longman, New Delhi.
11. Kosambi, DD. 1975 An introduction to the study of indian History, 2nd ed. Bombay: Popular Prakashan.
12. Majundar PP. Mudherjee BN., 1993, Genetic diversity and affinities among Indian population: an over view. Plenum press New York.
13. Parpola, A, 1998, The coming of the Aryans to Iran and India and the cultural and ethnic identity of the Dasas, Studia orientalia 64: 195-302.
14. Roy Choudhary AK. 1007, Gene diversity in Indian population, Hum genetics 40:99-103.
15. Sharma RS. 1993. The Aryan problem and the horse, Social scientist 21: 3-16 1995, Lookir.g for the Aryans, Madras, Orient Longman.
16. Singh Bhagavan, 1995, Vedic, Harappans, New Delhi, Aditya Prakashan.
17. Thapar, Romila, 1996, The theory of Aryan race and India: History and Politics, Social scientist 24: 1-29.

लेखक-परिचय



नाम : डॉ. विजय कुमार त्रिशरण

जन्म : 1965, ग्राम-सिगसिगी, जिला-पलामू (झारखण्ड)

शिक्षा : वी.एस.सी., एम.वी.वी.एस., एम.आइ.ए.पी.

रुचि : सामाजिक सेवा कार्य तथा पत्र-पत्रिकाओं में कविता एवं आलेख लेखन, दलित अत्याचार के विरुद्ध विशेष विधिक एवं सामाजिक जागरूकता अभियान।

प्रकाशित रचना : 1. दलित अधिकार चेतना : स्वर्ग लोक पर कब्ज़ा (2007), (इंडियन इन्सीच्युट ऑफ एडवान्स स्टडी, शिमला हेतु चयनित), 2. आरक्षण क्यों और कव तक (2007), 3. महाकवि रविदास : समाज चेतना के अग्रदूत (2008) (इंडियन इन्सीच्युट ऑफ एडवान्स स्टडी, शिमला हेतु चयनित), 4. वुद्धयान (भगवान वुद्ध की मूल विचारधाराएं (2009), 5. अशोक विजयदशमी का व्राह्मणीकरण (2009), 6. अनुवांशिक शोध और विदेशी आर्य व्राह्मण (2009), 7. आरक्षण वनाम डाइवर्सिटी (2008), 8. व्राह्मणवाद अथवा मनुवाद (2009), 9. छत्रपति शाहू जी महाराज : सामाजिक लोकतंत्र के भीमस्तम्भ (2009), 10. वहुजन भारत में धार्मिक डाका (2010), 11. व्राह्मण, वहुजन और आरक्षण (2010), 12. पुरुषसूक्त (2011), 13. महाकवि रविदास और चमत्कारिक जनश्रुतियां (2012), 14. मनु वनाम मैकाले, 15. दुसाध जाति : उद्भव और विकास।

अगामी प्रकाशन : 1. परमपूज्य वावासाहेव और उनका मिशन, 2. वेद, वर्ण, व्रह्म और वुद्ध।

विभिन सामाजिक संगठनों का संचालन : केन्द्रीय अध्यक्ष : अम्वेडकर चेतना परिषद, **सम्पादक** : चेतना संदेश (अम्वेडकर मिशन पत्रिका), पटना, **संस्थापक अध्यक्ष** : वुद्धिस्ट मिशन सोशायटी, झारखंण्ड, **राष्ट्रीय महासचिव** : वहुजन डाइवर्सिटी मिशन, नई दिल्ली।

एवार्ड : 1. भारत ज्योति एवार्ड-2008. परन्तु एवार्ड प्रदान करने वाली संस्था आई.एफ.एस. संस्था, नई दिल्ली से मतभेद हो जाने के कारण एवार्ड लेने से इनकार कर दिया। 2. डाइवर्सिटी मैन ऑफ दी ईयर-2009, वर्ष 2008 में डाइवर्सिटी और दलित-पिछड़ों के उत्थान पर सर्वाधिक लेखन के लिये वी.डी.एम., नई दिल्ली द्वारा प्रदत्त। 3. वुद्ध-रत्न सम्मान-2011 "वुद्ध-वाणी" द्वारा सम्राट अशोक वौद्ध विहार, वाराणसी में प्रदत।

सम्प्रति : सहायक निदेशक (चिकित्सा) सेल/आर.एम.डी., माइन्स अस्पताल भवनाथपुर, जिला-गढ़वा (झारखण्ड) पिन-822129

सम्पर्क : टेलीफोन नं. : 06563-233441, मो.नं. : 09431785496, 09006896706

सम्यक प्रकाशन

32/3, पश्चिम पुरी, नई दिल्ली—110063

मो. : 9810249452, 9818390161

Email : hellosamyak1965@gmail.com Web : www.samyakprakashan.in

ISBN : 978-93-89849-02-8

₹ 70

9 789389 849028